दैनिक
लखनऊ से प्रकाशित एवं उ.प्र., बिहार ,झारखण्ड, मध्यप्रदेश, राजस्थान, दिल्ली में प्रसारित
RNI-UPHIN/2014/58471

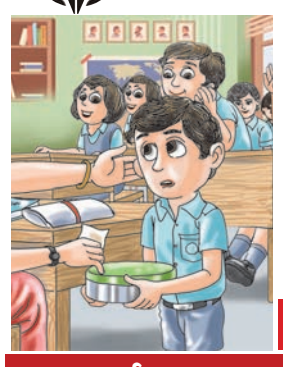

अमन लेखनी

रघु का लंच बॉक्स...

बर्थ-डे सेलिब्रेशन के यूनीक ट्रेडिशन.....

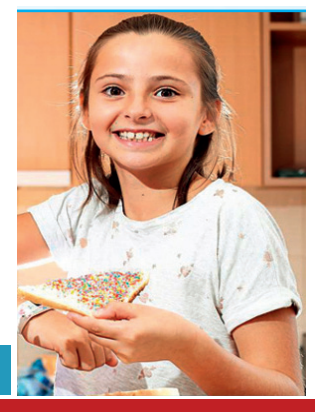

वर्ष : 09 | अंक : 340 | लखनऊ, 18 नवम्बर, शनिवार 2023 | पृष्ठ : 08 | मूल्य : 2.00 रुपए

मौसम

अधिकतम तापमान 33.c

न्यूनतम तापमान 27.c

बाजार

सोना 5510/ g

चांदी 73.50/ g

सेंसेक्स 64,948.66

निफ्टी 19,310.15

दो गांवों के बीच एक किलोमीटर से ज्यादा दूरी होने पर बनेगी सड़क : सीएम योगी

रोड की होगी पांच साल की गारंटी

एजेंसी / अमन लेखनी समाचार

लखनऊ, जहां भी दो गांवों के बीच एक किलोमीटर से ज्यादा का फासला होगा उन्हें पक्के मार्गों से जोड़ा जाएगा। प्रदेश में इस तरह के 959 गांव हैं जिन्हें आपस में जोड़ने के लिए 1392 करोड़ रुपये की आवश्यकता होगी और इन मार्गों की कुल लंबाई एक हजार किलोमीटर से ज्यादा है। ऐसे गांवों के तेज विकास के लिए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सड़क बनाने के निर्देश दिए हैं। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि नई बनने वाली हर सड़क की पांच साल की गारंटी हो। कोई खराबी आने पर निमार्ता एजेंसी ही पुनर्निमाण करे। उन्होंने विभिन्न सरकारी विभागों के अधूरे भवनों पर

नाराजगी जताई। इसके लिए जवाबदेही तय करने के निर्देश दिए। सड़क निर्माण में नई तकनीक अपनाने पर भी जोर दिया, ताकि कम लागत में टिकाऊ सड़कें बनाई जा सकें। योगी ने शुक्रवार को पीडब्ल्यूडी के कामकाज की समीक्षा की। इसमें उन्होंने निर्माण कार्यों में आईआईटी, एकेटीयू व एमएमएमयूटी जैसे संस्थानों से सहयोग लेने के निर्देश दिए।

मंत्रियों को मौका मुआयना की नसीहत

सीएम ने भवन निर्माण के कार्यों तेजी लाने के निर्देश दिए। कहा कि परियोजनाओं में देरी से न केवल लागत बढ़ती है, बल्कि आमजन को सेवाओं का लाभ समय से नहीं मिल पाता। कहा कि विभागीय मंत्री परियोजनाओं की नियमित अंतराल पर समीक्षा करें। मौका-मुआयना करें और कार्य की गुणवत्ता सुनिश्चित कराएं।

आउटसोर्सिंग के लिए बनेगी नीति

सीएम ने कहा कि नियमित नियुक्ति की प्रक्रिया पूरी होने तक आउटसोर्सिंग से युवाओं को जोड़ें। ग्रेजुएट एप्टीट्यूड टेस्ट फॉर इंजीनियरिंग (गेट) जैसे राष्ट्रीय परीक्षा को आधार मानकर उनकी योग्यता का प्रारंभिक आकलन किया जा सकता है। ऐसे युवाओं को नियमित सेवा में भारांक दिए जाएं। इस संबंध में नीति प्रस्तुत की जाए।

माफिया न ले सकें ठेके

सीएम ने दोहराया कि किसी परियोजना में माफिया व अपराधी प्रवृत्ति के लोगों को स्थान न मिले। उनके करीबी, रिश्तेदारों व गुर्गों को भी ठेके-पट्टे से दूर रखा जाए। कहा कि ग्रामीण मार्गों से अन्य जिला मार्ग और अन्य जिला मार्गों से प्रमुख जिला मार्ग में श्रेणी परिवर्तन के लिए नई नीति तैयार की जाए।

चौड़े किए जाएं ग्रामीण मार्ग

-अयोध्या में रामपथ एवं भक्ति पथ के निर्माण में पहली बार वाइट टॉपिंग व स्टैम्प्ड कंक्रीट तकनीक का प्रयोग किया जा रहा है। ऐसे प्रयोग अन्य स्थानों पर किए जाएं।

-यातायात व अन्य स्थितियों को देखते हुए ग्रामीण मार्गों का चौड़ीकरण हो। इसपर आवश्यक प्रस्ताव तैयार किए जाएं।

- सभी स्टेट हाईवे व अन्य मार्गों की जीआईएस मैपिंग कराई जाए। इससे उनकी स्थिति का पूरा ब्योरा ऑनलाइन उपलब्ध रहेगा।

मीडिया को लोकतंत्र के जिम्मेदार स्तंभ के रूप में कार्य करना चाहिए : अनुराग ठाकुर

एजेंसी / अमन लेखनी समाचार

नई दिल्ली, सूचना एवं प्रसारण मंत्री अनुराग ठाकुर ने बृहस्पतिवार को कहा कि ऐसे कुछ व्यक्ति और मीडिया संस्थान हैं जो घरेलू और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत के खिलाफ लगातार दुष्प्रचार करते हैं। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि मीडिया को लोकतंत्र के एक जिम्मेदार स्तंभ के रूप में कार्य करना चाहिए और फर्जी विमर्श को सामने लाना चाहिए। केंद्रीय मंत्री ने कहा, ऐसे विमर्श को चुनौती देना, झूठ को उजागर करना और यह सुनिश्चित करना हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है कि सच्चाई कायम रहे। उन्होंने कहा, हमारे राष्ट्र के हितों की रक्षा करना और भारत विरोधी ऐसे विचारों को जगह देने से बचना आवश्यक है, जो हमारी एकता और अखंडता को खतरे में डाल सकते हैं। मंत्री यहां राष्ट्रीय प्रेस दिवस के अवसर पर भारतीय प्रेस परिषद (पीसीआई) द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। ठाकुर ने कहा, भले ही हम प्रेस की स्वतंत्रता का जश्न मनाते हैं लेकिन हम उन लोगों से आंखें नहीं मूंद सकते जो हमारे राष्ट्र की भावना को कमजोर करना चाहते हैं। ऐसे व्यक्ति और मीडिया संस्थान भी हैं जो घरेलू और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लगातार भारत के खिलाफ दुष्प्रचार फैलाते हैं। मंत्री ने कहा कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता के युग में जहां प्रौद्योगिकी सूचना प्रसारित करने के तरीके को आकार देती है, मीडिया के लिए सतर्क रहना अनिवार्य हो जाता है। उन्होंने कहा, हम एक ऐसी दुनिया में रहते हैं, जहां एक बटन दबाने से गलत सूचना का प्रसार किया जा सकता है।

संक्षिप्त समाचार

दिल्ली में छठ पर्व के दिन शराब की दुकानें बंद रहेंगी

दिल्ली सरकार ने छठ पर्व के अवसर पर रविवार को ह्यशुष्क दिवसह्ण घोषित किया है और शहर में शराब की दुकानें बंद रखने का आदेश दिया है। आबकारी विभाग द्वारा बृहस्पतिवार को जारी एक आदेश में कहा गया कि रविवार को सूर्य षष्ठी (छठ पूजा) के दिन शुष्क दिवस घोषित किया गया है। ऐसे में शराब की सभी दुकानें बंद रहेंगी। छठ दिल्ली में बसे पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार के मूल वासियों द्वारा सूर्य की पूजा के लिए मनाया जाने वाला एक प्रमुख पूर्व है। राज्य सरकार ने श्रद्धालुओं के लिए सूर्य देव की पूजा के वास्ते 900 से अधिक घाट तैयार कराये हैं।

विधानसभा चुनावों में भाजपा सत्ता से बाहर हो जाएगी: पवार

नई दिल्ली, राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष शरद पवार ने बृहस्पतिवार को दावा किया कि पांच राज्यों में हो रहे विधानसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) जहां भी सत्ता में है, उससे बाहर हो जाएगी। जिन पांच राज्यों में विधानसभा चुनाव हो रहे हैं, उनमें से केवल मध्य प्रदेश में भाजपा सत्तारूढ़ है। पवार ने महाराष्ट्र के सोलापुर में संवाददाताओं से कहा, भाजपा जहां भी सत्ता में है, वहां आप चुनाव के बाद गैर-भाजपाई मुख्यमंत्री बनते देखेंगे। मध्य प्रदेश के अलावा छत्तीसगढ़, राजस्थान, तेलंगाना और मिजोरम में विधानसभा चुनाव हो रहे हैं। पवार ने यह भी कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी इन चुनाव में गलत रुख के साथ प्रचार कर रहे हैं। राकांपा नेता ने कहा, उनकी पार्टी के आत्मविश्वास का स्तर गिर गया है तथा लोग अब और उनके झूठे वादों में नहीं फंसेंगे।

हरियाणा के नूंह में पूजा के लिए जा रही महिलाओं पर पथराव, तीन घायल

नई दिल्ली, हरियाणा के नूंह में बृहस्पतिवार की रात एक मस्जिद से कुछ अज्ञात व्यक्तियों द्वारा कथित तौर पर पथराव करने के कारण कम से कम तीन महिलाएं घायल हो गईं। पुलिस ने यह जानकारी दी। पुलिस के एक अधिकारी ने कहा कि इस संबंध में उन्हें अब तक कोई शिकायत नहीं मिली है और कानून के अनुसार कार्रवाई की जाएगी। पुलिस के मुताबिक, घटना रात करीब आठ बजकर 20 मिनट पर एक मस्जिद के पास हुई जब महिलाओं का एक समूह कुआं पूजन के लिए जा रहा था। पुलिस ने बताया कि जब महिलाएं मस्जिद के पास पहुंचीं तो कथित तौर पर उन पर पथराव किया गया और इस घटना में तीन महिलाएं घायल हो गईं। नूंह पुलिस अधीक्षक नरेंद्र बिजारनिया भारी पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचे। बिजारनिया ने फोन कॉल का जवाब नहीं दिया लेकिन नूंह के थाना प्रभारी (एसएचओ) ओमबीर ने कहा कि इस बारे में उन्हें अब तक कोई शिकायत नहीं मिली है। एसएचओ ने कहा, हमें महिलाओं के घायल होने के बारे में पता चला है लेकिन अब तक कोई शिकायत नहीं मिली है। कानून के मुताबिक कार्रवाई की जाएगी।

बाल ठाकरे की पुण्यतिथि की पूर्व संध्या पर शिवसेना के दोनों गुट आमने-सामने

एजेंसी / अमन लेखनी समाचार

मुंबईः एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाली शिवसेना और उद्धव ठाकरे की शिवसेना (यूबीटी) के कार्यकर्ता बृहस्पतिवार को आमने-सामने आ गए और पार्टी के संस्थापक दिवंगत बाल ठाकरे के स्मारक पर एक-दूसरे के खिलाफ नारे लगाए। बाल ठाकरे की 11वीं पुण्यतिथि शुक्रवार को मनाई जाएगी। एक अधिकारी ने बताया कि पुलिस ने भीड़ को तितर-बितर कर दिया। शिंदे नीत धड़े के कार्यकर्ताओं ने नारे लगाए कि पार्टी उनकी है जबकि उद्धव ठाकरे नीत पार्टी के सदस्यों ने इसके जवाब में गद्दारों वापस जाओ के नारे लगाए। घटना उस वक्त हुई जब मुख्यमंत्री शिंदे, बाल ठाकरे को श्रद्धांजलि देने दादर के शिवाजी पार्क स्थित स्मारक पहुंचे। मुख्यमंत्री ने पत्रकारों से कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने उत्तर प्रदेश के अयोध्या में राम मंदिर बनाने के दिवंगत शिवसेना संस्थापक के सपने को पूरा किया है। उन्होंने बताया कि इसका उद्घाटन दिवंगत बाल ठाकरे की जयंती की पूर्व संध्या पर किया जाएगा। ठाकरे का जन्म 23 जनवरी 1926 को हुआ था, जबकि अयोध्या में राम मंदिर में मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा 22 जनवरी को होगी। शिंदे ने कहा कि उनकी सरकार बाल ठाकरे के सपनों और आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए काम कर रही है।

पीएम मोदी ने डीपफेक को बताया सबसे बड़ा खतरा

नागरिकों और मीडिया दोनों को बहुत सतर्क रहने की जरूरत

एजेंसी / अमन लेखनी समाचार

नई दिल्ली, प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने शुक्रवार को कहा कि डीप फेक सबसे बड़े खतरों में से एक है जिसका भारत की प्रणाली इस समय सामना कर रही है। उन्होंने कहा कि इससे समाज में अराजकता पैदा हो सकती है। प्रधानमंत्री ने मीडिया से भी लोगों को बढ़ती समस्या के बारे में शिक्षित करने का आग्रह किया। दिल्ली में पार्टी मुख्यालय में भाजपा के दिवाली मिलन कार्यक्रम में पत्रकारों को संबोधित करते हुए, प्रधान मंत्री ने कहा कि जब डीपफेक के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता के दुरुपयोग की बात आती है तो नागरिकों और मीडिया दोनों को बहुत सतर्क रहने की जरूरत है।

पीएम मोदी की यह टिप्पणी ऐसे वक्त में आई है जब डीपफेक को लेकर चर्चा लगातार जारी है। इसमें शामिल है कि कैसे डीपफेक मौजूदा विधानसभा चुनावों में चुनावी लोकतंत्र की अखंडता के लिए बड़ी चुनौतियां पैदा कर रहे हैं, जिससे नकली और असली क्लिप के बीच अंतर करना मुश्किल हो गया है। डीप डाइव ने राजनेताओं को निशाना बनाने वाली छेड़छाड़ की गई छवियों, नकली वीडियो क्लिप और कृत्रिम वॉयसओवर जैसे

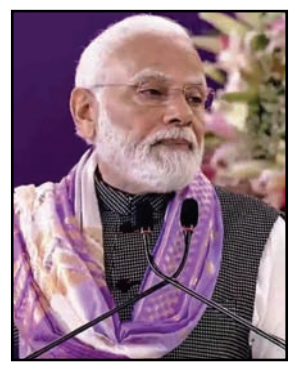

डीपफेक के खतरों पर प्रकाश डाला। प्रधानमंत्री ने साथ ही कहा कि ये महज बयानबाजी नहीं है बल्कि जमीनी हकीकत है। उन्होंने कहा कि वोकल फॉर लोकल को लोगों का समर्थन मिला है। प्रधानमंत्री ने कहा कि कोविड-19 के वक्त भारत की उपलब्धियों ने लोगों में यह विश्वास पैदा किया कि अब देश रुकने वाला नहीं है। उन्होंने यह भी कहा कि छठ पूजा राष्ट्रीय पर्व बन गया है जो बेहद प्रसन्नता की बात है।

क्या होता है डीप फेक

ये 2 शब्दों डीप लर्निंग और फेक के मेल से बनता है। डीप लर्निंग आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का एक हिस्सा है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस को सरल शब्दों में समझें तो ऐसी टेक्नोलॉजी जो खुद काम कर सकती है। यानी अपनी खुद की अक्ल लगाकर। जैसे आप गूगल अस्टिटेंट से कह दें कि म्यूजिक बजाओ। उसमें आपको खुद उठकर म्यूजिक नहीं प्ले करना पड़ता है। इंसानी दिमाग के जितना करीब हो आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस उतनी ही बेहतर मानी जाएगी। डीप फेक ह्यमन इमेज सिंथेसिस नाम की टेक्नोलॉजी पर काम करता है। जैसे हम किसी भी चीज की फोटोकॉपी कर लेते हैं वैसे ही ये टेक्नोलॉजी चलती फिरती चीजों की कॉपी कर सकती है।

'रिश्ते में हम तुम्हारे बाप लगते हैं...', अपने प्रतिद्वंद्वी भाजपा उम्मीदवार पर बोले छत्तीसगढ़ के सीएम भूपेश बघेल

एजेंसी / अमन लेखनी समाचार

रायपुर, मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने दावा किया कि छत्तीसगढ़ में कोई प्रतिस्पर्धा नहीं है और कांग्रेस निश्चित रूप से राज्य में सत्ता बरकरार रखेगी। उन्होंने यह टिप्पणी शुक्रवार को वोट डालने से पहले की। बघेल ने कहा, हमारे पास 75 से ज्यादा सीटें हैं...यहां लड़ाई एकतरफा है, कोई मुकाबला नहीं है...। वोट डालने के लिए कतार में खड़े बघेल ने यह भी कहा कि उनकी पार्टी आराम से जीत रही है। मेरी विधानसभा से चुनाव लड़ रहे एक व्यक्ति (भाजपा उम्मीदवार) के लिए

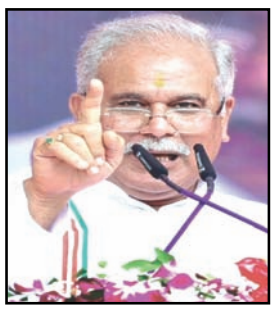

मैं कहना चाहूंगा, 'रिश्ते में हम तुम्हारे बाप लगते हैं...।"

छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री ने भी राज्य के लोगों से बड़ी संख्या में बाहर आने और अपने मताधिकार का प्रयोग करने की अपील की। बघेल ने कहा कि हालांकि उन्हें छत्तीसगढ़ में कांग्रेस के चेहरे के रूप में पेश किया गया है, लेकिन अगर वे सत्ता में आते हैं तो सीएम कौन होगा, इसका फैसला पार्टी आलाकमान करेगा। उन्होंने कहा कि 70 सीटों पर विधानसभा चुनाव का दूसरा चरण आज चल रहा है और लोगों को लोकतंत्र के इस उत्सव में भाग लेना चाहिए। किसानों, युवाओं, महिलाओं और मजदूरों के हित को ध्यान में रखते हुए लोगों को अपने घरों से बाहर निकलना चाहिए और बड़ी संख्या में अपने मताधिकार का प्रयोग करने के लिए मतदान केंद्रों पर पहुंचना चाहिए। बघेल ने कहा कि उनके चुनावी वादे में किसानों से 3,200 रुपये प्रति क्विंटल की दर से प्रति एकड़ 20 क्विंटल धान की खरीद, कृषि ऋण माफी, केजी (किंडरगार्टन) से पीजी (पोस्ट-ग्रेजुएशन) तक मुफ्त शिक्षा, 10,000 रुपये की वार्षिक सहायता शामिल है। भूमिहीन मजदूरों को 'गृह लक्ष्मी' योजना के तहत 15,000 रुपये की वार्षिक सहायता और महिलाओं को 15,000 रुपये की वार्षिक सहायता, चुनाव में कांग्रेस के पक्ष में रहेगी।

अपने जीते जी दिल्ली में आप को नहीं हरा सकते पीएम मोदी : केजरीवाल

एजेंसी / अमन लेखनी समाचार

नई दिल्ली, आम आदमी पार्टी प्रमुख और दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने शुक्रवार को फर्जी शराब नीति घोटाला मामले को लेकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर कड़ा प्रहार किया और आरोप लगाया कि वह सरकार को गिराना चाहते हैं और राष्ट्रीय राजधानी में भाजपा सरकार बनाना चाहते हैं। हमला तेज करते हुए केजरीवाल ने दावा किया कि पीएम मोदी अपने जीवनकाल में दिल्ली में आप को नहीं हरा सकते। उनकी यह

टिप्पणी सुप्रीम कोर्ट द्वारा हाल ही में शराब घोटाला मामले में पार्टी नेता मनीष सिसौदिया की जमानत याचिका खारिज करने के बाद आई है। उन्होंने कहा कि चूंकि आम आदमी पार्टी तेजी से बढ़ रही है, इसलिए स्वाभाविक है कि आप के खिलाफ बड़ी साजिशें रची जा रही हैं। बीजेपी और पीएम मोदी ने कहा कि वे दिल्ली में आम आदमी पार्टी से नहीं जीत सकते।

केजरीवाल ने भाजपा पर आरोप लगाते हुए कहा कि उन्होंने 'शराब नीति घोटाला' की साजिश रची। गुजरात में वास्तविक शराब घोटाला हो रहा है, यहां कई लोगों की मौत हो चुकी है।

कांग्रेस के घोषणापत्र में छात्रों के लिए मुफ्त इंटरनेट

चार हजार रुपये वृद्धावस्था पेंशन देने का वादा

एजेंसी / अमन लेखनी समाचार

तेलंगानाः कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने शुक्रवार को तेलंगाना विधानसभा चुनाव के लिये पार्टी का घोषणापत्र जारी किया, जिसमें राज्य के वास्ते छह गारंटी और अनेक घोषणाएं हैं। इन छह गारंटी में चार हजार रुपये वृद्धावस्था पेंशन देना और 500 रुपये में गैस सिलेंडर मुहैया कराना शामिल है। कांग्रेस अध्यक्ष खरगे ने 42 पन्नों वाला घोषणापत्र अभय हस्तम जारी करने के बाद कहा कि तेलंगाना के लोगों का मूड है कि चाहे जो हो जाए, कांग्रेस को सत्ता में लाना है। कांग्रेस की छह गारंटी में 30 नवंबर के चुनाव के बाद राज्य की सत्ता में पार्टी के आने पर महिलाओं को 2,500 रुपये प्रति माह और 500 रुपये में गैस सिलेंडर के साथ ही सभी घरों को 200 यूनिट मुफ्त बिजली देने का वादा शामिल है। कांग्रेस पार्टी ने एकीकृत भूमि प्रशासन पोर्टल धरणी को खत्म करने और इसकी जगह एक नयी राजस्व प्रणाली लाने का भी वादा किया है।

पार्टी ने अपने घोषणापत्र में रायतू भरोसा के तहत प्रत्येक वर्ष किसानों को 15,000 रुपये की निवेश सहायता देने का वादा किया है, वहीं खेतों में काम करने वाले मजदूरों को 12,000 रुपये दिए जाएंगे। घोषणापत्र के अनुसार, चेयुता के तहत पात्र लाभार्थियों को 4,000 रुपये वृद्धावस्था पेंशन और 10 लाख का स्वास्थ्य बीमा देने का वादा किया गया है। वहीं, घोषणा पत्र में कहा गया है कि विद्या भरोसा कार्ड के तहत छात्रों को 5 लाख रुपये का वित्तीय सहायता कार्ड प्रदान किया जाएगा, जिसका उपयोग कॉलेज फीस (शुल्क प्रतिपूर्ति के अतिरिक्त) और अन्य शिक्षा संबंधी खर्चों के भुगतान में किया जा सकता है। इसमें कहा गया है, सभी छात्रों को वाई-फाई सुविधाओं के माध्यम से मुफ्त इंटरनेट प्रदान किया जाएगा। घोषणापत्र में यह भी वादा किया गया है कि कालेश्वरम लिफ्ट सिंचाई परियोजना के निर्माण में अनियमितताओं और भ्रष्टाचार की उच्च न्यायालय के किसी मौजूदा न्यायाधीश से न्यायिक जांच करायी जाएगी। चुनावी घोषणापत्र में कहा गया है कि यदि कांग्रेस सत्ता में आयी तो वह दो लाख रुपये का फसल ऋण तत्काल माफ कर देगी। पार्टी ने प्रत्येक ऑटो रिक्शा चालक को प्रतिवर्ष 12,000 रुपये की वित्तीय सहायता प्रदान करने का वादा करने के साथ ही लंबित यातायात चालान पर एकमुश्त समाधान योजना के माध्यम से 50 प्रतिशत छूट देने का भी वादा किया। कांग्रेस अध्यक्ष खरगे ने कहा, हमने कर्नाटक में (गारंटी) दी हैं और इन्हें लागू किया जा रहा है। बसों में निशुल्क यात्रा योजना के जरिये महिलाएं विभिन्न मंदिरों में जा रही हैं। हम तेलंगाना को दी गई सभी छह गारंटी लागू करेंगे।

कांग्रेस ने राजस्थान को बना दिया एटीएम, गहलोत सरकार ने लांघी तुष्टीकरण की सभी सीमाएं : अमित शाह

एजेंसी / अमन लेखनी समाचार

नई दिल्ली, केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने राजस्थान में चुनाव प्रचार के दौरान कांग्रेस पर जबरदस्त तरीके से कटाक्ष किया है। उन्होंने कहा कि सत्तारूढ़ दल ने पूरे राजस्थान को पार्टी का एटीएम बना कर रखा है। उन्होंने जनता से कहा कि आने वाले चुनाव में जब वोट डालें, तो ये मत सोचिएगा कि आप सिर्फ किसी को विधायक बनाने जा रहे हैं। बल्कि आपका एक-वोट वोट नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में डबल इंजन की सरकार बनाने के लिए है। आपने पांच साल तक कांग्रेस की सरकार देखी है, इन पांच साल में कांग्रेस ने सबसे बड़ा काम भ्रष्टाचार करने का किया है। उन्होंने आरोप लगाया कि गहलोत सरकार ने काली-सिंध बांध के नाम पर ढाई सौ करोड़ रुपये का घोटाला किया। राशन में भी एक हजार करोड़ रुपये का

घपला किया।

शाह ने साफ तौर पर कहा कि जो गरीबों के राशन तक खा जाता है, वो कभी राजस्थान का भला नहीं कर सकता। इन्होंने पूरे राजस्थान को कांग्रेस पार्टी का एटीएम बनाकर रखा है, इसलिए ऐसी सरकार को उखाड़ फेंकना है। उन्होंने कहा कि अपराध, तुष्टिकरण, महिलाओं और दलितों पर अत्याचार के मामले में भी राजस्थान पहले नंबर पर है। भ्रष्टाचार के मामले में भी नंबर वन है। महिलाओं से दुष्कर्म के मामले में भी नंबर वन है। पेपर लीक के मामले में भी नंबर वन है। गहलोत सरकार ने राजस्थान के लोगों का जीना हराम कर दिया है। उन्होंने कहा कि गहलोत सरकार ने पांच साल में पेपर लीक करके राजस्थान के 1 करोड़ 40 लाख युवाओं का जीवन बर्बाद किया है।

भाजपा नेता ने कहा कि गहलोत सरकार ने वोटबैंक की राजनीति के लिए राजस्थान में सभी सीमाएं लांघ दी है। उदयपुर में कन्हैया लाल की दिनदहाड़े हत्या हुई, लेकिन इनके मुंह से एक शब्द तक नहीं निकला। इन्होंने राजस्थान को दंगों का प्रदेश बना दिया है। उन्होंने कहा कि अगर कांग्रेस सत्ता में वापस आती है तो ढक्कन संगठन को खुली छूट मिल जाएगी। राजस्थान कभी सुरक्षित नहीं रह पाएगा। उन्होंने कहा कि देश आजाद हुआ तब से कांग्रेस, अयोध्या में राम मंदिर के मुद्दे को अटका रही थी, लटका रही थी, भटका रही थी। जब मोदी जी 2019 में दोबारा प्रधानमंत्री बने तो राम मंदिर का भूमि पूजन किया। अब अयोध्या में भव्य राम मंदिर बन रहा है और 22 जनवरी, 2024 को मोदी जी प्राण प्रतिष्ठा भी करने वाले हैं।

संक्षेप

एग्रीमेंट की जमीन बैनामा करने वाले आठ पर मुकदमा दर्ज

मोहनलालगंज। मऊ मजरा भवानीखेड़ा निवासी धर्मेन्द्र कुमार ने बताया उसकी स्व० मां रानी ने खसरा संख्या-790 का इकरार नामा अपने नाम कराया था जिसके बाद से उक्त जमीन पर उसका कब्जा बना हुआ है जिसका वाद भी उपजिलाधिकारी के न्यायालय में विचाराधीन है।उक्त वाद के विचाराधीन रहते हुये जीशान, अदनान, फरहान व उनकी मां रोशन जहां निवासी मोअज्जम नगर थाना चौक ने मुकदमा व कब्जे की बात छिपाते हुये धोखाधड़ी करते हुये उक्त भूमि शकील निवासी निवासी मौरांवा रोड कस्बा मोहनलालगंज के नाम रजिस्ट्री कर दी।19अक्टूबर की रात दस बजे के करीब वो अपने घर के अंदर लेटा था तभी शकील व एक अन्य लोग दरवाजे पर आ धमके ओर जाति सूचक गालिया देते हुये कहा जमीन से कब्जा नही छोड़ा तो तुम्हे जान से मार देगे।पीड़ित ने शकील सहित खातेदार पर जमीन के लिये हत्या कराने की भी आंशका जताई है।

गाली गलौज मारपीट और जान से मारने की धमकी देने की रिपोर्ट दर्ज

अमन लेखनी समाचार

सरोजनी नगर लखनऊ। बंथरा के अन्दुपर देव निवासी राहुल ने सरोजनीनगर के गहरु निवासी अमित गौतम, अंशु, गौरव और मसी के खिलाफ गाली गलौज मारपीट व जान से मारने की धमकी देने का आरोप लगाया है। सरोजनीनगर पुलिस रिपोर्ट दर्ज कर मामले की जांच कर रही है। राहुल का कहना है कि वह गुरुवार शाम अपने मामा के लड़के को चकौली गांव छोड़ने जा रहा था। तभी सरोजिनी नगर के पिपरसण्ड गांव में बीयर की दुकान के पास अमित, अंशु, गौरव और मसी ने रास्ता रोक कर मड़ियावं के खदरा निवासी रिश्तेदार कल्लू से गाली गलौज करने लगा। आरोप है कि विरोध करने पर चारों आरोपियों ने मारपीट भी की। जब लोगों ने बीच बचाव किया तो आरोपी जान से मारने की धमकी देते हुए वहां से चले गए। फिलहाल सरोजनीनगर पुलिस राहुल की तहरीर पर रिपोर्ट दर्ज कर मामले की जांच कर रही है।

दो सगी किशोरी बहनें लापता

लखनऊ , आशियाना क्षेत्र में गुरुवार दोपहर दो सगी किशोरी बहनें घर से ट्यूशन पढ़ने के लिए निकली और वापस अपने घर नहीं लौटी पिता ने काफी खोजबीन के बाद स्थानीय पुलिस से शिकायत की हैं पुलिस गुमसुदगी की धाराओं में मुकदमा दर्ज कर बहनो की तलाश में जुटी है आशियाना क्षेत्र के पासी टोला बंगला बाजार में महेश प्रसाद रावत अपने परिवार संग रहते हैं पीड़ित पिता के मुताबिक उनकी दो पुत्रिया 15 वर्षीय आँचल अपनी छोटी बहन कंचन के साथ गुरुवार दोपहर करीब 1:00 बजे ट्यूशन पढ़ने के नाम पर घर से निकली और शाम तक घर वापस नहीं लौटी जिसपर उन्होंने पुत्रियों के ट्यूशन से लेकर उनके दोस्तों में काफी तलाशा लेकिन कोई पता नहीं चला जिसपर पीड़ित पिता ने बहनो के गुमसुदा होने की सूचना स्थानीय थाने पर दी पुलिस ने पिता की शिकायत पर मुकदमा दर्ज कर दोनों बहनो की तलाश में जुटी हैं

टीम इंडिया के विश्व कप स्टार मोहम्मद शमी को सीएम योगी देंगे बड़ा तोहफा

अमन लेखनी समाचार

लखनऊः विश्व कप 2023 में अपनी तेज गेंदबाजी से कहर बरपाते हुए टीम इंडिया को फाइनल तक पहुंचाने में अहम भूमिका निभाने वाले मोहम्मद शमी को उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बड़ा तोहफा दिया है। सीएम योगी की पहल पर शमी के अमरोहा जिले में स्थित पैत्रिक गांव में स्टेडियम का निर्माण किया जाएगा। इसके लिए जमीन की तलाश शुरू हो गई है।

अमरोहा के साहसपुर गांव के हैं शमी

अमरोहा के सीडीओ अश्विनी कुमार मिश्र व अन्य अधिकारियों ने जोया विकासखंड़ का भ्रमण किया। साहसपुर गांव में स्टेडियम के निर्माण के लिए जमीन की तलाश शुरू कर दी गई है। इसके लिए आलाधिकारियों को आवश्यक निशा-निर्देश दिए गए हैं। शमी का परिवार साहसपुर में ही रहता है। शमी ने यहां एक शानदार फॉर्म हाउस बनवाया है। शमी अपने गांव नियमित तौर पर आते हैं और यहां उन्होंने अपने अभ्यास के लिए पिच भी बनावाई है।बंगाल की ओर से खेलते हैं घरेलू क्रिकेट शमी घरेलू क्रिकेट में बंगाल का प्रतिनिधित्व करते हैं। उत्तर प्रदेश से कम उम्र में ही वो क्रिकेट का ककहरा सीखने पश्चिम बंगाल चले गए थे। वहीं पर उन्होंने अपने घरेलू क्रिकेट करियर की शुरूआत की और शानदार प्रदर्शन करते हुए टीम इंडिया में एंट्री की। साल 2013 में शमी ने कोलकाता में टेस्ट डेब्यू किया था। उसके बाद साल 2015 में पहली बार विश्व कप में शिरकत की थी। शमी को भारतीय टीम के लिए सीमित ओवरों की क्रिकेट खेलने के मौके कम मिले। ऐसे में जब भी उन्हें टीम ने खेलने का मौका दिया उसे खाली नहीं जाने दिया।

विश्व कप 2023 में मचा रहे हैं धमाल

शमी ने विश्व कप 2023 में धमाल मचाते हुए 6 मैच में 23 विकेट अपने नाम किए हैं। न्यूजीलैंड के खिलाफ 57 रन देकर 7 विकेट अपने नाम किए। टूर्नामेंट में तीन बार शमी पारी में पांच या उससे ज्यादा विकेट अपने नाम कर चुके हैं। वो विश्व कप इतिहास में सबसे तेज 50 विकेट लेने वाले और भारत के लिए विश्व कप इतिहास में सबसे सफल गेंदबाज भी बने हैं। एक विश्व कप में सबसे ज्यादा विकेट लेने के मामले में शमी ने जहीर खान का 12 साल पुराना रिकॉर्ड भी तोड़ दिया। ऐसे में उनके लिए ये विश्व कप कई मायनों में ऐतिहासिक और यादगार बन गया है। अगर भारतीय टीम विश्व कप जीतने में सफल होती है तो शमी का नाम भारतीय क्रिकेट इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में दर्ज हो जाएगा।

पूर्व विधायक विनय तिवारी की 72.08 करोड़ रुपये की संपत्ति ईडी ने की जब्त

मनी लांड्रिंग एक्ट के तहत कार्रवाई

अमन लेखनी समाचार

लखनऊः पूर्व विधायक विनय शंकर तिवारी की 72.08 करोड़ रुपये की संपत्तियों को प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने शुक्रवार को जब्त कर लिया। ईडी ने यह कार्रवाई विनय तिवारी की कंपनी गंगोत्री इंटरप्राइजेस लिमिटेड द्वारा बैंकों के कंसोर्टियम का करीब 1129.44 करोड़ रुपये हड़पने के मामले में की है। बैंकों की शिकायत पर सीबीआई मुख्यालय ने केस दर्ज किया था, जिसके बाद ईडी ने भी विनय तिवारी समेत कंपनी के समस्त निदेशक, प्रमोटर और गारंटर के खिलाफ मनी लांड्रिंग एक्ट के तहत केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी थी।

राजधानी स्थित ईडी के जोनल कार्यालय ने विनय तिवारी की गोरखपुर, महराजगंज और लखनऊ स्थित कुल 27 संपत्तियों को जब्त किया है, जिनमें कृषि योग्य भूमि, व्यवसायिक कांप्लेक्स, आवासीय परिसर, आवासीय भूखंड आदि शामिल हैं। दरअसल, ईडी की जांच में सामने आया कि मेसर्स गंगोत्री एंटरप्राइजेज लिमिटेड ने अपने प्रमोटरों, निदेशकों, गारंटरों के साथ मिलकर बैंक ऑफ इंडिया के नेतृत्व वाले सात बैंकों के कंसोर्टियम से 1129.44 करोड़ रुपये की क्रेडिट सुविधाओं का लाभ लिया था। बाद में इस रकम को उन्होंने अन्य कंपनियों में डायवर्ट कर दिया और बैंकों की रकम को वापस नहीं किया। इससे बैंकों के कंसोर्टियम को करीब 754.24 करोड़ रुपये का नुकसान हुआ। ईडी इस मामले की आगे जांच कर रही है।

साढे सोलह लाख की ठगी करने वाले नटवरलाल वैभव केला समेत पांच पर मुकदमा दर्ज

अमन लेखनी समाचार

मोहनलालगंज।लखनऊ के रकाबगंज के शास्त्रीनगर निवासी बिल्डर सचिन कंछल ने डीसीपी दक्षिणी विनीत जायसवाल से लिखित शिकायत करते हुये बताया वो कंछल ग्रुप के नाम से रियल स्टेट का कारोबार करते है,मेरे भाई के मित्र वैभव केला निवासी एलडीए कालोनी, आशियाना घर जाते जाते,इस दौरान 2017 में वैभव केला को पैसो की जरूरत पड़ी तो कई बार में खाते में पांच लाख बीस हजार रुपए दिये ओर ब्याज सहित नौ लाख बयालिस हजार रुपए लौटने की बात कही लेकिन पैसे वापस नही किये ,अक्टूबर2019 में मोहनलालगंज के मऊ में स्थित प्रिशा रेजीडेंसी में सुखदेव सिंह ने बुलाया जहा पहले से ही विवेक केला, वैभव केला, जितेन्द्र बाथम, सनमदीप बैठे हुये थे, सुखदेव ने कहा वैभव केला पैसे वापस नही दे पायेगे इस लिए आप मेरी रेजीडेंसी में मकान ले ले जिसमें उक्त पैसा समायोजित हो जावेगा, झांसे में आकर सात लाख पन्द्रह हजार की रकम वैभव केला की फर्म प्रिशा कन्सलटेंसी एण्ड प्रमोटर्स के खाते में डाल दी, इस तरह उक्त वैभव केला ने उससे सोलह लाख सत्तावन हजार रुपए की ठगी कर ली ओर काफी समय बीत जाने के बाद भी रेजीडेंसी में मकान की रजिस्ट्री नही की।जून 2021को जालसाज वैभव केला समेत उसके साथियों के कार्यालय पहुंचकर पैसा वापस मंगा तो गाली-गालौज करने के बाद जान से मारने की धमकी देते हुये वहा से भगा दिया।पीड़ित बिल्डर सचिन कंछल ने बताया जालसाज वैभव केला पर धोखाधड़ी समेत पैसे हड़पने के कई मुकदमें भी दर्ज है।डीसीपी विनीत जायसवाल ने पीड़ित बिल्डर की शिकायत को गम्भीरता से लेते हुये जांच के बाद मोहनलालगंज पुलिस को मुकदमा दर्ज कर कड़ी कार्यवाही के निर्देश दियें।इंस्पेक्टर संतोष कुमार आर्य ने बताया पीड़ित की तहरीर के आधार पर आरोपी वैभव केला समेत उसके पांच साथियों के विरूद्व धोखाधड़ी, पैसे हड़पने, जान से मारने की धमकी समेत अन्य धाराओ में मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी गयी है।

नटवरलाल वैभव केला पर दर्ज है पैसे हड़पने व ठगी के पांच मुकदमें

जालसाज वैभव केला की ठगी का शिकार पीड़िता अपर्णा कुमारी,इकबाल अहमद,विवेक सक्सेना समेत एक ने 13अप्रैल को मोहनलालगंज पुलिस को तहरीर देते हुये प्लाटिंग में पैसा लगाकर कई गुना करने का झांसा देकर उनकी गाढी कमाई का लाखो रुपए हड़पने का आरोप लगाते हुये पैसे हड़पने,मारपीट,जान से मारने की धमकी समेत अन्य धाराओ में अलग-अलग तहरीर देकर चार मुकदमें दर्ज कराये थे किये,वही एक पीड़िता अफरीन की तहरीर पर पुलिस ने जालसाज की पत्नी जयंती वनराज के विरुद्व मारपीट व जान से मारने की धमकी देने का मुकदमा दर्ज किया था।2020 में हजरतगंज कोतवाली में जालसाज के विरूद्व धोखाधड़ी, पैसे हड़पने समेत अन्य धाराओ में भी मुकदमा दर्ज हुआ था।निवेशको ने ही आफिस बंद कर महीनो से फरार जालसाज वैभव केला को पकड़कर पुलिस के हवाले भी किया था,जिसके बाद पुलिस ने उसे जेल भेज दिया था।

यूपीः 69000 शिक्षक भर्ती अभ्यर्थियों ने घेरा शिक्षा मंत्री का आवास, धक्कामुक्की में गर्भवती महिला हुई बेहोश

अमन लेखनी समाचार

लखनऊ, 69000 सहायक शिक्षक भर्ती में 19000 सीटों पर हुए आरक्षण गड़बड़ी से वंचित आरक्षण पीड़ित अभ्यर्थियों ने शुक्रवार को बेसिक शिक्षा मंत्री संदीप सिंह के आवास का घेराव कर प्रदर्शन किया। नियुक्ति की मांग कर रहे अभ्यर्थियों को हटाने के दौरान पुलिस से उनकी नोकझोंक व धक्कामुक्की हुई। खींचतान व धक्कामुक्की में गर्भवती अभ्यर्थी रमा यादव बेहोश हो गई। वहीं एक महिला अभ्यर्थी के कपड़े फट गये। पुलिसकर्मियों ने प्रदर्शनकारी अभ्यर्थियों को जबरन बस में बैठाकर इको गार्डन भेज दिया।

69000 सहायक शिक्षक भर्ती में 19000 सीटों पर हुए आरक्षण गड़बड़ी से वंचित आरक्षण पीड़ित अभ्यर्थी नियुक्ति की मांग को लेकर बीते 102 दिनों से ईको गार्डन में धरना दे रहे हैं। इस दौरान अभ्यर्थी कई बार बेसिक शिक्षा मंत्री, मुख्यमंत्री आवास, भाजपा कार्यालय तक का घेराव कर प्रदर्शन कर चुके हैं। मांगों पर सुनवाई न होने से नाराज अभ्यर्थियों ने बेसिक शिक्षा मंत्री के आवास का घेराव कर प्रदर्शन किया।

पुलिस ने प्रदर्शनकारियों को हटाना शुरू किया तो प्रदर्शनकारी सड़क पर बैठ कर नारेबाजी करने लगे। प्रदर्शन में शामिल सुमित यादव ने बताया कि खीचतान और धक्कामुक्की के दौरान गर्भवती महिला मध्यर्थी रमा यादव बेहोश हो गई जिन्हें सिविल अस्पताल ले जाया गया। वहीं एक महिला अभ्यर्थी के कपड़े फट गये। उन्होंने बताया कि परिषदीय विद्यालयों की 69000 शिक्षक भर्ती में आरक्षण प्रक्रिया का ठीक से पालन न करने पर आरक्षित वर्ग के अतिरिक्त अभ्यर्थियों की चयन सूची को भी हाईकोर्ट ने रदद करते हुये 13 मार्च 2023 को तीन माह में रविजिट करर नियुक्ति करने का फैसला सुनाया था। फैसला के आठ माह बीत जाने के बाद भी कोई प्रक्रिया शुरू नही हुई।

अखिलेश ने किया 69 हजार शिक्षक भर्ती में संघर्ष का समर्थन

सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कहा कि आरक्षण की चोरी, सामाजिक न्याय के साथ अन्याय है। इसलिए 69 हजार शिक्षक भर्ती के संघर्ष में हम भी साथ हैं।

अभ्यर्थियों ने राष्ट्रपति को भेजा पत्र मांगी इच्छा मृत्यु

पिछड़ा दलित संयुक्त मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष सुशील कश्यप और प्रदेश संरक्षक भास्कर सिंह की अगुवाई में बौद्व विहार में बैठक कर 20 आरक्षण पीड़ित अभ्यर्थियों जिसमें 6 महिलाएं भी शामिल हैं ने राष्ट्रपति और राज्यपाल को ईमेल से पत्र भेज कर भर्ती में न्याय देने की गुहार लगाई। उन्होंने कहा कि भर्ती में न्याय न मिलने की वजह से बहुत परेशान है। अभ्यर्थियों ने कहा कि अगर आप न्याय दिलाने में सक्षम नही है तो पीड़ित अभ्यर्थियों को इच्छा मृत्यु की अनुमति प्रदान करें। इच्छा मृत्यु की गुहार लगाने वालों में दीपिका राजपूत, पूनम यादव, मालू सिंह चौधरी, नितिन पाल, प्रदीप कुमार कमल, बीबपी डिसूजा, पूजा, पूजा वर्मा, रवि गिरी, शिशुपाल, नर्वदेश्वर राजभर, दीपक, दीप शिक्षा, रामविलास यादव, शिवशंकर, आरके जायसवाल, आरके बघेल, रवि निषाद, शैलेन्द्र, अनुपम यादव आदि शामिल हैं।

स्वामी प्रसाद मौर्य की बेटी संघमित्रा कोर्ट में तलब

बिना तलाक धोखाधड़ी कर दूसरी शादी करने का आरोप

अमन लेखनी समाचार

लखनऊ, बिना तलाक लिए धोखाधड़ी करके दूसरी शादी करने के आरोपों में स्वामी प्रसाद मौर्य की पुत्री संघमित्रा और मारपीट, गालीगलौज, जान-माल की धमकी व साजिश रचने के आरोपों में स्वामी प्रसाद मौर्य, उनकी पत्नी व बेटे के साथ ही कई अन्य को बतौर आरोपी कोर्ट में तलब किया गया है। एमपीएमएलए कोर्ट के विशेष एसीजेएम अम्बरीश श्रीवास्तव ने आरोपियों को कोर्ट में पेश होने का आदेश देते हुए सुनवाई के लिए छह जनवरी 2024 की तारीख तय की है।

सुशांत गोल्फ सिटी के रहने वाले वादी दीपक कुमार स्वर्णकार ने कोर्ट में संघमित्रा, स्वामी प्रसाद मौर्य, उनकी पत्नी शिवा मौर्य, पुत्र उत्कृष्ट मौर्य, नीरज तिवारी, सूर्यप्रकाश शुक्ल और रितिक सिंह के खिलाफ परिवाद दाखिल किया था। इसमें बताया था की वादी और संघमित्रा वर्ष 2016 से लिव इन रिलेशन में रह रहे थे।

संघमित्रा और उनके पिता स्वामी प्रसाद मौर्य ने वादी को बताया की संघमित्रा का पहले पति से तलाक हो गया है। लिहाजा वादी ने तीन जनवरी 2019 को संघमित्रा से उनके घर में ही शादी कर ली थी। दीपक ने आरोप लगाया कि संघमित्रा ने 2019 के लोकसभा चुनाव में झूठा शपथपत्र देकर खुद को अविवाहित बताया था जबकि बाद में पता चला की संघमित्रा का मई 2021 में तलाक हुआ था। आगे कहा गया कि जब वादी ने वर्ष 2021 में विधिविधान से विवाह करने के लिए कहा तो स्वामी प्रसाद मौर्य ने उसके ऊपर कई बार विभिन्न स्थानों पर उक्त आरोपियों से जानलेवा हमला कराया। वादी ने अपना और अपने गवाह का बयान दर्ज कराया है। जिसके बाद कोर्ट ने स्वामी प्रसाद मौर्य, उनकी पत्नी शिवा मौर्य, पुत्र उत्कृष्ट मौर्य समेत अन्य सभी आरोपियों के खिलाफ साक्ष्य मिलने पर बतौर आरोपी उन्हें तलब किया है।

भेंट में प्राप्त हुए सवा किलो सोने के छत्र से सजेंगे रामलला, पहनाए जाएंगे रत्नजड़ित मखमली वस्त्र

लखनऊ। नए मंदिर में रामलला के ठाठ-बाट देखने लायक होंगे। प्राणप्रतिष्ठा के दौरान रामलला का श्रृंगार सोने-चांदी के आभूषणों से किया जाएगा। उनके सिर पर सवा किलो सोने का छत्र भी सजेगा। रामलला का सिंहासन भी सोने व चांदी से मंडित होगा। तीन फीट ऊंचे सोने के सिंहासन पर रामलला भाइयों समेत विराजमान होंगे। उन्हें रत्नजड़ित मखमली वस्त्र पहनाए जाएंगे। सोने का छत्र सेवानिवृत्त एक आईएएस अधिकारी की ओर से श्रीरामजन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट को भेंट किया जाएगा। विहिप के एक पदाधिकारी ने बताया कि आईएएस अधिकारी ने बृहस्पतिवार को ट्रस्ट के महासचिव चंपत राय से मुलाकात कर सोने का छत्र भेंट करने की इच्छा जाहिर की, जिसे स्वीकार कर लिया गया है। तय हुआ है कि प्राणप्रतिष्ठा से पहले सोने का छत्र ट्रस्ट को भेंट कर दिया जाए।

रिटायर्ड सचिवालयकर्मी के घर उत्पात मचाने वाले नौ आरोपियो समेत 60 अज्ञात पर मुकदमा

आरोपियो ने पीड़ित परिवार पर दर्ज कराया मुकदमा

अमन लेखनी समाचार

लखनऊ। निगोहां थाना क्षेत्र के सैदापुर गांव में पांच दिन पहले रिटायर्ड सचिवालयकर्मी के घर धावा बोलकर बेटे, पत्नी, दामाद, पोते की घर के अंदर घुसकर लाठी डंडो से बुरी तरह पिटाई कर स्कूटी समेत घर में ईट-गुम्मे से तोड़फोड़ कर दूसरे गांव नारायणखेड़ा के कई दर्जन दबंगो ने जमकर उत्पात मचाया था।इस दौरान बीच-बचाव को आये पड़ोसियों की भी दबंगो ने मारपीट की थी।पूरी घटना में जांच के बाद निगोहां पुलिस ने नौ नामजद आरोपियो समेत 50-60 अज्ञात के विरूद्व मारपीट, तोड़फोड़, बलवा, घर मे घुसने समेत अन्य गम्भीर धाराओ में मुकदमा दर्ज कर आरोपियो की तलाश में जुट गयी है।ज्ञात हो निगोहां के उतरांवा मजरा सैदापुर गांव निवासी रवि बाजपेयी से जुआ खेलने के लिये सात हजार रुपए जीतेन्द्र निवासी नारायणखेड़ा ने उधार लिया था,रवि का आरोप था कई बार मंगाने के बाद भी दबंग किस्म का जीतेन्द्र पैसा वापस नही कर रहा था,13नवम्बर को मठ गांव में हो रहे जुए में जीतेन्द्र कुमार के मौजूद होने की जानकारी पाकर अपने पैसे मंगाने गया तो नशे में धुत जीतेन्द्र ने अपने साथियों संग उसकी पिटाई कर दी थी,जिसके बाद किसी तरह मौके से भाग कर अपने घर पहुंचकर अपनी जान बचाई थी,उक्त घटना के करीब एक घंटे बाद शाम छःबजे के करीब आरोपी जीतेन्द्र अपने भाईयो धरम, बीरबल, करन व अपने पिता रामनाथ, चाचा राधेलाल ,सज्जन, गुड्डू, चकला समेत 50-60अज्ञात लोगो के साथ लाठी-डंडो व ईटो गुम्मो से लैस होकर उसके गांव स्थित घर आ धमका ओर दरवाजे बैठे सचिवालय से रिटायर्ड बुजुर्ग पिता रामकिशोर की बुरी तरह लाठी डंडो से पिटाई कर ईट से चेहरे व शरीर पर कई वार कर लहूलूहान कर दरवाजे खड़ी स्कूटी में तोड़फोड़ की,जिसके बाद घर में घुसकर बुजुर्ग मां ऊषा,जीजा आशीष मिश्रा, भाजे आदर्श, पड़ोसी की बेटी साक्षी की पिटाई कर घर के अंदर भी तोड़फोड़ की,चीख पुकार सुनकर बचाव को आये पड़ोसियो पर ईट गुम्मे चलाकर घायल कर दिया था।जिसके बाद आक्रोशित ग्रामीणो ने आरोपियों को घेरकर पिटाई शुरू की तो जान से मारने की धमकी देते हुये मौके से भाग निकलें थे।इंस्पेक्टर विनोद यादव ने बताया पीड़ित रवि की तहरीर पर नौ नामजद समेत 50-60अज्ञात के विरूद्व मारपीट, बलवा, तोड़फोड़, घर में घुसने, जान से मारने की धमकी समेत अन्य गम्भीर धाराओ में मुकदमा दर्ज कर आरोपियो की तलाश शुरू कर दी गयी हैं।

संदिग्ध परिस्थितियो में बंद कमरे में युवती का शव मिलने से मचा हड़कंप

मृतका के भाई ने लगाया हत्या का आरोप जाँच में जुटी पुलिस

अमन लेखनी समाचार

लखनऊ , कृष्णा नगर कोतवाली क्षेत्र में शुक्रवार दोपहर एक बंद कमरे में युवती का शव मिलने से हड़कंप मच गयो कमरे से तेज बदबू आने पर मकान मालिक ने कंट्रोल नंबर पर पुलिस को सूचना दी सूचना पर जब मौके पर पहुंची स्थानीय पुलिस ने कमरे का ताला तोडा तो कमरे में एक युवती का मृत अवस्था में शव मिला जो कई दिन पुराना था पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है कृष्णानगर थाना क्षेत्र अंतर्गत दामोदर स्थित मकान संख्या 554 ग/18 गंगा देवी पत्नी स्व० रामू ने अपने दो मंजिला मकान का ऊपरी हिस्सा किराएदारों को रहने के लिए दे रखा है । मकान मालकिन की बेटी के मुताबिक मृतका सत्यभामा (23) पुत्री मथुरा प्रसाद मूल निवासी सफीपुर उन्नाव लगभग पांच छः माह पूर्व अपनी बड़ी बहन रेनू संग उनके मकान में एक माह तक किराए पर रह चुकी थी । बीते 11 नवंबर को मृतका अपने परिचित युवक के साथ उनके मकान पर आई और ढाई हजार रूपए प्रतिमाह की दर से एक कमरा किराए पर लिया । कमरा किराए पर लेने के बाद मृतका सत्यभामा छोटी दिवाली के ही दिन अपनी बहन नीलम संग दीपावली मनाने अपने पैतृक गांव सफीपुर उन्नाव चली गई जबकि युवक कमरे में ही रुका रहा । दिवाली के अगले दिन की सुबह मृतका उन्नाव से लखनऊ युवक के पास लौट आई । इसी बीच 13 नवंबर को ही युवक मृतका सत्यभामा को कमरे में बंद कर बिना बताए कहीं चला गया, जिसकी भनक किसी को नही लगी । गुरुवार दोपहर लगभग 3 बजे कमरे से निकल रही तेज दुर्गंध के कारण संदेह होने पर लोगों ने मामले की जानकारी पुलिस कंट्रोल रूम को दी । सूचना पर पहुंची स्थानीय कृष्णानगर पुलिस ने कमरे के दरवाजे में लगा ताला तोड़कर देखा तो कमरे की फर्स पर बिछी चटाई पर एक युवती की सड़ी हुई लाश पड़ी थी । पुलिस ने कमरे से साक्ष्य एकत्र कर युवती के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया ।

गांधी परिवार का चार दशकों तक राज रहा, व्यवस्था नहीं सुधरी : केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी

अमन लेखनी समाचार

लखनऊ , रायबरेली की सलोन विधानसभा क्षेत्र के छतोह व नगर पंचायत नसीराबाद में एक दिवसीय दौरे पर आईं केन्द्रीय मंत्री व अमेठी सांसद स्मृति ईरानी ने गांधी परिवार पर जमकर हमला बोला। उन्होंने कहा कि चार दशक तक गांधी खानदान का राज रहा, उनके बच्चे विदेशों में पढ़ें पर स्कूलों की व्यवस्था में सुधार नहीं हुआ।

केन्द्रीय मंत्री ने राजाराम चेतना डिग्री कालेज में लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री के आशीर्वाद से अमेठी लोकसभा क्षेत्र के 560 परिषदीय विद्यालयों में पहली बार फर्नीचर लगवाया गया है। इसके पहले केन्द्रीय मंत्री ने नसीराबाद के रामलीला मैदान पर पीएम स्वनिधि योजना के अंतर्गत लाभार्थियों को चेक व छतरी वितरण किया। उन्होंने कहा कि सब्जी की दुकान पर चाय वाले को छतरी दी गई। मीडिया के सवाल का जवाब देते हुए उन्होंने कहा कि चुनाव लोकतंत्र का त्योहार है जितने भी दर्शक गण देख रहे हैं। छत्तीसगढ़ व मध्य प्रदेश में उनसे कहना है कि लोकतंत्र के प्रति अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन करें और वोट डालने जरुर जायें।

50 लाभर्थियों को स्मृति ईरानी ने दिया चेक व छतरी

केन्द्रीय मंत्री स्मृति ईरानी ने रामलीला मैदान में पीएम स्वनिधि योजना के अंतर्गत नसीराबाद के 45 व परशदेपुर के पांच लाभार्थियों को चेक व छतरी का वितरण किया। केन्द्रीय मंत्री ने वितरण के बाद लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि मैं प्रधानमंत्री की आभारी हूं जिन्होंने पटरी दुकानदारों को स्वरोजगार के लिए बैंकों से ऋण देने की व्यवस्था कराई। कहा कि यहां 85 से अधिक ऐसे दुकानदार हैं जो एक बार 10 हजार का ऋण लेकर बैंक को लौटा चुके हैं। सलोन विधानसभा क्षेत्र में 1858 लोगों ने ऋण का आवेदन किया था, जिसमें 1475 लोगों को दस दस हजार का ऋण दिया गया। 680 लोगों को बीस-बीस हजार तथा 80 से अधिक लोगों को 50 हजार का ऋण दिया गया। अब तक पूरे देश में 53 लाख लोगों को इस योजना का लाभ मिला है।

उन्होंने कहा कि बैंक, सांसद व देश के प्रधानमंत्री की सोच है कि आप सभी विकसित हों। लोगों से कहा कि अपना सामान अपने लोगों से ही खरीदें। उन्होंने विधायक अशोक कुमार कोरी से सलोन विधानसभा क्षेत्र में विशेष ऋण मेला लगवाने को कहा जिससे सभी को लाभ मिल सके। जिलाधिकारी हर्षिता माथुर, पुलिस अधीक्षक आलोक प्रियदर्शी, विधायक अशोक कुमार, जिला सहकारी बैंक के अध्यक्ष विवेक सिंह, पूर्व विधायक गजाधर सिंह, पूर्व प्रमुख सैय्यद अहमद, छतोह ब्लाक प्रमुख प्रतिनिधि विशाल सिंह ने केन्द्रीय मंत्री को पुष्प गुच्छ देकर स्वागत किया।

बेखौफ चोरों ने मकान का ताला तोड़कर हजारों रुपए की नगदी व गहने किया पार

सरोजनी नगर लखनऊ। सरोजनीनगर में बेखौफ चोरों ने मंगलवार रात एक मकान का ताला तोड़कर हजारों रुपए की नगदी व गहनों के अलावा गैस सिलेंडर और कीमती कपड़े पार कर दिए। पुलिस पीड़ित की तहरीर पर रिपोर्ट दर्ज कर चोरों का सुराग लगा रही है। सरोजनीनगर के फरुर्खाबाद चिल्लावां निवासी कलीम अहमद खान के मुताबिक मंगलवार रात चोरों ने उसके मकान का ताला तोड़कर अंदर रखे 5 हजार रुपये, 3 सोने की अंगूठी, एक जोड़ी कान की बाली, एक गैस सिलेंडर और कीमती सामान व कपड़े उठा ले गए। जानकारी होने के बाद पीड़ित ने घटना की सूचना पुलिस को दी। सरोजनीनगर पुलिस मामले की रिपोर्ट दर्ज कर चोरों का सुराग लगा रही है।

संक्षेप

दबंगो ने जबरन तोड़ दी खेत की मेड विरोध पर दी जाति सूचक गालियां

पुरवा, उन्नाव। ग्राम मनिकापुर में जबरन खेत की मेंड़ तोड़ने के विरोध पर जाति सूचक गालियां देकर मारने पीटने का आरोप ग्राम प्रधान ने आरोपी भाईयों पर लगाते हुए कोतवाली पुलिस को शिकायती पत्र दिया जिसपर पुलिस ने मामला दर्ज किया। कोतवाली क्षेत्र के अन्तर्गत ग्राम मनिकापुर की ग्राम प्रधान उर्मिला पत्नी सुरेंद्र कुमार के मुताबिक गुरुवार की सुबह 8 बजे वह अपने खेत गयी थी। उसने उक्त खेत ग्राम मेंदपुर के रामबाबू प्रजापति से जरिये बैनामा खरीदी थी। जिसकी मेंड़ विक्रेता व उसके भाई श्याम बाबू प्रजापति ने जबरन तोड़कर अपने खेत में मिला लिया। जिसकी सूचना बाद वह बेटे विशाल के साथ खेत पर पहुंची। जहां पहले से ही घात लगाये दोनों भाई उसे देखते ही जाति सूचक गालियां देते हुए खेत न जोतने देने की धमकी दी। जिसका विरोध करते ही गालियां देते हुए उसे लात घूसों व लाठी डण्डों से पीटने लगे। जिससे उसके कमर में अंदरुनी चोटें व बाएं हाथ की उंगली क्षतिग्रस्त हो गयी है ।मारपीट में उसके नाक का फूल व चेन गिर गयी। ग्रामीणों को आता देख आरोपी जान से मारने की धमकी देकर भाग निकले। पीड़ित प्रधान की तहरीर पर कोतवाली पुलिस ने आरोपी भाईयों के विरुद्ध संगत धाराओं में मुकदमा पंजीकृत कर लिया है। इस संबंध में कोतवाली प्रभारी सुरेश कुमार सिंह ने बताया कि प्रधान द्वारा शिकायत पत्र दिया गया जिसपर मामला दर्ज कर लिया गया है।

यातायात माह के तहत यातायात नियमों की दी जानकारी

पुरवा, उन्नाव। यातायात माह के तहत शुक्रवार को टीएसआई तिलक सिंह की टीम ने स्थानीय विद्यालय में छात्रों एवं शिक्षकों को यातायात नियमों की जानकारी देते हुए मार्ग पर चलते समय उन्हें सावधानी बरतने की सलाह दी। इस दौरान विद्यालय संचालक एडवोकेट रत्नम चौरसिया, समाजसेवी स्वयंवर राजपूत समेत कई गणमान्य उपस्थित रहे। पुलिस अधीक्षक सिद्धार्थ शंकर मीणा के निर्देश एवं यातायात सीओ के मार्गदर्शन में ट्रैफिक पुलिस लगातार छात्रों एवं आम नागरिकों को सजग करने के लिए यातायात जागरुकता अभियान चला रही है। इसी कड़ी में शुक्रवार को स्थानीय कस्बा के श्रीमती राम रानी देवी चौरसिया पब्लिक स्कूल शिव-विहार में टीएसआई तिलक सिंह के नेतृत्व में पूरी टीम ने छात्रों को यातायात नियमों की जानकारी देते हुए उनके अनुपालन हेतु प्रेरित किया। तिलक सिंह ने जेब्रा क्रॉसिंग के विषय में विस्तार से छात्रों को बताया। साथ ही शिक्षकों एवं वरिष्ठ नागरिकों को कार में यात्रा करते समय सीट बेल्ट लगाने एवं बाइक चलाते समय हेलमेट पहनने की सलाह दी और उसके हानि और लाभ बताए। उन्होंने कहा कि सावधानी ही बचाव है। दुर्घटना से देर भली जैसे स्लोगन का मतलब भी समझाया। विद्यालय संचालक एडवोकेट रत्नम चौरसिया ने टीएसआई तिलक सिंह को सम्मानित करते हुए उनका और पूरी टीम का आभार जताया। इस दौरान हेड कांस्टेबल राम प्रकाश व रुप नारायण, मुकेश कुमार, समाजसेवी स्वयंवर राजपूत, शिक्षकों में गौरव शर्मा, अभय गुप्ता, आवेश अवस्थी, पारस बाजपेई आदि मौजूद रहे।

सर्वाइकल कैंसर उन्पमूलन दिवस पर विधिक जागरूकता शिविर आयोजित

अमन लेखनी समाचार

उन्नाव। उ०प्र० राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण लखनऊ कि कार्ययोजना वर्ष 2023-2024 के क्रियान्वन के क्रम में कार्यालय जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, की जिला जज/अध्यक्ष प्रतिमा श्रीवास्तव के दिशा निर्देश में सर्वाइकल कैंसर उन्मूलन दिवस विषय पर विधिक जागरूकता शिविर का आयोजन उच्च प्राथमिक विद्यालय चाँदपुर तहसील सदर में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा किया गया उक्त शिविर पराविधिक स्वयंसेवक रजनीश श्रीवास्तव द्वारा उपस्थित महिलाओं एवं लड़कियों को सर्वाइकल कैंसर के सम्बन्ध में विस्तार से जानकारी देते हुये बताया कि सर्वाइकल कैंसर महिलाओं में एक आम बीमारी के रूप में फैल रही है। सर्वाइकल कैंसर की बीमारी सामान्यतयह बीमारी 40 वर्ष से अधिक उम्र की महिलाओं में होती है। परन्तु यह देखा गया है कि 20 वर्ष से लेकर 70 वर्ष तक की महिलाओं को सर्वाइकल कैंसर का जोखिम रहता है। इस बीमारी की यदि प्रारम्भ में जानकारी हो जाती है तो 90 प्रतिशत तक मामलों में मरीज को बचाया जा सकता है। अतः इस बीमारी में जागरूकता ही बचाव है। इसके अतिरिक्त उन्होने जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के उद्देश्यों पर भी प्रकाश डालते हुये बताया कि प्राधिकरण का मुख्य उद्देश्य कोई भी व्यक्ति पैसे के अभाव में न्याय पाने से वंचित न रह जाये। आगामी राष्ट्रीय लोक अदालत-09.12.2023 के विषय में जानकारी प्रदान की एवं जनमानस से अधिक से अधिक अपने वाद निस्तारण की अपील कीउक्त कार्यक्रम में गायत्री देवी परावधिक स्वयंसेवक ने बताया की सर्वाइकल कैंसर जैसी बीमारी हेतु सुरक्षा एवं जागरूकता अत्यधिक आवश्यक है। उन्होंने कहा कि इस सम्बन्ध में सभी महिलाओं को जागरूक होना आवश्यक है जिससे बचाव हो सके। देश में कैंसर के मामले में सर्वाइकल कैंसर का चौथा स्थान है। सर्वाइकल कैंसर महिलाओं में मौत का एक आम कारण है। सर्वाइकल कैंसर कोई संकेत या लक्षण उत्पन्न नहीं कर सकता है, ज्यादातर इसकी प्रारंभिक अवस्था में लक्षण तब विकसित हो सकते हैं जब कैंसर कोशिकाएं आसपास के ऊतकों पर हमला करना शुरू कर दें। सर्वाइकल कैंसर यानी बच्चेदानी के मुंह या भाग का कैंसर हैं महिलाओं को साफ सफाई पर विशेष ध्यान देना चाहिए। अनुशासित जीवन शैली अपनाएं और खान-पान पर ध्यान दें तो सर्वाइकल कैंसर से बचाव हो सकेगा। शिविरों के माध्यम से महिलाओं का पैप स्मीयर परीक्षण कर सकते हैं साथ ही कोलपोस्कोपी परीक्षण से इसका निदान आसान होता है नायब तहसीलदार तनवीर हसन ने शासन द्वारा चल रही योजनाओं के बारे में विस्तार से बतायाउक्त कार्यक्रम में अशोक कुमार ग्राम प्रधान, दीपेन्द्र कुमार तिवारी लेखपाल एवं बड़ी संख्या में जनमानस उपस्थित रहें कार्यक्रम का संचालन जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा किया गया

श्रीमद्भगवत कथा सुनने से मिलती है पापों से मुक्ति

अमन लेखनी समाचार

उन्नाव। पुलिस लाइन गेट के सामने, सनातन परिवार सत्संग सेवा ट्रस्ट वृंदावन के तत्वावधान में तृतीय श्रीमद्भागवत कथा ज्ञान यज्ञ के प्रथम दिवस भागवत पुराण के महात्म्य का वर्णन हुआ। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ख्यातिप्राप्त कथा प्रवक्ता परम पूज्य संत श्री राम शरण शास्त्री जी महाराज ने भागवत पुराण का पूजन अर्चन और आरती के साथ प्रथम दिवस की कथा शुरू की। भागवत पुराण का इतना बड़ा महत्व है कि देवताओं ने अमृत कलशों के बदले इस महापुराण का वरण किया। श्रीमद्भगवत मोक्षदायिनी होने के साथ जीवन के सभी क्लेशों को काटने का सुमार्ग है। इसका एक एक शब्द हीरे मोती के समान है। जो मनुष्य इस परम पावन कथा का श्रवण मन से कर लेता है उसके जन्म जन्मांतर के पाप मिट जाते हैं। श्रीमद भागवत पुराण सभी शास्त्रों का सार है। जब वेदों के संकलन और महाभारत, पुराणों की रचना के बाद भी उन्हें शांति न मिली तो उनके गुरु नारद मुनि ने उन्हें श्रीमद भागवत पुराण लिखने को प्रेरित किया। यह श्री वेदव्यासजी की आखिरी रचना है और इस कारण पूर्व के सभी ग्रंथों और पुराणों का निचोड़ है इसमें। भगवान की वाणी को ही भागवत कहा गया है। भक्ति देवी की व्यथा और उनके बैकुंठ गमन का वृत्तान्त सुनाया गया। इसी क्रम में महाराजजश्री ने राजा परीक्षित के जन्म की भूमिका प्रस्तुत की। मुख्य यजमान डॉ संजय मिश्रा, बबली मिश्रा, अरविंद मिश्रा, हेमलता मिश्रा, विनीत मिश्रा, डॉ उत्कर्ष मिश्रा, पुलकित, पंखुरी, क्षितिज, डॉ मनीष सिंह सेंगर, उद्योग व्यापार मंडल अध्यक्ष अमित मिश्रा, सक्रिय समाजसेवी प्रशांत मिश्रा वेंकट व प्रशांत दीक्षित, कॉमेडियन लक्ष्य निगम, पूर्व सभासद राहुल कश्यप, लाल बहादुर कुशवाहा, शांतनु यादव, राजेश, धीरज आदि सहित ममता द्विवेदी, शोभा पांडेय, डॉ ममता शुक्ला, कीर्ति श्रीवास्तव, नीलम त्रिपाठी, नीलम सिंह, मंजू शर्मा, पुरुषोत्तम गौड़, गौरव, शिवम दीक्षित आदि ने पूजन आरती में भाग लिया। कथा के साथ भजन मंडल द्वारा सुमधुर भजनों में तालियां बजाते हुए बड़ी संख्या में श्रोता भावविभोर होते रहे। डॉ संजय मिश्रा और महाराज श्री के सचिव आचार्य शिवम मिश्रा ने उन्नाव वासियों का आवाहन करते हुए कहा कि प्रतिदिन कथा में शाम 3 बजे से 8 बजे तक सपरिवार श्रवण करें।

राष्ट्रीय सेवा योजना में बच्चो को दिया गया प्रशिक्षण

अमन लेखनी समाचार

बीघापुर, उन्नाव। राष्ट्रीय सेवा योजना(एन एस एस) के तहत छात्र/छात्राओं का तीस दिवसीय पुलिस प्रशिक्षण कार्यक्रम की शुरूवात शुक्रवार को थाना बिहार में शुरू की गई। जिसमे छात्रओ को पुलिस की कार्यशैली के साथ कार्य करने की जानकारी भी प्राप्त करेंगे ।राष्ट्रीय सेवा योजना के अंतगर्त युवक को समाज से जोड़कर सामाजिक कार्य करना प्रमुख उद्देशय होता है। इसी परिपेक्ष्य में बाबू जयशंकर गया प्रसाद महाविद्यालय सुमेरपुर के पाँच छात्र प्रशिक्षण के लिए थाना बिहार भेजे गए है जिसमे जगतखेड़ा के रोहित कुमार, चांदपुर की तृप्ति पटेल व आरूषि पटेल पाटन की आकांक्षा पटेल है ।जबकि एक छात्र अनुपस्थिति रहा ।थाना प्रभारी शिव प्रकाश पांडेय ने कहा उक्त छात्र-छात्राएं पुलिस के कार्यो को सीखेंगी व पुलिस के दैनिक कार्यो से भी अवगत होंगी ।प्रथम दिन प्रशिक्षण लेने वाले छात्र-छात्राओं को महिला डेस्क में लगाया गया है जहाँ थाने आने वाले फरियादियों की समस्या का समाधान कैसे होगा इसकी जानकारी लेंगे ।इस मौके पर राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम अधिकारी डॉ प्रशांत शुक्ला, अमित मिश्रा, जितेंद्र बहादुर सिंह, शिवेंद्र श्रीवास्तव आदि मौजूद थे।

सुने घर का ताला तोड़कर चोरों ने नगदी समेत पार कर दिया लाखो के जेवरात

अमन लेखनी समाचार

सफीपुर, उन्नाव। सुने घर का ताला तोड़ कर चोरों ने घर रक्खा लगभग 4000 रुपिया नगद व डेढ़ लाख का जेवर उठा ले गए। चोरों ने घर के पास खाली पड़े प्लाट मे अलमारी फेंक कर फरार हो गए सुबह जब सामान पड़ा देख पड़ोसियों ने परिजनों को सूचना दी ।मौके पर पहुची पुलिस ने जाच कर जल्दी ही चोर पकड़े जाने का आश्वासन दिया कस्बा के मोहल्ला सरॉय सूबेदार पूर्वी निवासी अंकित कुमार पुत्र स्व मुन्ना लाल अपने घर के पास ही लांड्री चलाता है एक वर्ष पूर्व उसकी पत्नी उमा की मौत हो गई थी जिसके एक छोटा बच्चा भी है बच्चा छोटा होने के कारण अपने घर मे ताला डाल मोहल्ले में ही रहने वाली मौसी रूपा देवी के यहां युवक रहने लगा ।बीती रात चोरों ने बंद घर का ताला तोड़ कमरों में घुसे रक्खे बक्से व अलमारी से पत्नी उमा का लगभग एक लाख का व दिल्ली में रहने वाले बड़े भाई रिंकू की पत्नी कुसमा, अशोक की पत्नी सुमन का लगभग पचास हजार का जेवर पार कर दिया सुबह घर से 50 मीटर दूर मोहल्ले निवासी राजू के प्लाट मे बक्से व उजड़ा सामान पड़ा देख लोगो ने गृह स्वामी अंकित को सूचना दी । प्रभारी निरीक्षक श्याम नारायण सिंह ने बताया सूचना मिली है जल्द ही चोर पुलिस की हिरासत में होगे।

ब्लॉक परिसर में आयोजित क्षेत्र पंचायात सदस्यों का प्रशिक्षण हुआ सम्पन्न

अमन लेखनी समाचार

नवाबगंज, उन्नाव। ब्लॉक मुख्यालय पर मोहान विधान सभा के क्षेत्र पंचायात सदस्यों के प्रशिक्षण कार्यक्रम को उन्नाव सांसद साक्षी महाराज मोहान सभा विधायक ब्रजेश रावत पूर्व विधान सभा अध्यक्ष ह्रदय नारायण दीक्षित भाजपा जिला अध्यक्ष अवधेश कटियार ने आये हुए समस्त क्षेत्र पंचायात सदस्यों को सम्बोधित किया व केंद्र सरकार व प्रदेश सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं का विस्तार से वर्णन किया कार्यक्रम का संचालन जिला उपाध्यक्ष महेश दीक्षित ने किया पूर्व जिला अध्यक्ष बी जे पी आनन्द अवस्थी ने अपने विचार व्यक्त किए कार्यक्रम में प्रमुख रूप से ब्लॉक प्रमुख प्रतिनिधि रवि प्रताप सिंह मनीष जयसवाल मण्डल अध्यक्ष राजेंद्र द्विवेदी प्रवीण गुप्ता दुर्गेश तिवारी देशपाल रावत शुसील श्रीवास्तव वणिकांत द्विवेदी निर्लेश दीक्षित नपेंद्र सिंह अनुज सिंह शिवपाल लोधी जगतपाल सिंह माता सुशीला देवी आई टी सयोजक जितेंद्र सिंह व भारी संख्या में भाजपा कार्यकर्ता व क्षेत्र पंचायात सदस्य उपस्थित रहे।

डबल टेकर बस ने डीसीएम को मारी टक्कर, दो की मौत, दर्जनों घायल

अमन लेखनी समाचार

उन्नाव। बेहटा मुजावर थाना क्षेत्र के लखनऊ आगरा एक्सप्रेस वे पर शुक्रवार भोरपहर सबली खेड़ा गांव के सामने तेज रफ्तार डबल डेकर बस ने डीसीएम में पीछे से टक्कर मार दी। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि डीसीएम पलट गयी। हादसे में डीसीएम में सवार दो लोगों की मौत हो गयी। वहीं तीन दर्जन से अधिक लोग जख्मी हो गये। सूचना पर पहुंची यूपीडा टीम आनन-फानन घायलों को स्थानीय सीएचसी पहुंचाया। जहां से उन्हें जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया है। पुलिस ने परिजनों को सूचना देने के बाद शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेजा हैं। शुक्रवार भोरपहर करीब 3 बजे लखनऊ के आलमबाग स्थित ट्रांसपोर्ट कंपनी से डीसीएम में कैटर्स का सामान लोडकर इटावा के सैफई जाने के लिए डीसीएम में बैठकर 40 मजदूर निकले थे। तभी बेहटा मुजावर थाना क्षेत्र के लखनऊ आगरा एक्सप्रेसवे स्थित सबली खेड़ा गांव के पास तेज रफ्तार डबल डेकर बस ने डीसीएम में पीछे से टक्कर मार दी। टक्कर लगने से डीसीएम पलट गयी। हादसे में हरदोई के अतरौली निवासी मोहित 25 पुत्र स्व. हरिश्चंद्र व लखनऊ जिले के रहीमाबाद थाना क्षेत्र के शाही खेड़ा मजरा रूसेना गांव के रहने वाले लाल बहादुर 38 पुत्र स्व. गंगा प्रसाद की मौत हो गयी, वहीं लगभग तीन दर्जन से अधिक मजदूर गंभीर रूप से घायल हो गये। हादसे की सूचना मिलने पर यूपीडा की टीम व स्थानीय पुलिस मौके पर पहुंची। आनन-फानन एंबुलेंस से घायलों को स्थानीय सीएचसी पहुंचाया। जहां से उन्हें जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया। घायल राकेश ने बताया कि डीसीएम में कुल 40 लोग सवार थे। जिसमें खाना बनाने के कारीगर व हेल्पर थे। सभी लोग डीसीएम से सैफई में मुलायम सिंह यादव के यहां किसी कार्यक्रम में खाना बनाने जा रहे थे। पुलिस ने जांच के बाद परिजनों को सूचना देने के बाद शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेजा है। घटना के बाद मृतकों के परिजन रो-रोकर बेहाल होते रहे

सात दिवसीय रास लीला व राम लीला का किया गया शुभारंभ

अमन लेखनी समाचार

सफीपुर उन्नाव। स्थानीय कस्बे के बाबू भगवती चरण वर्मा पार्क में सात दिवसीय रासलीला व रामलीला के प्रथम दिन श्रीकृष्ण जन्म की लीला देख दर्शक मंत्रमुग्ध हो गए। बृन्दावन के बाल कलाकारों ने लीला की मनोहारी प्रस्तुति कर सभी का मन मोह लिया ।लीला का शुभारंभ कमेटी के संयोजक संजीव गुप्ता ने राधाकृष्ण स्वरूपों की पूजा अर्चना कर किया ।वही सुबह की पाली में नारद मोह लीला का मंचन किया गया।

कस्बे के भगवती चरण वर्मा पार्क में बृन्दावन से आये बाल कलाकारों ने कृष्ण जन्म की लीला के साथ रासलीला का मंचन शुरू किया। रासलीला को देख दर्शक रोमांचित हो उठे। राजा कंस के अत्याचारों, देवकी-बासुदेव को कारागार में बंद करने और भगवान कृष्ण के जन्म का नाट्य मंचन किया। स्वामी त्रिलोक चंद्र शर्मा द्वारा भगवान श्रीकृष्ण से संबंधित कथाओं का वर्णन किया गया ।लीला संयोजक पूर्व सभासद संजीव गुप्ता, कमलेश गुप्ता, मंजू सिंह, उत्तम निषाद, राहुल पटेल, सुरेश गुप्ता, राजू चौहान, लल्ला तिवारी ने राधाकृष्ण स्वरूप की आरती उतारी ।वही सुबह की पाली में नारद मोह लीला का मंचन किया गया। जिसमें दशार्या कि नारद एक जगह भगवान के भजन में इतने लीन हो जाते हैं कि इंद्र का सिंहासन हिल जाता है। सिंहासन जाने के भय के चलते इंद्र नारद के तप को भंग करने के लिए कामदेव और अप्सरा भेजते हैं। फिर भी नारद का ध्यान भंग नहीं होता है तो कामदेव नतमस्तक हो जाता है और नारदजी से क्षमा मांगते है। इसकी जानकारी होने पर नारद को अभिमान हो जाता है कि उन्होंने कामदेव को जीत लिया है ।इसकी जानकारी वह एक-एक करके ब्रह्मा, विष्णु और महेश को देते हैं ।नारद के अभिमान को खत्म करने के लिए भगवान विष्णु ने अपनी माया से सुंदर नगर और सुंदर राजकुमारी की रचना की। जहां पहुंचकर नारद श्रीलनिधी राजा के आग्रह पर उनकी बेटी विश्वमोहिनी की हस्तरेखा देखते हैं। हस्तरेखा देखकर नारद विश्वमोहिनी से विवाह करना चाहते हैं और भगवान विष्णु से हरि रूप लेकर आते हैं। जबकि हरि रूप में उन्हें बंदर का रूप दिया जाता है। इस दौरान भगवान विष्णु मौके पर पहुंच जाते हैं और विश्वमोहिनी से विवाह करते हैं। यहां नारद श्राप देते हैं कि जिस प्रकार में एक स्त्री के लिए व्याकुल हुआ हूं। उसी प्रकार आपको भी एक स्त्री के वियोग में व्याकुल होना पड़ेगा। इसके साथ ही जिस बंदर का चेहरा दिया है। ऐसे बंदर ही पृथ्वीलोक पर आपकी मदद करेंगे। इसे विष्णु भगवान स्वीकार करते हैं और बताते हैं कि यह सब तो उनकी माया थी ।संयोजक संजीव गुप्ता ने बताया कि सुबह की पाली में ऐंलीला सुबह 9 बजे से व शाम की पाली में 7 बजे से रासलीला का मंचन किया जा रहा है। अधिक से अधिक संख्या में लोगो से लीला का आनंद उठाने की अपील की है।

राजस्व लेखपाल ने किसान के खेत के बीचों बीच से खुदवा दी नाली

अमन लेखनी समाचार

औरास, उन्नाव। राजस्व लेखपाल के द्वारा नगर पंचायत की जमीन पर खेत मालिक को बगैर बताएं खेत के बीचो-बीच जेसीबी से नाली खुदवा दिया। जबकि लेखपाल का राजस्व गांव न होने के बावजूद नाली निर्माण मिली भगत से कर दिया खेत मालिक ने पूछा तो लेखपाल के द्वारा जाति सूचक शब्दों का प्रयोग करते हुए गंदी-गंदी गालियां जातिसूचक शब्दों का इस्तेमाल किया है। पीड़ित ने आरोप लगाकर पुलिस को तहरीर देकर मुकदमा पंजीकृत करने की मांग की है। औरास थाना क्षेत्र के कस्बा निवासी सुरेंद्र कनौजिया पुत्र सुंदर प्रसाद कनौजिया का खेत मोहान मार्ग के पास नंदौली बॉर्डर पर है। जिसमें राजस्व लेखपाल राजीव यादव के द्वारा नगर पंचायत की जमीन पर बगैर किसी आदेश के नाली का निर्माण कर दिया जबकि लेखपाल के पास राजस्व गांव नंदोली है फिर भी वह नगर पंचायत की जमीन पर अनाधिकृत तरीके से नाली का निर्माण खेत के बीचो-बीच से करा दिया खेत मालिक शुक्रवार को जब खेत पर पहुंचा तो देखा कि खेत में नाली बना दी गई है। तो उसने लेखपाल से बात किया तो लेखपाल ने खेत मालिक को गंदी-गंदी गलियां तथा जाति सूचक शब्दों का इस्तेमाल करते हुए कहा कि जो तुम हमारा कुछ नहीं कर पाओगे। जिसको लेकर खेत मालिक की तरफ से पुलिस को तहरीर देकर राजस्व लेखपाल पर मुकदमा पंजीकृत करने की मांग की है। खेत मालिक ने मुख्यमंत्री हेल्पलाइन नंबर पर भी लेखपाल के विरुद्ध शिकायत दर्ज कराई है। प्रभारी निरीक्षक रेखा सिंह से बात की गई तो उन्होंने बताया कि तहरीर के आधार पर मुकदमा पंजीकृत कर दिया जाएगा।

बाजार से वापस पैदल जा रहे युवक को ट्रक ने मारी टक्कर, हालत गंभीर

अमन लेखनी समाचार

पुरवा, उन्नाव। कोतवाली क्षेत्र के गांव अचलखेड़ा निवासी सुरेंद्र पुत्र स्वर्गीय बाबा दीन उम्र 32 वर्ष गांव की बाजार रोड़ पर पैदल सब्जी लेकर वापिस जा रहा था तभी सीमेंट लदे ट्रक ने टक्कर मार दी जिससे युवक सुरेंद्र गम्भीर रुप से घायल हो गया ।ग्रामीणों की सूचना पर पहुंची ऐम्बुलेंस स्थानीय सीएचसी लेकर पहुंची जहां युवक हालत गंभीर देखते हुए डॉ० ने जिला अस्पताल रेफर कर दिया है। कोतवाली प्रभारी सुरेश कुमार सिंह ने बताया कि ट्रक को कब्जे मे ले लिया गया। तहरीर मिलने पर कार्रवाई होगी। और चालक भाग निकला।

किसानों को वितरित किया उन्नत सरसों के बीज व चना

महिलाओं को ट्रस्ट द्वारा वितरित की गई दवाइयां

अमन लेखनी समाचार

बहराइच। मां राजेश्वरी देवी चैरिटेबल ट्रस्ट के द्वारा शुक्रवार को क्षेत्र के कृषकों को उन्नत सरसों के बीज निःशुल्क बांटे गए साथ ही क्षेत्र की गरीब महिलाओं को दवाइयां एवम अन्य सामग्री बांटी गई। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि ब्लॉक प्रमुख नवाबगंज जयप्रकाश सिंह ने कहा कि सरकार किसानों के लिए अनेक योजनाएं चला रही है। किसानों को इसका लाभ लेना चाहिए। ट्रस्ट के डॉयरेक्टर एस पी सिंह ने बताया कि ट्रस्ट का उद्देश्य अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति तक पहुंच कर उसे समृद्ध बनाना है। उपाध्यक्ष दुर्गेश वर्मा ने बताया कि ट्रस्ट लगातार पंद्रह सालों से जल जंगल और जमीन के लिए संघर्ष कर रहा है। दस्तगीर शाह ने बताया कि हम लोग किसानों के साथ नौजवानों को भी नशे से दूर रहने के लिए प्रेरित करते हैं। कार्यक्रम में ट्रस्ट पदाधिकारियों सहित काफी संख्या में किसान व महिलाएं मौजूद रहे।

लापरवाही मिलने पर कार्यवाही के लिए तैयार रहें शिक्षकः बीईओ

अमन लेखनी समाचार

बाबागंज, बहराइच। शिक्षा क्षेत्र नवाबगंज के ब्लॉक संसाधन केंद्र परिसर में रामनगर सेमरा व कल्याणपुर न्याय पंचायत में कार्यरत प्रधानाध्यापक/प्रभारी प्रधानाध्यापकों की महत्वपूर्ण बैठक शुक्रवार कों की गई। बीईओ नवाबगंज राधेश्याम वर्मा ने शिक्षा व्यवस्था कों बेहतर बनाने के लिए शिक्षकों की बैठक ली। इस अवसर पर बीईओ श्री वर्मा ने कहा कि अभिभावक संपर्क, अभिभावक जागरूकता, आधार बिहीन छात्रों के अभिभावकों से संपर्क कर समय रहते आधार बनवाने हेतु प्रेरित करने, विद्यालय परिवार की बैठक, सक्रिय पुस्तकालय, मिशन प्रेरणा, समय से पूर्व निपुण लक्ष्य प्राप्ति, प्रिंट रीच मटेरियल जैसे बिन्दुओ पर कार्य योजना की समीक्षा की, साथ ही विभाग द्वारा निर्धारित ऐप कों अधिक से अधिक संख्या में डाऊनलोड करने के सख्त निर्देश दिए। लापरवाही बरतने वाले शिक्षकों कों चेतावानी देते हुए कहा कि त्यौहार की छुट्टिया खत्म हो गई है, सभी स्कूलों में निरीक्षण करेंगे। कोई भी कोताही मिलने पर कार्यवाही के लिए तैयार रहे। इस मौके पर संकुल शिक्षक त्रिलोकीनाथ, जानकी प्रसाद सहित शिक्षक रमेश वर्मा, कमलेश कुमार, गणेश सोनी, अंकुर सिंह, सुधीर गुप्ता, सतीश श्रीवास्तव, सुनील कुमार आदि उपस्थिति रहे।

22 नवम्बर को आयोजित होगा किसान दिवस

अमन लेखनी समाचार

बहराइच। शासन के निदेर्शानुसार जनपद के किसानों की समस्याओं के निराकरण के लिए प्रत्येक माह के तृतीय बुधवार को आयोजित होने वाले किसान दिवसों की श्रृंखला अन्तर्गत 22 नवम्बर 2023 को पूर्वान्ह 11:30 बजे से विकास भवन सभागार में जिलाधिकारी मोनिका रानी की अध्यक्षता में किसान दिवस तथा कृषक उत्पादक संगठनों द्वारा कराये गये कार्यों की समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया है। यह जानकारी देते हुए उप निदेशक कृषि टी.पी. शाही ने कृषि एवं एलाइड विभागों के अधिकारियों से अपेक्षा की है कि विभाग से संबंधित योजनाओं की अद्यतन सूचनाओं के साथ निर्धारित तिथि, समय व स्थान उपस्थित होकर किसान दिवस में प्रतिभाग करें।

चिंतन

आदिवासियों के लिए अभी और बहुत कुछ करने होंगे

सरकार का ध्येय वाक्य सबका साथ सबका विकास है, लेकिन इस कसौटी पर जनजातीय समाज बहुत पीछे है। बेशक मोदी सरकार ने जनजातीय विकास मंत्रालय बनाया, एकलव्य मॉडल स्कूलों का ढांचा खड़ा किया, अमृतकाल के पहले बजट वित्त वर्ष 2023-24 के लिए जनजातियों (आदिवासियों) के विकास के लिए 15 हजार करोड़ के बजट का प्रावधान किया, इसके बावजूद धरातल पर आदिवासी समुदाय आजादी के 75 साल बाद भी सामाजिक, शैक्षणिक व आर्थिक रूप से बहुत पिछड़े हैं, जबकि संविधान में जनजातीय समुदाय को कई विशेष अधिकार प्राप्त हैं व अब तक सभी सरकारें इन समुदाय के विकास के लिए वादे, योजनाएं का ऐलान करती रही हैं। पीछे रहने का एक बड़ा कारण है कि केंद्रीय जनजातीय मामलों के मंत्रालय को कुल भारतीय आबादी के 8.6 प्रतिशत (करीब 11 करोड़ जनसंख्या) की तुलना में केंद्रीय बजट 2023-24 में 0.27 प्रतिशत का मामूली आवंटन दिया गया। आबादी के अनुपात में यह आवंटन बहुत कम है। दूसरा, धन के आवंटन का तब तक कोई मतलब नहीं है जब तक कि इसे विवेकपूर्ण ढंग से जमीनी स्तर पर खर्च न किया जाए। योजनाओं के क्रियान्वयन में व्यापक स्तर पर भ्रष्टाचार है, डीबीटी से भी बात नहीं बनी है। मोदी सरकार ने 15 नवंबर को भगवान बिरसा मुंडा के जन्मदिवस पर आदिवासी गौरव दिवस के रूप में ऐलान किया था। केंद्र सरकार बिरसा मुंडा की जयंती के अवसर पर बुधवार को आदिवासियों के कल्याण के लिए 24,000 करोड़ रुपये की एक योजना शुरू करेगी। प्रधानमंत्री मोदी इस योजना का ऐलान करेंगे। यह योजना स्वागत योग्य है, लेकिन अहम सवाल है कि यह योजना कब तक व किस रूप में क्रियान्वित होगी, इसकी कोई समयबद्ध रूपरेखा नहीं है। अभी इस ऐलान के पीछे राजनीतिक मकसद जरूर है। मध्य प्रदेश में 17 नवंबर को चुनाव है, छत्तीसगढ़ में दूसरे चरण व राजस्थान का चुनाव बाकी है, इन राज्यों में आदिवासी मजबूत वोटबैंक हैं। लोकसभा चुनाव के हिसाब से भी आदिवासी मतदाता अहम हैं। छत्तीसगढ़ और त्रिपुरा में 30% से अधिक, मेघालय और नागालैंड में 85% से अधिक, मिजोरम में 90% जनजातीय आबादी है। इसके अलावा मध्यप्रदेश, राजस्थान, झारखंड, ओडिशा, मणिपुर, तेलंगाना, आंध्रप्रदेश, गुजरात, बिहार, पश्चिम बंगाल, असम, लक्षद्वीप, आंडमान निकोबार द्वीप समूह आदि में आदिवासी समुदाय अच्छे खासे तादाद में हैं। अब तक सभी राजनीतिक दल आदिवासियों को वोटबैंक की तरह इस्तेमाल करते रहे हैं, लेकिन वे अभी भी आर्थिक व शैक्षणिक रूप से पीछे हैं। आदिवासी समुदाय रोजगार की कमी, छिनते संसाधन, हाशियाकरण, विस्थापन, खाद्य असुरक्षा, कुपोषण, सामाजिक व आर्थिक पिछड़ापन, श्रम का शोषण, सांस्कृतिक क्षरण व प्रतिनिधित्व का अभाव जैसी समस्याओं से जूझ रहे हैं। सही मायने में आदिवासियों के समग्र विकास के लिए भूमि एवं संसाधन अधिकार, शिक्षा एवं कौशल विकास, स्वास्थ्य सेवा एवं स्वच्छता, महिलाओं का सशक्तिकरण, आदिवासी संस्कृति का संरक्षण व प्रचार, विकास व प्रतिनिधित्व में भागीदारी एवं समावेशन, सामुदायिक सशक्तिकरण, उत्पादों के लिए बाजार, समुदाय में जागरूकता, पृथक जनजातियों की सुरक्षा, कानूनी संरक्षण, पुनर्वास और मुआवजा आदि के क्षेत्र में ईमानदारी से काम करने होंगे, केवल वादों व घोषणाओं से आदिवासियों का पिछड़ापन दूर नहीं होगा।

राजनीति

ऋतुपर्ण दवे

एमपी में नहीं चल रही 'मत' वाली हवा

मध्य प्रदेश में इस बार लगभग आधी से ज्यादा सीटों पर विधानसभा चुनाव जैसा कुछ लगा नहीं। बीच में खामोशी को चीरते एकाध प्रचार वाहन में लगे लाउडस्पीकर से प्रत्याशी के समर्थन में रिकॉर्डेड गीत व अपील क्या पता कितना असर डाल पाए? इस बार वाकई में विधानसभा चुनाव बिल्कुल कोलाहलविहीन रहा ईवीएम की बीप के साथ मत मशीन में दर्ज हो जाएगा, लेकिन 'मत'वाली हवा पहले तेज चली फिर एकाएक ठंडी पड़ गई। न कोई तूफान दिखा न ही राजनीतिक मौसम में मध्यप्रदेश के चुनावी सागर में कोई बिपरजॉय आया और न ही मौका। चुनाव बिना किसी लहर के होते दिख रहे हैं।

पहले नवरात्रि फिर दशहरा अब धनतेरस, दिवाली, गोवर्धन पूजा, भाई दूज और तुरंत बाद थमता प्रचार। मध्यप्रदेश में इस बार लगभग आधी से ज्यादा सीटों पर विधानसभा चुनाव जैसा कुछ लगा नहीं। बीच में खामोशी को चीरते एकाध प्रचार वाहन में लगे लाउडस्पीकर से प्रत्याशी के समर्थन में रिकॉर्डेड गीत व अपील क्या पता कितना असर डाल पाए? इस बार वाकई में विधानसभा चुनाव बिल्कुल कोलाहलविहीन रहा, लेकिन प्रदेश में सभी सीटों पर लड़ रही दोनों दिग्गज पार्टियों भाजपा-कांग्रेस के बड़े-बड़े नेताओं के खबरिया चैनलों में आ रहे बयानों से मतदाताओं का रुख समझ पाना बड़ा टेढ़ा काम रहा। नामांकन भरने से लेकर नाम वापसी तक जरूर थोड़ी सक्रियता दिखी, लेकिन बाद में यह सक्रियता सिवाय बड़े नगरों के गांव-गांव, डगर-डगर नहीं दिखी। इसका मतलब यह नहीं कि मतदाता खामोश है। हवा का रुख भांपने वाले राजनीतिक पण्डित भी इस बार अलग ही दिखे। बावजूद इसके न तो भाजपा और न ही कांग्रेस यह मानने को तैयार नहीं कि सत्ता के सिंहासन में वह पीछे है। कौन जीतेगा, कौन हारेगा इसको लेकर प्रत्याशी चयन का सर्वे कहां हुआ किसने किया, किससे पूछा गया कुछ नहीं पता। बस पता है तो इतना कि चंद घंटों बाद ईवीएम की बीप के साथ मत मशीन में दर्ज हो जाएगा, लेकिन 'मत'वाली हवा पहले तेज चली फिर एकाएक ठंडी पड़ गई। न कोई तूफान दिखा न ही राजनीतिक मौसम में मध्यप्रदेश के चुनावी सागर में कोई बिपरजॉय आया और न ही मौका। चुनाव बिना किसी लहर के होते दिख रहे हैं।

इस बार कुछ इस तरह का माहौल शुरू-शुरू में बना कि लगा चुनाव में एन्टी इन्कम्बेन्सी दिखेगी, लेकिन त्योहारों के दौरान जिस तरह की शांति और उदासीनता खासकर कांग्रेस में दिखी उससे सत्ता के समीकरण का गणित हल करने वाले भी अब थोड़ा सशंकित हैं। मध्य प्रदेश की 230 विधानसभा सीटों को लेकर अलग-अलग कयास हैं। प्रदेश की राजधानी और भोपाल-नर्मदापुरम संभाग का सियासी पारा मिला जुला सा लग रहा है। यहां 36सीटें हैं, जिस पर सीधी लड़ाई भाजपा और कांग्रेस के बीच है। इनमें भाजपा 12 तो कांग्रेस 10 विधानसभा में पूरे दमखम से लगी है, जबकि 14 सीटों पर बहुत ही संघर्षपूर्ण स्थिति है। ग्वालियर-चंबल क्षेत्र का अपना अलग राजनीतिक रसूख है। यहां विधानसभा की 34 सीटों में 19 पर कांग्रेस तो 6 पर भाजपा और 2 पर बसपा चुनौती देती दिख रही है] जबकि बांकी 7 पर कांटे का मुकाबला है। यहां बसपा में बढ़ोत्तरी के साथ सीटें 2018 जैसी आएं तो हैरानी नहीं होगी। इन्दौर संभाग की 37 सीटों पर काफी रोचक स्थिति दिख रही है। यहां 24 सीटों पर फिफ्टी-फिफ्टी वाली स्थिति है तो 8 सीटों पर संघर्षपूर्ण स्थिति और 4 सीटों पर भाजपा-कांग्रेस दोनों को भितरघातियों से डर है, जबकि 1 सीट पर बागी प्रत्याशी कांग्रेस के लिए मुश्किल बना है। उज्जैन संभाग की 29 विधानसभा सीटों पर भी स्थिति काफी कुछ साफ सी दिख रही है। यहां पर भाजपा 16 कांग्रेस 10 और 3 पर कांटे की स्थिति बनी हुई है। इस तरह मालवा-निमाड़, ग्वालियर चंबल, उज्जैन और भोपाल-नर्मदापुरम की

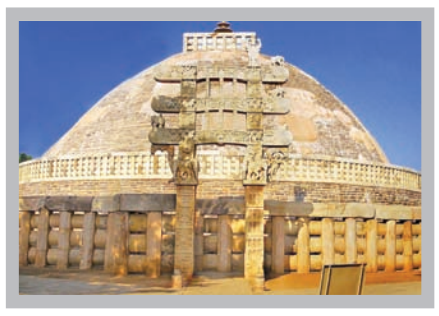

136 सीटों पर ऊंट किस करवट बैठेगा समझ आ रहा है। इस बार महाकौशल यानी जबलपुर संभाग की 38 सीटों को लेकर भाजपा-कांग्रेस दोनों ही आशान्वित हैं, लेकिन जनता का रुख और बागियों व भितरघाती अलग ही कर दिखाने पर आमादा हैं। शहरी क्षेत्रों में कांग्रेस-भाजपा दोनों ने ही उम्मीदें पाल रखीं हैं। यहां कांग्रेस 16 भाजपा 11 और 1 पर निर्दलीय जबकि 10 पर स्थिति अस्पष्ट है। इसी को लेकर तेज गुफ्तगू सुनाई दे रही है। सागर संभाग में 26 विधानसभा सीटें हैं। यहां पर भाजपा 16 कांग्रेस 8 तो सपा-बसपा 1-1 पर चुनौती देती दिख रही है। आप भी एक या दो सीटों पर कांग्रेस-भाजपा का समीकरण बिगाड़ सकती है। विन्ध्य अंचल जिसमें रीवा और शहडोल संभाग आते हैं यहां पर विधानसभा की 30 सीटें हैं, जिसमें 22 रीवा संभाग में तो 8 शहडोल संभाग में आती हैं। यदि रीवा पर नजर डालें तो वहां भाजपा 6 कांग्रेस 10 और 1 पर आप मजबूत दिख रही है, जबकि 5 पर कांटे की टक्कर झलक रही है। वहीं शहडोल संभाग में 3 पर कांग्रेस 2 पर भाजपा तो 3 में संघर्षपूर्ण नजारा बना हुआ है।

नेताओं के आरोप-प्रत्यारोप यहां तक कि कुछ सीटों पर निजी छींटाकशी के बयानों के चलते कभी-कभी लगा कि चुनाव हो रहे हैं, वरना बड़े और मझोले शहरों और जिला मुख्यालयों पर स्टार प्रचारकों की रैलियों के सिवाय कुछ नहीं दिखा। चुनाव के दौरान भाजपा के लिए प्रधानमंत्री मोदी, गृह मंत्री अमित शाह, जेपी नड्डा, उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, स्मृति ईरानी तो कांग्रेस में प्रियंका गांधी, राहुल गांधी, मल्लिकार्जुन खड़गे वहीं सपा में अखिलेश यादव बाहर से आए स्टार प्रचारकों में शुमार रहे। प्रदेश से भाजपा के लिए मुख्यमंत्री शिवराज सिंह, ज्योतिरादित्य सिंधिया तो कांग्रेस के लिए पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ, दिग्विजय सिंह, विवेक तन्खा सहित कई दिग्गजों ने पसीना बहाया। कांग्रेस का चुनावी संचालन प्रदेश के बाहर आए लोगों द्वारा संभालना जबरदस्त चर्चाओं में रहा।

यदि भाजपा और कांग्रेस के वायदों को देखें तो लगता है कि नया कुछ भी नहीं है। कई घोषणाएं वहीं रहीं जो नेता काफी पहले से कहते आ रहे हैं। निश्चित रूप से धार्मिक वायदों की झड़ी है। दोनों ही दलों ने नर्मदा नदी पर कई वायदे किए, लेकिन किसी भी दल को नहीं लगा कि उसी नर्मदा उद्गम जगह वाले संभाग की पहचान भी नर्मदा से हो? तेजी से शहरों व गांवों के बदलते नामों के दौर में काश शहडोल संभाग अमरकंटक संभाग हो जाता और अनूपपुर जिला नर्मदा उद्गम के चलते रेवांचल जिला, शहडोल ऐतिहासिक-पुरातात्विक महत्व के विराट नगर के नाम पर और उमरिया विश्व प्रसिद्ध बांधवगढ़ उद्यान के नाम पर बांधवगढ़ जिला होता तो कुछ और ही होता। दोनों ही दलों ने पत्रकारों के कल्याणार्थ कुछ घोषणाएं कीं। वहीं महिला संबल और कल्याण पर भी काफी कहा। ऐसे तमाम लुभावने वायदों के बीच युवाओं को यह जरूर अखर रहा है कि कृषि, किसान-कल्याण, बिजली बिल, तमाम परियोजनाओं, जनजातीय समाज के कल्याण, उत्तम शिक्षा,वरिष्ठ नागरिकों सहित कई मुद्दों पर भाजपा ने 96 पृष्ठों का घोषणा पत्र तो कांग्रेस ने 116 पृष्ठों का वचन पत्र जारी किया। युवाओं की प्रतियोगी परीक्षाओं में उनकी फीस माफी की कांग्रेस ने बात तो की, लेकिन नौकरी कब देंगे सही-सही दोनों दल साफ-साफ नहीं बता पाए। बस अब तो इंतजार है कि ईवीएम में तेज बीप के साथ रजिस्टर्ड वोट किसको सिंहासन तक पहुंचाता है या फिर कहीं 2018 सरीखे कशमकश वाली स्थिति तो नहीं बनेगी, क्योंकि पूरे मध्यप्रदेश को देखें करीब 50 सीटों पर कांटे का संघर्ष दिख रहा है जो कि निश्चित रूप से होगा और यही सत्ता का द्वार बनेगा। बस इंतजार है तो 3 दिसंबर को जब प्रदेश के भाग्य का फैसला होगा कि सत्ता का ताज किसके सर सजेगा।

स्मृति शेष

विवेक शुक्ला

ओबराय करते रहे भारत की छवि उजली

पृथ्वीराज सिंह ओबराय (पीआरएस) को आप भारत के होटल और टूरिज्म सेक्टर के शिखर पुरुष का आराम से दर्जा दे सकते हैं। उन्हें कॉरपोरेट संसार में बिकी ओबराय भी कहा जाता था। उनके मंगलवार को निधन से भारत ने एक इस तरह की शख्सियत को खो दिया है जिसने देश में कई विश्व स्तर के होटल खड़े किए। उन्होंने पिछले साल ही लगभग 93 साल की उम्र में ओबराय होटल ग्रुप के चेयरमेन पद को छोड़ा था। बेशक, भारत से बाहर विश्व स्तरीय ओबराय होटलों के चलते ही भारत की इमेज उजली हुई। बिक्की ओबराय बहुत आहत हुए थे जब उनके प्रिय ट्राइडेंट होटल को मुंबई में हुए 26/11 के हमलों में तबाह कर दिया गया था। वहां पर पाकिस्तानी आर्तकियों ने दर्जनों बेगुनाहों को मार डाला था। पीआरएस ओबराय दुखी थे पर वे दुनिया को संदेश देना चाहते थे कि वे और भारत राख के ढेर पर से भी उठना जानते हैं। तब उनकी सरपरस्ती में ओबराय ट्राइडेंट होटल का नए सिर से रेनोवेशन हुआ। उन्होंने दिल खोलकर पैसा लगाया। यानी उन्होंने इसे राख के ढेर से फिर खड़ा किया। अंधकार का साम्राज्य कितना बड़ा होता है कि सूर्य भी उसे दूर ना कर सके पर एक कोने में पड़ा हुआ छोटा सा दीपक अपने अंत समय तक अंधेरे से मुकाबला करता रहता है। बिक्की ओबराय ने अपने को फूलों और दीपक जैसा जाने-अनजाने बना लिया था। उनका जीवन बेदाग रहा। उनकी समूह पर कभी किसी तरह का आरोप नहीं लगा। बिक्की ओबराय भविष्य द्रष्टा थे। उन्हें ईश्वर ने यह शक्ति दी थी कि वे जान लें किस शहर या देश में इनवेस्ट करने से लाभ होगा।

उन्होंने गुरुग्राम में अपना होटल खोला। उसमें तगड़ा इनवेस्टमेंट किया। तब कुछ लोग दबी जुबान से कह रहे थे कि उनकी गुरुग्राम की इनवेस्टमेंट का लाभ नहीं होगा, पर वे सब गलत साबित हुए। पिछले 15 सालों में गुरुग्राम बदल गया है। अब यह आईटी हब बन गया है। यहां हजारों विदेशी रहते हैं और आते जाते हैं। इनका गुरुग्राम का होटल धड़ल्ले से चल रहा है। दरअसल शिखर पर बैठे शख्स से यही उम्मीद रहती है कि वह भविष्य की संभावनाओं को जान ले। वे यह साबित कर पाए कि आप ईमानदारी से बिजनेस की दुनिया में आगे बढ़ सकते हैं। यकीन मानिए कि आर्थिक उदारीकरण से पहले भारत के टाटा, गोदरेज, महिन्द्रा तथा ओबराय जैसे ब्रांड ही देश से बाहर जाने जाते थे। तब तक आईटी क्रांति और आईटी कंपनियों को आना था। भारत आने वाले विदेशी व्यापारी और पर्यटक मुंबई के ओबराय ट्राइडेंट तथा दिल्ली के ओबराय इंटरकांटिनेंटल पर जान निसार करते हैं। इन दोनों को बिक्की ओबेराय ने अपने हाथों से बनाया था। उनके बारे में कहा जाता है कि उन्होंने अपने पिता को इस बात के लिए तैयार किया था कि वे दिल्ली में भी एक होटल और खोलें। हालांकि तब ओबराय मेडिंस होटल चल रहा था। यह 1960 के दशक के शुरू की बातें हैं। तब दिल्ली में लक्जरी होटल के नाम पर अशोक होटल तथा इंपीरियल होटल थे। ओबराय पिता-पुत्र ने दिल्ली के होटल के लिए जमीन ली डॉ. जाकिर हुसैन रोड पर। बिक्की ओबराय ने इसके डिजाइन का काम सौंपा पीलू मोदी को। हालांकि उनके पास देश-दुनिया के तमाम आर्किटेक्ट अपने डिजाइन लेकर आए थे। पीलू मोदी प्रयोगधर्मी आर्किटेक्ट थे। उन्होंने इसका शानदार डिजाइन बनाया। यह 1965 में शुरू हुआ। भारत में लक्जरी होटल की जब भी बात होती है, तो ओबराय इंटरकांटिनेंटल होटल का नाम बड़े सम्मान के साथ लिया जाता है। पीआरएस ओबराय विश्व नागरिक होने के बाबजूद दिल से हिन्दुस्तानी थे। उनकी इस सोच के चलते सभी ओबराय होटलों में आने वाले गेस्ट का होटल स्टाफ नमस्कार करके ही स्वागत करते हैं। वे मानते थे कि नमस्कार ही भारत की पहचान है। जब कोई ओबराय होटल में आए तो उसे पता चले कि इस होटल का संबंध भारत से है। बिक्की ओबराय सबसे अलग थे। वे जानते थे कि अपने ब्रांड को कैसे बाजार में सम्मान दिलवाया जाता है। वे होटल इंडस्ट्री के भीष्म पितामह थे।

आनंदमय कोष की प्राप्ति

संकलित

दर्शन

अन्नमय कोष, प्राणमय कोष, मनोमय कोष, विज्ञानमय कोष के पश्चात प्रवेश होता है आनंदमय कोष में। अन्न से उत्पन्न यह शरीर त्वचा, मांस, चर्म और रुधिर युक्त है। यह आत्मा नहीं है। प्राणमय कोष भी आत्मा नहीं, क्योंकि प्राण वायु के रूप में शरीर में आता-जाता है। मनोमय कोष व्यक्ति को विषयों में आसक्त करता है और आत्मभाव में स्थित नहीं होने देता है, इसलिए यह भी आत्मा नहीं है। जागृति, स्वप्न, सुषुप्ति, सुख-दुख, जन्म-मरण, लाभ-हानि विज्ञानमय कोष में रहते हैं, इसलिए यह भी आत्मारूप आनंदमय कोष नहीं हो सकता है। श्रीरामचरितमानस में मात्र श्रीभरत इन कोषों का उपादान रूप में उपयोग करते हुए भी आनंदमय कोष हैं, जिनका राम से सर्वथा ऐक्य है। सारा संसार भरत की इस महत भूमिका के कारण ही दीपावली का प्रकाश पर्व मनाता है।दीपावली सनातन संस्कृति का सर्वाधिक महत्वपूर्ण त्योहार है। पूरा कार्तिक माह घरों तथा व्यापारिक संस्थानों की स्वच्छता व सजावट में लग जाता है। दीपावली के इस दृष्ट बाह्य और लौकिक रूप में कौन-सा आंतरिक तत्व छिपा है, जिसे जानने के पश्चात दीपावली हमें हमारे मूल वैदिक परंपराओं की नींव से जोड़ देती है। श्रीरामचरितमानस में भक्ति के सोपानों का वर्णन अरण्यकांड में है, जिसका विश्लेषण भगवान श्रीराम अपने अनुज लक्ष्मण की जिज्ञासा-समाधान में करते हैं। उसी तरह ज्ञान प्राप्ति के सोपानों का वर्णन मानस के अंतिम उत्तरकांड में काकभुशुंडि जी गरुड़ जी के समक्ष करते हैं।

शुभ कार्य तत्काल करो

संकलित

प्रेरणा

कोई स्त्री अपने पिता के यहाँ से लौटी थी, अपने पति से कह रही थी -'मेरा भाई विरक्त हो गया है। वह अगली दीवाली पर दीक्षा लेकर साधु होने वाला है। अभी से उसने तैयारी प्रारंभ कर दी है। वह अपनी संपत्ति की उचित व्यवस्था करने में लगा है।' पत्नी की बात सुनकर पति मुस्कुराया। स्त्री ने पूछा–'तुम हँसे क्यों ? हँसने की क्या बात थी।!' पति बोला-'और तो सब ठीक है, किंतु तुम्हारे भाई का वैराग्य मुझे बहुत अद्भुत लगा। वैराग्य हो गया है दीक्षा लेने की तिथि अभी निश्चित हुई है और वह संपत्ति की उचित व्यवस्था में लगा है।'! भौतिक संपत्ति में बुद्धि और इस उत्तम काम में भी इतनी दूर की योजना! इस प्रकार की तैयारी करके त्याग नहीं हुआ करता। त्याग तो सहज ही हुआ करता है। स्त्री को बुरा लगा वह बोली -'ऐसे ज्ञानी हो तो तुम्हीं क्यों कुछ कर नहीं दिखाते।' 'मैं तो तुम्हारी अनुमति की ही प्रतीक्षा में था।' पुरुष ने वस्त्र उतार दिए और एक धोती मात्र पहने घर से निकल पड़ा। स्त्री ने समझा कि यह परिहास है। थोड़ी देर में उसका पति लौट आवेगा, परंतु वह तो लौटने के लिए गया ही नहीं था। सच है वैराग्य के लिए कोई तिथि नहीं सोची जाती। वैराग्य के लिए मन, कर्म और अपने विचार अपने नियंत्रण में होना जरूरी है। तभी हम वैराग्य के बारे में कल्पना कर सकते हैं।

अंतर्मन

आज की पाती

अबुल कलाम आजाद के योगदान को नमन

प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी 11 नवंबर को राष्ट्रीय शिक्षा दिवस मनाया गया है। यह दिवस भारत के प्रथम शिक्षा मंत्री स्वर्गीय मौलाना अबुल कलाम आजाद जी के शिक्षा के क्षेत्र में दिए गए महत्वपूर्ण योगदान को समर्पित किया गया है। मौलाना अबुल कलाम आजाद जी का जन्म 11-11-1888 को सऊदी अरब के मक्का में हुआ था। सन 1890 में उनका परिवार वापस भारत के कलकत्ता में आकर बस गया और फिर उन्होंने कोलकाता के इस्लामिया विश्वविद्यालय से स्नातक की डिग्री हासिल की। कलाम जी एक प्रसिद्ध कवि, लेखक, पत्रकार और स्वतंत्रता सेनानी थे। वे महात्मा गांधी जी के विचारों से बहुत प्रभावित थे। वे 1923 में भारतीय कांग्रेस के सबसे कम उम्र के अध्यक्ष बने। – *योगेन्द्र साहू, धमतरी*

करंट अफेयर

हेली के साथ मौलिक वैचारिक मतभेद हैं

भारतीय-अमेरिकी बॉयोटेक उद्यमी एवं अमेरिका के राष्ट्रपति पद के चुनाव में रिपब्लिकन उम्मीदवार बनने के दावेदार विवेक रामास्वामी ने कहा है कि उनके, चुनाव में पार्टी उम्मीदवार बनने की एक अन्य दावेदार निकी हेली के साथ ''मौलिक वैचारिक मतभेद'' हैं और वह पार्टी की एक पुरानी पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करती हैं। रिपब्लिकन पार्टी के प्राइमरी चुनाव की तीन बहस में से दो में हेली और रामास्वामी सार्वजनिक रूप से आमने-सामने आए हैं। रामास्वामी (38) ने 'फॉक्स न्यूज' से सोमवार को साक्षात्कार के दौरान दक्षिण कैरोलाइना की पूर्व गवर्नर हेली (51) के बारे में कहा, 'मुझे लगता है कि (हमारे बीच) एक मौलिक वैचारिक अंतर है।

ऑफ बीट

फ्रंटोटेम्पोरल डिमेंशिया एक दुर्लभ बीमारी

फ्रंटोटेम्पोरल डिमेंशिया एक दुर्लभ बीमारी है – ऐसा माना जाता है कि डिमेंशिया के हर 20 मामलों में से केवल एक ही ऐसा होता है। लक्षण आमतौर पर किसी व्यक्ति में 50 वर्ष की आयु के अंत में विकसित होते हैं, जो सबसे पहले उनके व्यवहार, व्यक्तित्व और भाषा क्षमता को प्रभावित करते हैं। गर्भावस्था के दौरान, जैसे भ्रूण का मस्तिष्क गर्भ के भीतर बढ़ता है, खोपड़ी के भीतर विस्तार करते हुए अपनी विशिष्ट तहें विकसित करता है। मस्तिष्क की ये तहें हमारे बाद के संज्ञानात्मक कार्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। भ्रूण के विकास के आरंभ में बनने वाली तहें प्रत्येक व्यक्ति के मस्तिष्क के दोनों किनारों पर पाई जाती हैं।

ट्रेंड

बच्चों की सुरक्षा हमारा कर्तव्य

हमारा हमेशा से मानना रहा है कि बच्चे देश का भविष्य होते हैं। उनकी सुरक्षा हम सबका कर्तव्य है। आज के बच्चों के पास तकनीक, ढेर सारी जानकारी और ज्ञान है, वे देश-विदेश में अपनी प्रतिभा दिखा रहे हैं और हम सभी की जिम्मेदारी है कि हम अपने बच्चों की प्रतिभा को सही दिशा दें।

-द्रौपदी मुर्मू, राष्ट्रपति

नेहरू को श्रद्धांजलि

हमारे पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की जयंती पर उन्हें श्रद्धांजलि। नेहरू के नाम भारत के प्रधानमंत्री के तौर पर सबसे लंबे समय तक काम करने का रिकॉर्ड दर्ज है। देश निर्माण में उनका अहम योगदान है। -नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

बचपन बचाने की शपथ लें

बचपन को बचाने के लिए राजनीतिक इच्छाशक्ति जरूरी है। आप हर चुनाव में अपने उम्मीदवारों से मांग करें कि वे बच्चों की अच्छी पढ़ाई, सुरक्षा और स्वास्थ्य को सुनिश्चित करने की शपथ लें। इससे उनमें जिम्मेवारी का एहसास कराया जा सकता है।

-कैलाश सत्यार्थी, नोबेल विजेता

मरने के लिए छोड़ा

कितना निंदनीय है। गाजा में 10,000 से अधिक लोग मारे गए, जिनमें से आधे बच्चे हैं। डब्ल्यूएचओ के अनुसार हर दस मिनट में एक बच्चे की मौत हो रही है, और अब छोटे बच्चों को ऑक्सीजन की कमी के कारण उनके इनक्यूबेटर से निकालना पड़ा और उन्हें मरने के लिए छोड़ दिया गया।

-प्रियंका गांधी, कांग्रेस महासचिव

संक्षेप

अयोध्या में सड़क हादसा में 2 लोगों की मौत

स्कॉर्पियो ने बाइक सवार को मारी टक्कर; पूर्व प्रधान की मौत

अयोध्या, अयोध्या कोतवाली क्षेत्र स्थित एनएच-27 स्थित सरयू पुल पर मंगलवार को भीषण सड़क हादसा हुआ। हादसे में दो लोगों की मौत हो गई। स्कॉर्पियो ने बाइक सवार दो लोगों को पीछे से टक्कर मार दिया। घटना के बाद पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। वहीं स्कॉर्पियों चालक कार छोड़कर फरार हो गया है। पुलिस आरोपियों की तलाश कर रही है। एनएच -27 पर लखनऊ से गोरखपुर की तरफ जा रही तेज रफ्तार स्कॉर्पियो ने बाइक सवार को पीछे से टक्कर मार दी। घटना सरयू पुल के मध्य की है। टक्कर लगने से बाइक सवार दोनों लोग सड़क पर गिर गए। जनपद बस्ती के परशुरामपुर थाना क्षेत्र स्थित गांव इमिलिया निवासी गांव के पूर्व प्रधान 56 वर्षीय देवी प्रसाद उर्फ ददन पुत्र राम पियारे अपने गांव के ही 52 वर्षीय पंचम पुत्र राम अचल के साथ मंगलवार को अयोध्या जिले में भर्ती अपने रिश्तेदार का कुशलक्षेम जानने बाइक से आये थे। बाइक सवार दोनों लोग अयोध्या से परसरामपुर घर जा रहे थे। टक्कर लगने से दोनों गंभीर रूप से घायल हो गए। जिन्हें समाज सेवी ऋतेश दास पुलिस की सहायता से श्री राम अस्पताल में इलाज के लिए भर्ती कराया। जहां डाक्टरों ने दोनों को मृत घाषित कर दिया।

अयोध्या में तेज रफ्तार बाइक ने साइकिल में मारी टक्कर

इलाज के दौरान अधेड़ की मौत, सामान लेने जा रहे थे बाजार

मिल्कीपुर, अयोध्या में खंडासा थाना क्षेत्र अंतर्गत कंजी गांव निवासी अधेड़ को तेज रफ्तार बाइक ने जोरदार टक्कर मार दी। जिसके चलते वह गंभीर रूप से घायल हो गया। ग्रामीणों ने घायल अधेड़ को इलाज के लिए जिला अस्पताल में भर्ती कराया जहां इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई है। प्राप्त जानकारी के मुताबिक, खंडासा थाना क्षेत्र के कंजी गांव निवासी अधेड़ बलराम यादव पुत्र राममिलन यादव साइकिल से सामान की खरीदारी करने कुमारगंज बाजार जा रहा था। बवां कुमारगंज संपर्क मार्ग पर तेज रफ्तार मोटरसाइकिल सवार युवक ने अधेड़ को इतना जबरदस्त टक्कर मारा कि अधेड गंभीर रूप से घायल हो गया। मौके पर पहुंचे स्थानीय लोगों ने उपचार के लिए घायल अधेड़ को सौ शैय्या अस्पताल कुमारगंज पहुंचाया, जहां पर डॉक्टरों ने हालत गंभीर देख प्राथमिक उपचार कर जिला चिकित्सालय भेज दिया। जिला अस्पताल में अधेड़ की इलाज के दौरान मौत हो गई। ग्रामीण में बताया कि बलराम यादव सामान की खरीदारी करने के लिए कुमारगंज बाजार जा रहे थे। कुमारगंज बाजार पहुंचने वाले ही थे कि तेज रफ्तार मोटरसाइकिल सवार ने इतना जबरदस्त टक्कर मार दिया कि वे गंभीर रूप से घायल हो गए। मृतक बलराम के दो बेटियां व एक बेटा है।

निकरा परियोजना के अंतर्गत किसानो को बांटे गये गेहूं के बीज

अमन लेखनी समाचार

बहराइच। आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के अंतर्गत कृषि विज्ञान केंद्र बहराइच प्रथम पर संचालित निकरा परियोजना के अन्तर्गत बाढ़ग्रस्त गांवो के चयनित कृषकों को फसल गेहूं प्रजाति डी. बी. डब्लू. 187 का बीज अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के अंतर्गत वितरण किया गया। केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रभारी अधिकारी डॉ. पी. के. सिंह ने बताया कि गेहूं की फसल के लिए लाइन से बुवाई करने पर सामान्य दशा में 100 किग्रा तथा छिटकवा विधि द्वारा बुवाई कि दशा में 125 किग्रा की दर से प्रयोग करना चाहिए, साथ ही डा.सिंह ने बताया कि गेहूं कि बुवाई का उपयुक्त समय 15 - 30 नवंबर के मध्य तथा विलंब की दशा में 25 दिसंबर तक बुवाई किया जा सकता है। परियोजना के सहायक समन्वयक डॉ. नीरज कुमार सिंह ने बताया कि गेहूं की बुवाई जीरो टिलेज ड्रिल विधि से बिना जुताई के की जा सकती है जिससे अधिक बचत की जा सकती है। साथ ही अगर किसान धान की पराली को मिट्टी में मिला के गेहूं की बुवाई करना चाहता है तो वो बायो डीकंपोजर अथवा 20 से 25 किलो प्रति एकड़ की दर से यूरिया का छिड़काव के मिला लेना चाहिए जिससे कम समय में खेत अगली बुवाई के लिए तैयार हो जाता है। बीज वैज्ञानिक सुनील कुमार ने बताया कि गेहूं की बुवाई करने से पहले जमाव प्रतिशत अवश्य देख ले। और बीज को अनावृत्त कंडुवा या करनाल बंट आदि रोगों से बचाव के लिए कारबेंडाजिम या कार्बोक्सिन रसायन 2.5 ग्राम मात्रा प्रति किग्रा बीज की दर से उपचारित करना चाहिए। केंद्र के प्रसार वैज्ञानिक डॉ. अरुण कुमार राजभर ने बताया कि गेहूं की समय से बुवाई के लिए डी. बी. डब्लू.187 करन बंदना, डी.बी. डब्लू. 222, 252,17, एच डी 3226, एच डी 3086, और बिलंब से बुवाई के लिए नरेन्द्र 2036, 1076 के. 9162, 9423, डी बी डब्लू 14,16 और 590 प्रजातियों का चयन करना चाहिए। यंग प्रोफेसनल कुशाग्र सिंह ने सभी कृषकों का रजिस्ट्रेशन किया जिसमे मुख्यरूप से लखन, अवधराम, मनीषा, संगीता, संपता, इन्दर व अन्य किसान मौजूद रहे।

अमेठी में दो-पक्षों में गोली कांड व पथराव

- दोनों पक्षों से 10 नामजद आरोपी गिरफ्तार, लाइसेंसी रायफल, तमंचा व जिंदा कारतूस बरामद

अमन लेखनी समाचार

अमेठी जिला, अमेठी के दो दिन पहले पुरानी रंजिश में हुए दो पक्षों में गोलीकांड और पथराव के मामले में पुलिस ने बड़ी कार्रवाई करते हुए दोनों पक्षों से 10 नामजद आरोपियों को गिरफ्तार किया। आरोपियों के पास से लाइसेंसी रायफल और एक तमंचा समेत बड़ी मात्रा में जिन्दा कारतूस बरामद हुआ है। पुलिस ने सभी को जेल भेज दिया है। दरअसल ये पूरा मामला मुंशीगज थाना क्षेत्र के पश्चिम दुआरा गांव का है। जहां दो दिन पहले मृतक संतोष सिंह और उदय प्रताप सिंह के पक्ष में जमकर गोलियां चली और पथराव हो गया। विवाद में दोनों पक्षों से कई लोग घायल हो गए। जिनका अलग-अलग अस्पतालों में इलाज चल रहा है। मामले में पुलिस ने दोनों पक्षों की तहरीर पर कई गंभीर धाराओं में मुकदमा दर्ज किया। देर रात पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ बड़ा अभियान चलाया। दोनों पक्षों से 10 नामजद अभियुक्तों को गिरफ्तार कर लिया। गांव के रहने वाले रिटायर्ड फौजी मृतक संतोष सिंह और उदय प्रताप सिंह में पुरानी रंजिश थी।

जिसमें दो साल पहले संतोष की हत्या कर दी गई थी। जिसके बाद दोनों पक्षों लगातार तनाव बना रहता है। मुंशीगज एसएचओ अखंड देव मिश्र ने कहा कि एक पक्ष से सूरज सिंह, बलवंत सिंह, अभिमन्यु सिंह, अभिषेक सिंह और अथर्व विक्रम सिंह को गिरफ्तार किया गया। जबकि दूसरे पक्ष से उदय प्रताप सिंह, गुरु बचन सिंग, अभय प्रताप सिंह, अनुराग प्रताप सिंह और एक प्राइवेट गनर ओम बाबू द्विवेदी को गिरफ्तार किया गया है। पश्चिम दुआरा गांव के रहने वाले रिटायर्ड फौजी की माल वाहक गाड़ी से कुचल कर दो साल पहले हत्या कर दी गई थी। हत्या के बाद मृतक की पत्नी मधुलिका को दो सरकारी गनर भी मिले थे। बताया जा रहा जब दोनों पक्षों में विवाद हुआ, तो दोनों सरकारी गनर नदारद थे। जिसे लेकर एसपी ने दोनों सिपाहियों को लाइन हाजिर कर दिया।

दिनदहाड़े महिलाओं की पिटाई के मामले में क्रॉस केस दर्ज

- सुलतानपुर पुलिस ने 10 पर की कार्रवाई, मारपीट का वीडियो आया था सामने

अमन लेखनी समाचार

सुलतानपुर, सुलतानपुर में महिलाओं पर दिनदहाड़े सड़क पर लाठी-डंडे से हमले व बाल खींचकर पीटने के मामले में पुलिस ने कार्रवाई की है। पीड़िता की तहरीर पर पुलिस ने केस फाइल किया है। वहीं अगले पक्ष ने भी पुलिस को शिकायती पत्र दिया, जिस पर मुकदमा दर्ज किया गया है। इटकौली निवासी पीड़िता रूबीना का आरोप था कि वो सोमवार दोपहर घर के सामने खड़ी थी, उसी समय गांव के असलम पुत्र शफाअत उल्ला, उसका बेटा सद्दाम, उसकी पत्नी नाजिया और उसका भाई सोनू उर्फ असलम लाठी-डंडों से लैस होकर वहां आ धमके। इन लोगों ने मुझे गालियां दीं। मैंने विरोध किया तो ये सब मुझे मारने लगे तो मैंने मदद की गुहार लगाई। जिस पर पड़ोस की रेशमा पुत्री अहमद उल्ला बचाव में पहुंची। इन दबंगों ने रेशमा को भी जमकर पीटा। पिटाई में मुझे व रेशमा को काफी चोटें आई हैं। वहीं दूसरे पक्ष ने भी थाने में तहरीर देकर कार्रवाई की मांग की है। कहा कि हमें अधमरा कर मौके से जान से मारने की धमकी देते हुए दूसरा पक्ष फरार हो गया। मैंने थाने पर तहरीर दी है। थानाध्यक्ष आरबी सुमन ने बताया कि रुबीना की तहरीर पर असलम, सहाना, नाजिया, सोनू उर्फ अकरम व तंजीला बेगम की तहरीर पर शमा, रेशमा, रुबीना, कैफ, कुर्बान सैफ, चांद पर केस दर्ज किया गया है। पुलिस जांच में जुटी है।

तीन दिवसीय राम कथा करने पहुंचेंगे शान्तनु महाराज

- कलान में बना भव्य पंडाल, क्यूआर कोड से कार्यक्रम स्थल तक पहुंच सकेंगे लोग

अमन लेखनी समाचार

सुलतानपुर, सुल्तानपुर में श्री विश्वनाथ ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशन कलान अखंडनगर में तीन दिवसीय राम कथा का आयोजन किया गया है। जिसमें कथा वाचक शान्तनु महाराज कथा सुनाएंगे। 16 नवंबर से 18 नवंबर तक कथा आयोजित होगी। आयोजक डॉ वेद प्रकाश सिंह ने जानकारी देते हुए बताया कि प्रतिदिन शाम 3 बजे से 6 बजे तक कथा सुनाई जाएगी। उन्होंने बताया कि अयोध्या नगरी में बहुप्रतीक्षित श्रीराम जन्मभूमि मंदिर का निर्माण होने के अवसर पर हो रहा ये आयोजन न केवल एक कथा की प्रस्तुति है,

बल्कि दिव्यता के साथ मयार्दा पुरुषोत्तम के आदर्शों को अपने जीवन में स्थापित करने का सुअवसर है। इसलिए हम सब मिलकर इस अविस्मरणीय पल के भागीदार बने और श्रीराम कथा की अमृत वर्षा से अपने जीवन को अभिभूत करें। उन्होंने ये भी बताया कि इस कार्यक्रम के संरक्षण मंडल में सांसद मेनका गांधी, राज्यमंत्री स्वतंत्र प्रभार गिरीश चंद्र यादव, जिला पंचायत अध्यक्ष ऊषा सिंह, जिले के विधायक विनोद सिंह, राज प्रसाद उपाध्याय, राजेश गौतम, एमएलसी शैलेंद्र प्रताप सिंह, नपा अध्यक्ष प्रवीण अग्रवाल, जौनपुर जिले के विधायक रमेश सिंह, रमेश चंद्र मिश्रा, जौनपुर के एमएलसी बृजेश सिंह, फूलपुर के एमएलसी राम सूरत राजभर आदि शामिल हैं।

जान जोखिम में डालकर ग्रामीणों ने जानवरों को पकड़ा

रस्सी लगाकर पकड़े गए मवेशी, एडीओ पर छुट्टा पशुओं को गौशाला नहीं भिजवाने का आरोप

अमन लेखनी समाचार

सुलतानपुर, सुल्तानपुर में दुबेपुर ब्लॉक के पकड़ी गांव में छुट्टा जानवरों से परेशान ग्रामीणों ने दर्जनों जानवरों को रस्सी से बांधकर पकड़ा। जानवरों को गौशाला भेजने के लिए कई दिनों से वे सभी एडीओ पंचायत से मिन्नतें कर रहे थे। सुनवाई न होने पर ग्रामीणों ने जान जोखिम में डालकर जानवरों को पकड़ा। इसका वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। दरअसल पकड़ी गांव के ग्रामीणों का आरोप है की यहां बूढ़ी गायों को पशु पालकों के खूंटे से लेकर प्रति जानवर एक हजार रुपए लेकर एडीओ दिनेश सिंह गौशाला भिजवा रहे हैं। जबकि खेतों में पड़े छुट्टा मवेशी पकड़कर खुद ग्रामीण जब उनको फोन करके गौशाला भेजने की गुजारिश कर रहे हैं तो उनकी कोई सुनवाई नहीं की गई। ग्रामीणों ने कई छुट्टा जानवरों को एक जगह पकड़कर बांध दिया और धनतेरस से लगातार ब्लॉक के एडीओ पंचायत से इनको गौशाला भेजवाने के लिए निवेदन किया। फिर भी उनके ऊपर कोई फर्क नहीं पड़ रहा। ग्रामीणों का आरोप है कि इन बेजुबान जानवरों के पीछे कोई कमीशन नहीं देने वाला इसलिए रोड के किनारे बंधक बने बेबस मवेशी संरक्षण की आस लगाए हैं। यहां के किसान नेता भी ये आरोप लगा रहे हैं। किसानों का ये भी आरोप है कि इन जानवरों के आतंक से फसल बर्बाद हो रही है।

अयोध्या में मनाया गया बंदी छोड़ दिवस

- सिख समाज के लोगों ने शांति-भाईचारा का दिया संदेश

अमन लेखनी समाचार

अयोध्या, अयोध्या में गुरुद्वारा नजरबाग में मंगलवार को बंदी छोड़ दिवस मनाया गया। इस उपलक्ष्य में सालाना महान गुरमत समागम का आयोजन हर्षोल्लास के साथ किया गया। सिख समाज के लोगों ने शांति-भाईचारा का संदेश देते हुए कहा कि हम सब एक ही ईश्वर की संतान हैं। नानकसर सींघड़ा करनाल से आए संत बाबा अमरजीत सिंह भोला, सिमरन कौर दिल्ली वाले, परमजीत सिंह नौतनवा, सतबीर सिंह लखनऊ ने कथा और कीर्तन द्वार संगतों, श्रद्धालुओं को गुरु चरणों से जोड़ा। इसलिए समाज में ऊंच-नीच का भेदभाव मिटाकर सबको गले लगाएं। साथ ही हर गरीब-असहाय की मदद करें। श्रद्धालुओं ने बड़े चाव के साथ लंगर प्रसाद ग्रहण किया। गुरूनानक गोबिंद धाम गुरूद्वारा नजरबाग के जत्थेदार बाबा महेंद्र सिंह ने बताया कि दीपावली पर्व पर सिक्खों के छठवें गुरु हरगोबिंद साहिब जी का ग्वालियर किले से अमृतसर आगमन हुआ था। वह ग्वालियर के किले से 52 राजाओं को जहांगीर की कैद से मुक्त कराकर हरमंदिर साहिब (स्वर्ण मंदिर) पहुंचे थे। उस वक्त स्वर्ण मंदिर व पूरे अमृतसर शहर को दीयों की रोशनी से सजाया गया था। इस दिन को दाता बंदी छोड़ दिवस के रूप में मनाया जाता है अर्थात बंधनों से मुक्त कराने वाले दाता का खास दिन। अयोध्या में हर वर्ष दीपावली के दूसरे दिन महान गुरमत समागम का आयोजन किया जाता है। सेवादार नवनीत सिंह ने बताया कि गुरुद्वारा नजरबाग बहुत ही पौराणिक स्थल है जो कि सिख धर्म के प्रथम गुरु गुरु नानक देव और दसवें गुरु गोविंद सिंह की चरण रज प्राप्त है।

सुल्तानपुर में निकली भव्य कलश यात्रा

श्रीमद् भागवत कथा का शुभारंभ, ब्लॉक प्रमुख भी हुए शामिल, भक्तों ने किया नृत्य

अमन लेखनी समाचार

सुलतानपुर, सुलतानपुर में भव्य एवं पारंपरिक परिवेश में सिद्धधाम हनुमानगढ़ी मंदिर तिरहुंत बाजार में श्रीमद् भागवत कथा का कलश यात्रा के साथ शुभारंभ हुआ। इसमें ब्लॉक प्रमुख शिवकुमार सिंह श्रद्धालुओं के साथ शामिल हुए। श्रीधाम वृंदावन, मथुरा से पधारी कथावाचिका पूजा शास्त्री दीदी के नेतृत्व में बाबा दण्डेश्वर धाम मंदिर के गोमती तट से कथा आयोजन स्थल तक पवित्र जलस्त्रोत से जल भरने के साथ शुरू हुई कलश यात्रा में बड़ी संख्या में महिला श्रद्धालु शामिल रहीं। पवित्र जलस्त्रोत से कलश को भर कर लाने के बाद कथा आयोजन स्थल पर धार्मिक विधि एवं मंत्रोच्चरण के साथ स्थापित किया गया। आरती के साथ शुरू किए गए श्रीमद् भागवत कथा में पूजा शास्त्री ने उपस्थित श्रद्धालुओं को सर्वप्रथम इसकी महिमा से अवगत कराया।

उन्होंने बताया कि विश्व में सभी कथाओं में ये श्रेष्ठ मानी गई है। जिस स्थान पर इसका आयोजन होता है वो तीर्थ स्थल कहलाता है। इसको सुनने एवं आयोजन कराने का सौभाग्य भी प्रभु प्रेमियों को ही मिलता है। ऐसे में अगर कोई दूसरा अन्य भी इसे गलती से भी श्रवण कर लेता है, तो भी वो कई पापों से मुक्ति पा लेता है।

इसलिए सात दिन तक चलने वाली इस पवित्र कथा को श्रवण करके अपने जीवन को सुधारने का मौका हाथ से नहीं जाने देना चाहिए। इस मौके पर कुंवर सूर्य प्रताप सिंह, मोहित अग्रहरि, विमल सिंह, शुभम, शिवम, संतोष राजन, शानू, अरुण, आनन्द वेदप्रकाश, दुर्गेश अग्रहरि, सुनील वर्मा सहित बड़ी संख्या में महिलाएं पुरुष-बच्चों सहित मौजूद रहे।

बांदा में पराली जलाने पर डीएम ने लगाया जुर्माना

- 22 किसानों पर की गई कार्रवाई, जागरूक करने के बाद भी नहीं मान रहे किसान

अमन लेखनी समाचार

बांदा, बांदा जनपद में पराली जलाने को लेकर प्रशासन ने किसानों पर जुमार्ना लगाया है। जिलाधिकारी दुर्गा शक्ति नागपाल के निर्देश पर सख्ती की गई है। 22 किसानों पर जुमार्ना लगा दिया गया है। किसानों में इस कार्रवाई से हड़कंप का माहौल है। पराली जलाने को लेकर सरकार सख्त है। इसको लेकर कृषि विभाग बांदा पर्यावरण सुरक्षा को लगातार किसानों को जागरूक करने का दावा करता है, लेकिन फिर भी ऐसी घटनाएं सामने आई हैं। सैटेलाइट से निगरानी में करीब दो दर्जन से ज्यादा किसानों में पराली जलाने की घटनाएं सामने आई हैं। वहीं जांच में अतर्रा, बबेरू और बांदा सहित में किसानों ने पराली जलाई हैं। इसमें करीब 22 किसानों से एक लाख 32 हजार 500 रुपए का जुमार्ना लगाया गया है। बाकी शेष किसानों की जांच के बाद कार्रवाई करने की बात कही गई है। जिन किसानों पर जुमार्ना हुआ है उनमें कई पर पंद्रह हजार ,पांच हजार, ढाई हजार के अलावा पांच सौ रुपए दंड लगाया हुआ है। खेत में पराली जलाने से वायु प्रदूषण के साथ-साथ जमीन को भी नुकसान पहुंचता है।

अम्बेडकरनगर में ट्रैक्टर से टकराई बाइक, युवक की मौत

मामा के साथ घूमने निकला था, मामा भी हादसे में हुए घायल, अस्पताल में भर्ती

अमन लेखनी समाचार

अम्बेडकरनगर, अम्बेडकरनगर में शुकुलपट्टी बाजार के पास देर रात ट्रैक्टर की चपेट में आने से एक युवक की मौत हो गई। बताया जाता है कि मंगलवार देर रात युवक अपने मामा के साथ कहीं घूमने निकला था। वहीं बाइक पर सवार मामा गम्भीर रूप से घायल हो गए। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। घायल को अस्पताल भेजा गया है। अयोध्या जिले के महाराजगंज थाना क्षेत्र के दलपतपुर निवासी 20 वर्षीय अंशुल पुत्र विजय कुमार अपने मामा के घर जयसिंहपुर दानदूपुर थाना महरुआ आया हुआ था। मंगलवार की देर रात वह अपने मामा अरुण के साथ बाइक से कहीं जा रहा था। वह अन्नावा पहितीपुर मार्ग पर पहुंचा था कि ट्रैक्टर की चपेट में आ गया। जिससे अंशुल की घटनास्थल पर मौत हो गई। सूचना पर पहुंची पुलिस अंशुल को लेकर जिला अस्पताल पहुंची, जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। वहीं बाइक पर बैठे मामा को गंभीर चोट आई है

कांग्रेस ने मनाई पंडित जवाहरलाल नेहरू की जयंती

- राजेंद्र सिंह बोले; पंडित नेहरू कुशल राजनीतिज्ञ के साथ एक समृद्ध चिंतक और साहित्यकार भी थे

अमन लेखनी समाचार

अयोध्या, देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू की जयंती पर कांग्रेस जनों ने कांग्रेस कार्यालय कमला नेहरू भवन पर उनके चित्र पर माल्यार्पण कर श्रद्धा सुमन अर्पित किया गया इस अवसर पर पार्टी के वरिष्ठ नेता राजेंद्र प्रताप सिंह ने कहा कि पंडित नेहरू कुशल राजनीतिज्ञ के साथ-साथ एक समृद्ध चिंतक और साहित्यकार भी थे। कोमल हृदय वाले जवाहरलाल नेहरू बच्चों से विशेष लगाव रखते थे। इस अवसर पर आयोजित गोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए महानगर अध्यक्ष वेद सिंह कमल ने कहा पंडित जवाहरलाल नेहरू ने आजादी के बाद 17 वर्षों तक प्रधानमंत्री के रूप में भारतवर्ष की सेवा की और आधुनिक भारत की नींव रखी। पंडित जवाहर लाल नेहरू एक भारतीय स्वतंत्रता सेनानी और भारत के पहले प्रधान मंत्री थे। आजादी से पहले और आजादी के बाद भी उन्हें भारतीय राजनीति में एक केंद्रीय योद्धा माना जाता था। गुट निरपेक्षता की नीति और पंचशील के सिद्धांतों को अपनाया- सुनील कृष्ण गौतम जिला प्रवक्ता सुनील कृष्ण गौतम ने कहा पंडित नेहरू ने दूरदर्शी राजनेता के रूप में आजादी के बाद के भारत की राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक विकास की नींव रखी। उन्होंने गुट निरपेक्षता की नीति और पंचशील के सिद्धांतों के साथ विश्व समुदाय में भारत की भूमिका के संबंध में एक स्पष्ट दिशा भी प्रदान की।

संक्षेप

मनबढो ने मकान बंटवारे के विवाद में मां - बेटा को पीटा घायल, चार के खिलाफ मुकदमा

अमन लेखनी समाचार

गोरखपुर। सहजनवां तहसील अंतर्गत हरपुर बुदहट थाना क्षेत्र स्थित के सोनबरसा बाबू पुलिस चौकी अन्तर्गत ग्राम पंचायत तामा निवासिनी चनावती देवी पत्नी जगेश्वर ने थाना पुलिस को तहरीर देकर मकान बंटवारे के विवाद में पट्टीदार पर मां और बेटा को मारपीट कर घायल करने का आरोप लगाते हुए मुकदमा दर्ज कराया है।थाना क्षेत्र के सोनबरसा बाबू पुलिस चौकी अन्तर्गत ग्राम पंचायत तामा निवासिनी चनावती देवी पत्नी जगेश्वर ने थाना पुलिस को तहरीर देकर बताया कि 16 नवंबर को दिन में 11 बजे के करीब राममचल से मकान का बंटवारा हो रहा था, उसी समय राममचल अपने परिवार के साथ गाली गुप्ता देते हुए मुझे मारने लगे, बीच-बचाव करने आए हमारे बेटे मनीष को भी मारपीट कर घायल कर ब्लेड से हमारे हाथ पर वार कर दिए जिससे हमारे हाथ से काफी खून गिरने लगा , सूचना पर पहुंची पुलिस ने अस्पताल भिजवाया। इस संबंध में थानाध्यक्ष महेन्द्र मिश्र ने बताया कि महिला की तहरीर पर सूरज, राममचल, लालती और संजू के खिलाफ 323,504,506,324 आईपीसी मुकदमा दर्ज कर मामले की जांच की जा रही है।

पत्रकार के अंतिम संस्कार में महापौर सम्मिलित होकर पत्रकारों का बढ़ाया मान

अमन लेखनी समाचार

गोरखपुर। विधि का विधान कोई टाल नहीं सकता जो धरती पर आया है उसे एक दिन जाना ही होता है किसी की मृत्यु समय से होती है किसी का आकस्मिक जो बड़ा ही दुखदाई होता है आज हम लोगों के बीच रहने वाले पिछले तीन दशक से विभिन्न समाचार पत्रों दैनिक जागरण, राष्ट्रीय सहारा, दैनिक आज, जनसंदेश टाइम्स अहित अन्य अखबारों में बतौर वरिष्ठ संपादक का कार्य देख चुके श्री रत्नेश श्रीवास्तव का 16 नवंबर को निधन हो गया जिनका अंतिम संस्कार आज राजघाट के राप्ती नदी के मुक्तिधाम पर विधि विधान से इकलौते पुत्र अरुणेश श्रीवास्तव ने मुखाग्नि दिया जिनके आत्मा की शांति के लिए राजघाट के मुक्ति धाम पर दो मिनट का मौन रखकर ईश्वर से प्रार्थना किया गया कि भगवान उनके आत्मा को शांति प्रदान करें और अपने चरणों में स्थान दें। रत्नेश श्रीवास्तव जी मील का पत्थर थे और यही कारण है कि उनकी मौत से हर कलमकार को झकझोर कर रख दिया है वह बड़े छोटे में कोई भेदभाव नहीं करते थे। इस मौके पर महापौर डॉ मंगलेश श्रीवास्तव गोरखपुर जर्नलिस्ट प्रेस क्लब कार्यकारिणी सदस्य दुर्गेश यादव नीरज श्रीवास्तव (एवीपी)विनीत पांडेय पंकज कुमार सहित बड़ी संख्या में पत्रकार व शुभचिंतक रिश्तेदार राजघाट के राप्ती नदी के मुक्तिधाम पर अंतिम संस्कार में सम्मिलित हुए।

जाम के झाम से निपटने के लिए एडीजी ने संभाला मोर्चा

अमन लेखनी समाचार

गोरखपुर। अपर पुलिस महानिदेशक गोरखपुर जोन अखिल कुमार द्वारा आज गोरखपुर के आयुक्त कार्यालय के सभागार में आयुक्त गोरखपुर मण्डल, जिलाधिकारी गोरखपुर एवं नगर आयुक्त गोरखपुर के साथ शहर की ट्रैफिक व्यवस्था में सुधार करने हेतु तथा आम जनमानस को जाम के कारण होने वाली परेशानियों से छुटकारा दिलाने हेतु कार्यवाही किये जाने के सम्बन्ध में गोष्ठी की गयी। उक्त गोष्ठी में शहर की यातायात व्यवस्था को चुस्त-दुरुस्त करने तथा ट्रैफिक जाम की समस्या से शहर वासियों को निजात दिलाने के सम्बन्ध में निम्नलिखित कार्यवाही किये जाने हेतु निर्देश जारी किये गए। प्रयागराज, आजमगढ़, वाराणसी एवं मऊ जनपदों के लिए रोडवेज बसें अभी तक आयुक्त कार्यालय के सामने स्थित कचहरी बस स्टैंड से संचालित होती आ रही हैं। अब उपरोक्त जनपदों की रोडवेज बसों को नौसढ़ बस अड्डे से संचालित कराए जाने हेतु निर्देशित किया गया है धर्मशाला चौराहे के आगे गोरखनाथ मंदिर जाने वाली सड़क के किनारे एक खाली पड़ी जमीन पूर्व में चिह्नित की गयी थी उक्त जमीन पर औपचारिकताएं पूरी करते हुए ऑटो स्टैण्ड व्यवस्थापित करने की कार्यवाही किए जाने हेतु निर्देशित किया गया। इससे धर्मशाला चौराहे के आसपास ऑटो रिक्शा की वजह से लगने वाले जाम की समस्या से छुटकारा मिल सकेगा विश्वविद्यालय चौराहे के पास पूर्व में जो प्राइवेट बस स्टैंड संचालित हो रहा था उसे पहले ही हटाकर शहर के बाहर व्यवस्थापित कर दिया गया है और उस खाली पड़ी जमीन पर नए सिरे से ऑटो स्टैंड व्यवस्थापित कराए जाने की कार्यवाही हेतु निर्देश जारी किया गया मोहद्दीपुर चौराहे पर अव्यवस्थित रूप से खड़े होने वाले ऑटो रिक्शा को हटाने हेतु निर्देशित किया गया साथ ही मोहद्दीपुर चौराहे के निकट एयरपोर्ट रोड के किनारे एक खाली पड़ी जमीन है उक्त जमीन की नवैयत के बारे में पता लगाने हेतु निर्देशित किया गया है ताकि उस पर नए सिरे से ऑटो स्टैंड व्यवस्थापित कर दिया जाए जिससे चौराहे को जाम की समस्या से निजात मिल सके।

उपरोक्त व्यवस्थाए लागू हो जाने पर गोरखपुर शहर के महत्वपूर्ण चौराहों पर लगने वाले ट्रैफिक जाम की समस्या से काफी हद तक निजात मिल जायेगी, यातायात सुचारु रुप से निर्बाध गति से संचालित होगा तथा जाम के कारण आम जनमानस को होने वाली परेशानियों से छुटकारा मिल सकेगा।

जिला निर्वाचन अधिकारियों ने चौपाल में मतदाताओं को किया जागरुक

अमन लेखनी समाचार

गोरखपुर। चिल्लूपार क्षेत्र स्थित प्राथमिक विद्यालय भीटी बाल पर कार्यालय जिला निर्वाचन अधिकारी गोरखपुर,ग्राम पंचायत अधिकारी योगेश त्रिपाठी एवं लेखपाल वीर बहादुर यादव के नेतृत्व में बूथ संख्या 374 पर चौपाल का आयोजन किया गया।जिसमें ग्राम पंचायत अधिकारी एवं लेखपाल ने मतदाताओं को जागरूक करते हुए बताया कि जनवरी 2024 में 18 वर्ष की आयु पूर्ण करने वाले मतदाताओं का नाम बढ़ाने के लिए फार्म 6 एवं मृतक मतदाताओं का नाम निकालने के लिए फार्म 7 एवं नाम में संशोधन कराने के लिए फार्म 8 पर विचार व्यक्त किया गया। चौपाल में बड़ी संख्या में नाम बढ़ाने के लिए मतदाताओं ने अपना फार्म भरकर बूथ लेवल अधिकारी पवन कुमार को दिया।इस अवसर पर प्रधानाध्यापक हरि लाल निषाद, धर्मेंद्र कुमार राव, अर्चना जायसवाल, सरिता देवी ,मानस मणि त्रिपाठी ,अजय मणि त्रिपाठी ,रामानन्द यादव, देवेंद्र कुमार, संतोष कुमार, सीता, इमरान, गुड़िया, अरविंद, अभिमन्यु,और संजय ने अपने परिवार में 18 वर्ष पूर्ण कर चुके पुरुष एवं महिलाओं का नाम बढ़ाने के लिए फार्म भरकर बूथ लेवल अधिकारी पवन कुमार को दिया।

आईजीएल के बिजनेस हेड एस के शुक्ल ने मोक्ष धाम का कराया कायाकल्प

अमन लेखनी समाचार

गोरखपुर। सहजनवां तहसील अंतर्गत गीडा थाना क्षेत्र स्थित इंडिया ग्लाईकॉल्स लिमिटेड के बिजनेस हेड एस के शुक्ल के नेतृत्व में कंपनी द्वारा मोक्षधाम का जीर्णोद्धार ,तथा रंगरोगन कराया गया , यह कार्य प्रख्यात समाजसेवी परशुराम शुक्ल के अनुरोध पर हुआ है। वरिष्ठ प्रबंधक प्रशासन एवं जनसम्पर्क डॉ सुनील कुमार मिश्रा ने बताया की बिजनेस हेड सर ने छठ पूजा के पर्व को ध्यान में रखते हुए क्षेत्र वासियो के लिए मंगल कामना किया और मोक्षधाम को सुन्दर और मनोहर बनवाया। इसके साथ ही डॉ सुनील मिश्रा ने बताया की बड़ी संख्या में छेत्र के लोग छठी माता और सूर्य देव की पूजा-उपासना करते है और उन्हें इस घाट पर कोई दिक्कत न आये इसका भी ध्यान रखा गया है।आईजीएल कंपनी द्वारा सदैव क्षेत्र के विकास में अतुलनीय योगदान दिया जाता रहा है। इसके साथ ही इस वर्ष से बिजनेस हेड एस के शुक्ल के नेतृत्व में कंपनी द्वारा किसानो की आय में वृद्धि करने के उद्देश्य से मक्के के उत्पादन पर भी कार्य प्रारम्भ कराया गया है।

मूर्ति विसर्जन में गाना बजाने को लेकर विवाद, सात पर हत्या के प्रयास का केस दर्ज

अमन लेखनी समाचार

गोरखपुर। सहजनवा थाना क्षेत्र स्थित के टिकरिया खोर में वृहस्पतिवार को रात्रि में लक्ष्मी मूर्ति विसर्जन के दौरान गाना बजाने को लेकर ऐक संप्रदाय के मनबदो ने ऐक युवक पर लाठी डंडे तथा ईट से मार कर गम्भीर रूप से घायल कर दिया। पीड़ित की शिकायत पर पुलिस ने सात आरोपियों पर बलवा,हत्या के प्रयास,मारपीट,जान से मारने की धमकी देने का केस दर्ज कर आरोपियों को गिरफ्तार कर जेल दिया। मिली जानकारी से सहजनवा थाना क्षेत्र के टिकरिया खोर में वृहस्पतिवार को लक्ष्मी मूर्ति विसर्जन के लिए ले जाया जा रहा था। जिसमे डीजे पर भोजपुरी गाना बजाने को लेकर एक संप्रदाय का युवक दबाव बनाने लगा। मूर्ति विसर्जन में दीपक कन्नौजिया का भाई भी शामिल था। उसने मना कर दिया। इसके बाद सात की संख्या में एक संप्रदाय के सात लोग लाठी डंडा और ईट पत्थर लेकर आ गए। और युवक को जान मारने की नियत से हमला कर घायल कर दिया। तथा जान से मारने की धमकी दिए। पीड़ित दीपक कन्नौजिया की शिकायत पर पुलिस ने आरोपी समीर अली,हुसैन अली,साकिर अली,राजू, अरमान अली जाकिर,इब्राहिम अली निवासी टिकरिया खोर के खिलाफ बलवा,हत्या के प्रयास,मारपीट,जान से मारने की धमकी देने का केस दर्ज कर लिया है।

महापर्व छठ नहाय, खाय व खरना से हुआ शुभारम्भ

अमन लेखनी समाचार

गोरखपुर। दक्षिणांचल के कौड़ीराम, बांसगांव, गोला, बड़हलगंज उरूवा,खजनी, सिकरीगंज क्षेत्रों में सूयोर्पासना का महापर्व छठ पूजा मनाने की तैयारिया शुरू हो गयी है।गांव से लेकर शहर तक लोग व्रत की तैयारी में बाजारो की तरफ पुजा से सम्बन्धित सामाग्री की खरीद के लिए श्रद्धालुओं का आना आज से शुरू हो गया।बता दें कि दिपावली के बाद का महापर्व छठ नहाय खाय व खरना से शुभारम्भ हो गया है । बाजारों में भी छठ व्रत से संबंधित दुकाने सजाई गई है।विभिन्न घाटों पर वेदी बनने का कार्य पुर्ण हो गया है।बताते चले कि दीपावली पर्व समाप्त होते ही लोगो को छठ पर्व की तैयारी करना शुरू कर देते हैं।महाछठ व्रत में शुक्रवार को नहाय खाय व खरना से शुरू हो गया। खरना के दिन निराजल व्रत रहकर शाम को भेली में बना खीर रोटी से वर्ती महिलाएं पारन पूजा अर्चना करते हैं। करेंगी।रविवार शाम को नदी घाट पर बने वेदी की पूजा अर्चनाकर डूबते सूर्य को अर्घ्य देंगी और सोमवार को सुबह उगते हुए सूर्य को अर्घ्य देकर व्रत का समापन होगा और घर में बने गेहूं का ठोकवा चना फल आदि श्रद्धालुओं में प्रसाद वितरण किया जाएगा । छठ व्रत की ऐसी मान्यताएं हैं जो लोग जिसकी कामना के साथ मन्नते माँगते हैं उसे छठ माता पूरी करती है।अक्सर महिलाएं पुत्र प्राप्ति या पुत्र पति की लंबी उम्र परिवार की सुख समृद्धि की कामना करती हैं ऐसा व्रत है जो अमीर गरीब यथा शक्ति अनुसार सभी रखते है।जनपद का कोई क्षेत्र व गांव इस पावन महापर्व से अछूता नहीं रह गया है और सभी त्योहारों में एक बड़ा त्योहार का स्थान छठ पर्व बन चुका है।व्रत रखने वाले श्रद्धालु नदी किनारे और ग्रामवासी तालाबो व पोखरों के किनारे वेदियों का निर्माण कर व्रत की

पक्के मकान वालों को दिए गए प्रधानमंत्री आवास

एक परिवार में पांच अपात्रों को पीएम आवास का मामला

अमन लेखनी समाचार

औंग ,फतेहपुर। विकास खण्ड मलवां की ग्राम पंचायत गोधरौली में गत वित्तीय वर्ष में कुल स्वीकृत 26 प्रधानमंत्री आवास में एक ही परिवार में पांच लोगों को पात्रता के मानकों को दरकिनार करते हुए लाभान्वित किया गया है। बताया जाता है कि इन लाभार्थियों के पास पहले से ही पक्के और आलीशान मकान मौजूद हैं फिर भी इन्हें आवास उपलब्ध कराकर मलवां ब्लॉक ने यह साबित कर दिया है कि अधिकारी कुछ भी कर सकते हैं। स्वीकृत किए गए उपरोक्त आवासों में लगभग आधे आवास निर्धारित मानकों के विपरीत हैं या ऐसे भी कहा जा सकता है कि भ्रष्टाचार की भेंट चढ़े उपरोक्त आवासों से पात्र लाभार्थियों को वंचित कर दिया गया है।

पीएम आवास योजना में बड़ी धांधली

निर्धन एवम निर्बल , आंवासहीन , तथा झुग्गी झोपड़ियों में रहने वालों के लिए प्रधानमंत्री आवास योजना के अन्तर्गत उन्हें हर हाल में मकान उपलब्ध कराने के लिए अधिकारियों को सीधे सीधे आदेश जारी किए गए हैं जिनके आवंटन में पारदर्शिता एवम कुछ निर्धारित मानकों को ध्यान में रखने की बात कही गई है । पीएम आवास योजना की गाइडलाइन के अनुसार ऐसे लोगों को आवास उपलब्ध कराए जाने हैं जिनके पास कहीं भी कोई पक्का आवास नहीं है। परिवार में सिर्फ एक ही लाभार्थी को आवास दिया जा सकता है ।यहां पर यह भी ध्यान देना जरूरी है कि आवास लेने वाला लाभार्थी इससे पहले कोई सरकारी अनुदान से लाभान्वित न हुआ हो । इन मानकों के आधार पर लाभार्थी से नोटरी शपथ पत्र भी लिया जाना जरूरी होता है। इसके बावजूद ग्राम पंचायत गोधरौली में मानकों की धज्जियां उड़ाकर आवास रेवड़ी की तरह बांट दिए गए। यहां पर सभी आवंटित आवासों में कुछ न कुछ मानकों के साथ खिलवाड़ किया गया है। एक हो परिवार को पांच आवास , वो भी पक्के मकान वालों को दिए गए ।यह अमान्य बात है कि इतनी बड़ी धांधली हो गई और किसी भी सत्यापन अधिकारी को यह दिखा नहीं । ग्राम पंचायत अधिकारी से लेकर खण्ड विकास अधिकारी तक इस धांधली में डूबे हुए हैं।

कौन कौन हैं धांधली के जिम्मेदार

ग्राम पंचायत से लेकर जनपद स्थित आवास प्रकोष्ठ के अधिकारी और कर्मचारी पीएम आवास आवंटन में संलिप्त होते हैं। और लाभार्थियों के चयन तीन मापदंडों पर मानक , ग्राम प्रधान का दबाव और पैसे की चमक पर आधारित होता है, मानक का हव्वा दिखाकर ही आवास के नाम पर उगाही की गई जिसका परिणाम ये रहा कि एक ही परिवार के पांच अपात्रों को आवास आवंटन कर दिया गया, और सत्यापन अधिकारियों को दिखाई नहीं पड़ा ।

बाइक की आमने सामने की भिड़ंत में दो की हालत गम्भीर

अमन लेखनी समाचार

औंग, फतेहपुर। थाना क्षेत्र के सकूरा रोड स्थित इंडेन गैस एजेंसी के पास दो मोटर साइकिल की आमने सामने की भिड़ंत में दोनों बाईक सवार गम्भीर रूप से घायल हो गए। पुलिस ने घायलों को उपचार अस्पताल भेजा जहां पर उनकी हालत गम्भीर बताई जा रही है। प्राप्त विवरण के अनुसार अंकित पुत्र चुन्नीलाल गौर निवासी ग्राम किशनपुर थाना जहानाबाद व अरुण कुमार पुत्र दयाशंकर निवासी ग्राम करचलपुर अपनी अपनी बाइक से जा रहे थे जिनकी आपस में भिडंत में गई ।

साइकिल बाइक की टक्कर में दो घायल

अमन लेखनी समाचार

औंग, फतेहपुर। थाना क्षेत्र के ग्राम हटिया बड़ाहार के निकट गत रात्रि कानपुर से प्रयागराज की ओर नेशनल हाईवे में एक बाइक साइकिल से टकरा जाने के फलस्वरूप दोनों गम्भीर रूप से घायल हो गए। जिन्हें स्थानीय नर्सिंग होम से कानपुर रेफर किया गया है। ज्ञात हो कि बिकमपुर निवासी सुरेश सिंह (59 वर्ष) रानीपुर स्थित एक कारखाने में ड्यूटी समाप्त करके अपने घर साइकिल से आ रहे थे उसी समय गंगचैली निवासी विवेक दीक्षित पुत्र अशोक कुमार (22 वर्ष) मोटरसाइकिल से कानपुर से अपने घर आ रहा था, दोनों की हटिया मोड़ के पास व्यस्ततम यातायात के कारण भिडंत हो गई।

विद्यालय में श्री रामायण परीक्षा 2023 का किया गया आयोजन

अमन लेखनी समाचार/निर्मित द्विवेदी

बिंदकी, फतेहपुर। फतेहपुर जनपद के बिंदकी तहसील अंतर्गत खजुहा कस्बे में संचालित सीपीएस विद्यालय घेरवा में श्री रामायण परीक्षा का किया गया आयोजन।इस परीक्षा में 50बच्चो ने प्रतिभाग किया है। साथ ही आपको बताते चले कि जनपद से आए पेपर पूरी तरह से शील्ड थे,इन पेपरों को शिक्षको एवम मीडिया की मौजूदगी में खोला गया।इस परीक्षा का मुख्य उद्देश्य न्यू जेनरेशन को अपनी महान विभूतियों के बारे में जानकारी प्रदान करना,किस तरह से पूर्वजों ने परिवार को संजो कर रखा आदि जानकारियों को उपलब्ध करवाना रहा है ।यह परीक्षा विश्व हिंदू परिषद के संस्कार आयाम के अंतर्गत केंद्र आधारित योजना है।जनपद के जूनियर विद्यालयों में आयोजित कर सभी जगह की कापियो को जांचने के बाद मैरिट में आने वाले छात्र को जिला प्रशासन से सम्मानित किया जाएगा।इस मौके पर अभिषेक अग्निहोत्री,जिला सह प्रचारक विश्व हिंदू परिषद, अरविंद सक्सेना जिला सहधर्म प्रसार प्रमुख मनोज गुप्ता प्रखंड खजुहा सह मंत्री विश्व हिंदू परिषद,गौरव सिंह प्रखंड खजुहा मंत्री विहिप, सहित विद्यालय के प्रधानाचार्य कृष्ण कुमार तिवारी , आशीष कुमार पांडे विद्यालय के प्रबंधक पीतांबर सिंह आदि मौजूद रहे।

विधायक की चौपाल में किसान नहीं कह पाए अपनी बात

अमन लेखनी समाचार

औग, फतेहपुर। विकास खण्ड मलवां की ग्राम पंचायत बड़ाहार में शुक्रवार को क्षेत्रीय विधायक राजेन्द्र सिंह पटेल की चौपाल में राजनीतिक लोग तथा गांव के असरदार लोगों का खास दबदबा रहा निर्बल वर्ग के लोग और किसान पास तक फटकने नहीं पाए । चौपाल में विधायक ने सरकार के कार्यों का बखान किया , इसी क्रम में जनपद में नवनिर्मित जोधासिंह अटैया मेडिकल कॉलेज का जिक्र किया।विधायक की चौपाल पूरी तरह से आगामी लोकसभा चुनाव में प्रेरित रही । क्षेत्र के करीब पचास किसान इस उम्मीद से आए थे कि वो अपनी बात विधायक के माध्यम से सरकार तक पहुंचाएंगे , लेकिन चुनावी हलचल के मद्देनजर क्षेत्र के असरदार लोगों से ही विधायक घिरे रहे , आम जनता चौपाल को दूर से ही देखती रही इसकी नजदीक नहीं फटकने दिया गया ।कुछलोग किसान सम्मान निधि को लेकर अपनी बात कहना चाहते थे , जिन्हें इसका लाभ नहीं मिल रहा है।

दो प्रकार के किसानों में असली कौन ?

विधायक की चौपाल में ऐसे लोग भी किसान पेंशन की मांग करने गए थे जिनके नाम कृषि भूमि नहीं है, लेकिन बटाई पर खेत लेकर किसानी करते हैं जो सरकार की नजर में सिर्फ मजदूर माना गया है। अब यहां पर सवाल उठता है कि किसान कौन है ? खेतों में काम करने वाला या जिसके नाम खतौनी है जो कभी खेत तक नहीं जाते हैं। सरकारी मैनुअल के मुताबिक सिर्फ खतौनीधारक ही किसान पेंशन का हकदार है ।जबकि वास्तविकता यह है कि जिनके नाम खेत हैं वो कभी किसानी नहीं करते हैं।ऐसे लोग विधायक की चौपाल में आना चाहते थे जिन्हें पास फटकने नहीं दिया गया । उक्त चौपाल में ग्राम प्रधान बृजेंद्र सिंह उर्फ मुन्ना सिंह, पंचायत सचिव मो0 असलम , राजकुमार सिंह कोटेदार , सुशांत श्रीवास्तव गोरक्षा समिति के राष्ट्रीय महासचिव, बीजेपी देवमई मण्डल के अध्यक्ष अरुण शुक्ला , प्राइमरी स्कूल का स्टॉफ , आंगनबाड़ी व आशा बहू का संगठन आदि लोगों ने भाग लिया ।

क्रय केंद्र प्रथम और द्वितीय पर किसानो की चल रही खरीद

दोनो केंद्रों पर अभी तक 3476 कुंतल हो चुकी है खरीद

अमन लेखनी समाचार

गोरखपुर। सहजनवां तहसील अंतर्गत क्षेत्र में शासन ने किसानो के धान खरीद के लिए केंद्र बनाए है और जिम्मेदारो को निर्देश दिए गए है की क्रय केंद्र पर पहुंचने वाले किसानों के धन की खरीद कर समय से उनके खाते में भुगतान कराए। सहजनवा स्थित मण्डी समिति में संचालित हो रहे मार्केटिंग के प्रथम और द्वितीय क्रय केंद्रों पर किसान अपने धान को आसानी से ले जाकर बेच रहे। इन केंद्रों पर किसानो की भारी भीड़ भी लग रही है। वृहस्पतिवार तक क्रय केंद्र प्रथम पर 61 किसानो से 1815 कुंतल से अधिक खरीद हो चुकी है। जब की द्वितीय केंद्र पर 47 किसानो से 1661 कुंतल धान की खरीद की गई है।

शुक्रवार को दिनेश यादव, टेकुआपाटी,राकेश उपाध्याय, जगदीशपुर,सूर्य नारायण सिधौली,प्रेम कुमार सिंह सरैया अपने धान की तौल कराते हुए।किसानो ने कहा की दोनो केंद्रों पर आसानी से धान की खरीद कर ली जा रही है। किसी तरह की दिक्कत नहीं है। इस संदर्भ में केंद्र प्रभारी पवन पाल सिंह ने कहा की को भी किसान केंद्र पर आ रहे है। उनके धान की खरीद की जा रही है। किसी किसान को वापस नहीं भेजा जा रहा है।

जन जागरूकता का अभियान का आयोजित

बिंदकी कोतवाली क्षेत्र के खजुहा चौकी में लोगो को जागरूक करने किया गया प्रयास।

अमन लेखनी समाचार/निर्मित द्विवेदी

बिंदकी, फतेहपुर। उत्तर प्रदेश के फतेहपुर जनपद के बिंदकी कस्बे कोतवाली क्षेत्र के खजुहा कस्बे में बनी पुलिस चौकी में एक सभा का आयोजन किया गया। सभा करने का मुख्य उद्देश्य था की क्षेत्र में लगातार पराली जलाने की जो सूचना मिल रही थी।उसी संदर्भ में बिंदकी उप जिलाधिकारी, अनिल कुमार यादव,बिंदकी क्षेत्राधिकारी, सुशील कुमार दुबे,नायब तहसीलदार प्रतिमा दुबे पांडे ने विकाश खंड खजुहा क्षेत्र के प्रधानों, चौकीदारों, बुजुर्गो, सम्मानित लोगो को बुलाकर क्षेत्र की समस्याओं के साथ साथ प्रदूषित हो रहे पर्यावरण को बचाने के लिए पराली न जलाने की अपील की है।उपजिलाधिकारी ने मीडिया से बातचीत करते हुए बताया की पराली जलाने से निकलने वाले धुएं से स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़ता है साथ ही खेत में पराली जलाने से उर्वरक शक्ति कमजोर होती है ,खेत में नमी की अभाव में केचुवा नही पनपता है,यदि नमी खेत में रहेगी तो केचुवा पनपता है जो उर्वरक शक्ति को बढ़ाता है इसलिए अगर किसी ने पराली जलाई तो उस के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर कड़ी कार्यवाही की जाएगी।इस जन जागरूकता बैठक में चौकी इंचार्ज खजुहा,कृषि विभाग से कर्मचारी,सोनू प्रधान, घोरहा,अभिषेक अग्निहोत्री,अरविंद सक्सेना समेत लगभग आधा सैकड़ा से अधिक लोग मौजूद रहे।

खास समाचार

गाजीपुर जिले में सहायक आध्यापिक सड़क पर चलते समय अचानक नीलगाय से टकराई स्कूटी, शिक्षिका की मौत, पति घायल

अमन लेखनी समाचार

गाजीपुर जिले के सैदपुर थाना क्षेत्र के जैनपुर गांव के पास नीलगाय से स्कूटी टकरा गयी जिससे सवार शिक्षिका की मौत हो गयी. वहीं उनके पति गम्भीर रूप से घायल हो गए. घटना के बाद परिजनों में कोहराम मच गया. पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया. मुबारकपुर निवासिनी 35 वर्षीय शीला यादव पत्नी वीरेंद्र यादव प्राथमिक शिक्षक थी और वर्तमान में लोहजरा प्राथमिक विद्यालय में प्रभारी प्रधानाध्यापक थीं. 2015 में आई भर्ती में वो चयनित हुईं थीं. आज सैदपुर बीआरसी में प्रधानाध्यापकों की बैठक बुलाई गई थी. जिसमें शामिल होने के लिए वो आ रही थीं. उनके पति वीरेंद्र स्कूटी से उन्हें छोड़ने आ रहे थे।इस बीच जैनपुर में अचानक सड़क पर सामने एक नीलगाय निकलकर आ गया और गाड़ी से वो टकरा गया. घटना में शीला व उनके पति छिटककर गिर पड़े. जिसमें शीला के सिर में गम्भीर चोट आने से मौके पर ही उनकी मौत हो गयी. वहीं वीरेंद्र को कई जगह चोटें आईं. फौरन दोनों को सैदपुर सीएचसी लाया गया, जहां शीला को मृत घोषित कर दिया गया. वहीं वीरेंद्र का इलाज किया गया. मृतका 2 पुत्र छोड़ गई है. उनका रो-रोकर बुरा हाल था. इधर घटना की सूचना मिलते ही शिक्षकों का सीएचसी पर जमावड़ा लग गया. हर कोई मर्माहत था और परिजनों को सांत्वना दे रहा था।

जनजातीय गौरव दिवस कार्यक्रम आयोजित

अमन लेखनी समाचार

डाला सोनभद्र- विकास खण्ड चोपन के अंतर्गत ग्राम पंचायत पनारी में विकसित भारत संकल्प यात्रा के तहत जनजातीय गौरव कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत करते हुए नोडल अधिकारी आर.एस. यादव ने बताया कि विकसित भारत संकल्प यात्रा भारत के विकास और समृद्ध विरासत में अतुलनीय योगदान देने वाले आदिवासी व जनजातीय समुदायों के प्रतिनिधि धरती आबा भगवान बिरसा मुंडा की जन्म जयंती पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने विकसित भारत का एक नया विजन देश के समक्ष रखा हैं।प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा आज शुरू की गई विकसित भारत संकल्प यात्रा 15 नवंबर से 26 जनवरी तक देशभर के सभी जिलों से होकर गुजरेगी। इस यात्रा का मुख्य उद्देश्य समाज के ऐसे वंचित और जरूरतमंद व्यक्ति, जो किसी कारणवश सरकार की योजनाओं का लाभ प्राप्त करने से वंचित रह गए हैं।उन्हें सभी योजनाओं की जानकारी देकर लाभ प्रदान करना है।हरियाणा में भी इस यात्रा के दौरान राज्य सरकार द्वारा कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी घर घर पहुंचाई जाएगी और समाज के अंतिम पायदान पर खड़े नागरिकों को लाभ दिया जाएगा।इसका मुख्य उद्देश्य यह है कि सरकार द्वारा चलाई गई योजना सभी विभाग से लोगों तक पहुंच रही या नही पहुंच रही हैं और उन्होंने सरकार द्वारा चलाए जा रहे योजनाओं के बारे में जानकारियां दिए। वही समूह की महिलाओं ने शिक्षा के अभाव को लेकर नाट्क के द्वारा ग्रामीणों को जागरूक किया जिसमें बताया गया कि शिक्षा जीवन मे एक महत्वपूर्ण जगह बनाता है। आंगनबाड़ी के महिलाओं द्वारा गर्भवती महिलाओं को गोद भराई एवं नव शिशुओं का अनप्राशन नोडल अधिकारी व ग्राम प्रधान प्रतिनिधि लक्ष्मण यादव द्वारा किया गया।कृषि विभाग से सहायक विकास अधिकारी पंकज यादव ने सरकार द्वारा किसानों के लिए चलाई जा रही योजनाओं की जानकारीयां देते किसानों को जागरूक किया गया और किसानों को प्रशस्ति पत्र वितरण किया गया।वही सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के चोपन अधीक्षक सुभाष चंद्र के द्वारा आयुष्मान कार्ड वितरण किया गया। मौके पर नोडल अधिकारी आर.एस. यादव, ग्राम प्रधान प्रतिनिधि लक्ष्मण यादव, सप्लाई इंस्पेक्टर शशिकांत मौर्या, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र चोपन सुभाष चंद्र, एडीओ (कृषि) पंकज यादव,एडीओ पंचायत सुनील पाल आदि अधिकारी एवं ग्रामीण मौजूद रहे।

गाजीपुर जिले में अंतिम चरण में महापर्व डाला छठ की तैयारियां में पूजा की बेदी बनाने में जुटे श्रद्धालु, बाजारों में बढ़ी भीड़

अमन लेखनी समाचार

गाजीपुर जिले में छठ व्रत को लेकर गाजीपुर में तैयारियां अंतिम चरण में हैं ।पति और पुत्र की दीघार्यु के लिए रखे जाने वाले छठ व्रत को लेकर गाजीपुर में तैयारियां अंतिम चरण में हैं।नहाय खाय के साथ शुरू हुए छठ महापर्व का 20 नवम्बर को उगते सूर्य के साथ समापन होगा। मान्यता है कि छठ पूजा व्रत से आरोग्य और वैभव की प्राप्ति होती है। इस पर्व को लेकर जिले के विभिन्न घाटों पर लोग पूजा के लिए वेदियों का निर्माण कर रहे हैं ।गंगा तट पर श्रद्धालु वेदी बना कर पूजा-अर्चना करेंगें। डाला छठ पूजा में फल की दुकान सज गई हैं और विकी धीरे-धीरे शुरू हो गई है 19 नवम्बर को छठ व्रत निर्जला व्रत रहेगी ।शाम को अध्य देकर मंगल कामना करते हुए पुनः सुबह 20नवम्बर को उदयकालीन अध्य देने के साथ ही अपने व्रत को हवन पूजन किया जाता है।

विकास खंड कोन में आयोजित किया गया कृषि निवेश एवं जैविक किसान मेला, केन्द्रीय राज्यमंत्री ने दीप प्रज्जवलित कर किया शुभारम्भ

हमारा देश खाद्यान्न में तो आत्म निर्भर है परन्तु दलहन व तिलहन में अभी आत्म निर्भर होने की आवश्यकता, --अनुप्रिया पटेल

श्रीअन्न (मिलेट्स) की खेती पर भी अधिक बल देते हुये किसान भाईयों से अधिक से अधिक मात्रा में

श्रीअन्न के खेती करने और उत्पादन पर दिया बल

सरकार द्वारा संचालित योजनाओं को लाभ उठाकर किसान बने आत्म निर्भर –केन्द्रीय मंत्री

अमन लेखनी समाचार

मीरजापुर - विकास खण्ड स्तरीय रबी कृषि निवेश/जैविक मेला विकास खण्ड परिसर कोन, मीरजापुर में आयोजित किया गया। कार्यशाला का शुभारम्भ श्रीमती अनुप्रिया पटेल, मा0 केन्द्रीय राज्यमंत्री, वाणिज्य एवं उद्योग भारत सरकार/मा0 सांसद, मीरजापुर द्वारा दीप प्रज्जवल कर किया गया। कार्यक्रम में मा0 केन्द्रीय राज्यमंत्री जी द्वारा कृषि विभाग द्वारा लगाये गये जैविक उत्पाद प्रदर्शनी का अवलोकन भी किया गया कार्यक्रम में उपस्थित कृषक बन्धुओं को सम्बोधित करते हुए मा0 केन्द्रीय मंत्री ने कहा कि आज पूरे देश में वर्षा के पैटर्न में परिवर्तन हुआ है। हमारा देश खाद्यान्न में तो आत्म निर्भर है परन्तु दलहन व तिलहन में अभी आत्म निर्भर नहीं हुआ है, दलहन व तिलहन के क्षेत्रफल में विस्तार करने हेतु किसानों का आवाह्न किया गया। साथ ही बताया गया कि जनपद मीरजापुर में वर्ष 2023-24 में कुल 193244 हे0 आच्छादन का लक्ष्य प्राप्त है, जिसमें गेहूँ में 143479 हे0, दलहन में 27705 हे0 तथा तिलहन में 10653 हे0 का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।मा0 मंत्री ने कहा कि घरेलू स्तर पर ही आत्मनिर्भर नहीं बल्कि विदेशी बाजारों में इसका निर्यात किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि बढ़ती जनसंख्या के कारण दलहन व तिलहन की मांग बढ़ी है जिसकी आपूर्ति करने की आवश्यकता है, दलहन व तिलहन के क्षेत्र में अभी हमारा देश खाद्यान्न की तरह आत्मनिर्भर नहीं हुआ है।उन्होंने कहा कि दलहन व तिलहन को कम पानी की आवश्यकता होती है। मा0 मंत्री ने कहा कि सरकार व्यापक स्तर पर प्रयास कर रही है कि जो किसान भाई हैं वे श्रीअन्न की खेती ज्यादा करें और दलहन व तिलहन के क्षेत्रफल में विस्तार हो। उन्होंने कहा कि क्षेत्रफल के विस्तार के लिए सरकार किसानों को कई तरह के सहयोग भी प्रदान कर रही है। उन्होंने कहा कि आज के इस कार्यक्रम में जो बीज किट उपलब्ध कराया जा रहा है वह इस दिशा में उठाया गया एक कदम है। मा0 मंत्री ने कहा कि यदि दलहन व तिलहन के क्षेत्र में विस्तार करना है तो उसके लिए समय पर बुवाई व उन्नत किस्म के बीज की बुआई करें तथा जैविक माध्यमों का उपयोग करें। उन्होंने कहा कि मिनी किट जनपद में प्राप्त हो गया है सभी किसान भाई अपने-अपने विकासखंड से राजकीय कृषि बीज भंडार से 50 प्रतिशत अनुदान पर प्राप्त कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि जनपद में 5770 मिनी बीज किट प्राप्त है। मा0 मंत्री ने कहा कि आप सभी जो सरकार की सरकारी सुविधाएं हैं उसका लाभ उठाएं व दलहन व तिलहन की खेती के क्षेत्रफल को बढ़ाने में सहयोग करें देश की आत्मनिर्भरता के लिए इसकी आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि दलहन की खेती से मिट्टी की उर्वरकता भी बनी रहती है तथा पशु के चारे की व्यवस्था होती है ।साथ ही बताया कि किसान भाई आज के परिवेश में श्रीअन्न (मिलेट्स) की खेती पर भी अधिक जोर देने की आवश्यकता है। किसान भाई अधिक से अधिक मात्रा में श्रीअन्न के खेती करें और उत्पादन करें, उनके उत्पाद की बिक्री हेतु वर्तमान सरकार प्रयास कर रही है। जिसके सापेक्ष सरकार द्वारा श्रीअन्न का समर्थन मूल्य निर्धारित कर दिया गया है।जिसमें बाजरा 2500 रू0, ज्वार संकर 3180 रू0 तथा ज्वार मालदंडी 3225 रू0 प्रति कु0 निर्धारित किया गया है। साथ ही जनपद में ज्वार व बाजरा के क्रय केन्द्र भी स्थापित कर दिये गये है। मा0 केन्द्रीय मंत्री श्रीमती अनुप्रिया पटेल ने कहा कि विकसित भारत संकल्प यात्रा कार्यक्रम आयोजन जा रहा है, जो दिनांक 21 नवम्बर 2023 से शुरू होकर 26 जनवरी 2024 तक चलायी जा रही है, जिसके माध्यम से जनपद के ग्राम पंचायतों में योजनाओं से सम्बंधित प्रचार वाहन घूम-घूम कर जनपद के समस्त विभागों द्वारा चलायी जा रही योजनाओं के बारे में जानकारी दी जायेगी।

योजनाओं की संतृप्तीकरण के लिए आउटरीच गतिविधियों के माध्यम से जागरूकता बढ़ाने हेतु विकसित भारत संकल्प यात्रा कार्यक्रम आयोजित

विकसित भारत संकल्प यात्रा का परसोई एवं पनारी गांव में हुआ आयोजन

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा योजनाओं से शत-प्रतिशत लाभान्वित करने हेतु विकसित भारत संकल्प यात्रा का किया गया है शुभारंभ

विकासित भारत संकल्प यात्रा के दौरान लोग अपने अनुभव मेरी कहानी मेरी जुबानी किये साझा

केन्द्र सरकार द्वारा संचालित योजनाओं से जन-जन को किया जा रहा है लाभान्वित जनमानस का हो रहा है विकास

अमन लेखनी समाचार

सोनभद्र। विकसित भारत संकल्प यात्रा कार्यक्रम का आयोजन चतरा ब्लॉक के ग्राम पंचायत परसोई व पनारी गांव में किया गया, ग्राम पंचायत परसोई व पनारी में आयोजित कार्यक्रम को दीप प्रज्जवलित कर माँ सरस्वती जी के चित्र पर माल्यार्पण कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया, इस मौके पर एल0ई0डी0 वैन के माध्यम से केन्द्र सरकार द्वारा संचालित विभिन्न जनकल्याणकाी योजनाओं की जानकारी उपस्थित जन समुदाय को दी गयी, जिसको भारी संख्या में उपस्थित जनमानस ने देखा और सराहना की। इस दौरान ग्राम प्रधान व जिला समाज कल्याण अधिकारी रमाशंकर यादव ने उपस्थित जन मानस को सम्बोधित करते हुए कहा कि 15 नवम्बर,2023 को बिरसा मुण्डा की जयन्ती पर देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने विकसित भारत भारत संकल्प यात्रा का शुभारंभ रांची के खूंटी से किया है। विकसित भारत संकल्प यात्रा का उद्देश्य है कि गांव व शहरी क्षेत्र में निवास करने वाले हर पात्र व्यक्तियों को सरकार के द्वारा संचालित योजनाओं से जोड़ा जाये, जो व्यक्ति योजनाओं से लाभान्वित हुए हैं, उनके जीवन स्तर में किस तरह का सुधार हुआ, कहानी उनके जुबानी से ही सुना जाये, देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने यह संकल्प लिया है कि 2047 तक देश को विकसित राष्ट्र बनाया जाये, उन्होंने कहा कि विकसित भारत संकल्प यात्रा का उद्देश्य है कि सबको विकास के पथ पर अग्रसर किया जाये, इसके लिए केन्द्र सरकार ने लोगों के जीवन स्तर में सुधार लाने हेतु अनेक जन कल्याणकारी योजनाओं से जन-जन को लाभान्वित करने हेतु यह योजना बनायी गयी है, इस विकसित भारत संकल्प यात्रा के माध्यम से गांवों में पात्र व्यक्तियों को क्या लाभ हुआ है।

जिला समाज कल्याण अधिकारी ने कहा कि केन्द्र एवं प्रदेश सरकार लगातार जनमानस के कल्याण के लिए अनेक जन कल्याणकारी योजनाएं संचालित कर रही है, जिसमें अनुसूचित जनजाति की छात्राओं को साईकिल व स्कूल ड्रेस की सुविधा, अनुसूचित जनजाति बन्धन योजना समूहों के गठन का कार्य किया जा रहा है, इस दौरान विभिन्न योजनायो के लाभार्थियों को स्वीकृति-प्रमाण पत्र का वितरण किया गया, जिसमें- मुख्यमंत्री आवास योजना, प्रधानमंत्री आवास योजना, आयुष्मान कार्ड, एल0पी0जी0 गैस कनेक्शन,निःशुल्क खाद्य सामग्री, घरौनी, प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि, एन0आर0एल0एम0 समुह की महिलाओं चेक, मनरेगा जॉबकार्ड का वितरण व समाज कल्याण विभाग की तरफ से संचालित योजना के तहत साईकिल व वृद्धापेंशन प्रमाण-पत्र आदि का वितरण किया गया। इस दौरान विभिन्न विभागों द्वारा केन्द्र व प्रदेश सरकार द्वारा संचालित योजना से सम्बन्धित लगाये गये विभिन्न स्टालों को जनमानस ने देखा और विभाग द्वारा चलायी जा रही योजनाओं के सम्बन्ध में जानकारी भी प्राप्त की। आयोजित कार्यक्रम के मौके पर खण्ड विकास अधिकारी चोपन शुभम जायसवाल,ए0डी0ओ0 पंचायत सुनील पाल, पूर्ति निरीक्षक शशिकान्त, अधीक्षक सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र चोपन, पनारी के ग्राम प्रधान तारा देवी, परसोई के ग्राम प्रधान अरविन्द खरवार, भारी संख्या में ग्रामीणजन सहित अन्य सम्बन्धितगण उपस्थित रहें।

पुलिस अधीक्षक के कुशल निर्देशन में व अपर पुलिस अधीक्षक के निकट पर्यवेक्षण में जनपद के समस्त थानो की शक्ति दीदी टीम द्वारा चलाया गया मिशन शक्ति फेज-4 अभियान

अमन लेखनी समाचार

सोनभद्र। दिनांकः17.11.2023 को पुलिस अधीक्षक, सोनभद्र डॉ0 यशवीर सिंह के कुशल निर्देशन में तथा अपर पुलिस अधीक्षक, मुख्यालय श्री कालू सिंह के निकट पर्यवेक्षण में आयोजित मिशन शक्ति चतुर्थ चरण के तहत नारी सशक्तिकरण की कार्यवाही के अनुक्रम में समाज में नारी सुरक्षा व सम्मान एवं नारी स्वावलंबन हेतु जनपद के समस्त थानों द्वारा अपने-अपने थाना क्षेत्रो में महिला पुलिसकर्मी शक्ति दीदी पुरूष पुलिसकर्मियों को शहरी एवं ग्रामीण अंचलों में भेज कर भीड़-भाड़ वाले इलाकों, कस्बों एवं गांवों में चौपाल लगाकर महिलाओं/बालिकाओं को स्वयं की सुरक्षा हेतु विभिन्न पैतरों के साथ-साथ उ0प्र0 सरकार द्वारा जारी किये गये हेल्पलाइन नम्बरों 1090-वुमेन पॉवर लाइन, 181-महिला हेल्प लाइन, 108-एम्बुलेंस सेवा, 1076-मुख्यमंत्री हेल्पलाइन, 112-पुलिस आपातकालीन सेवा, 1098-चाइल्ड लाइन, 102- स्वास्थ्य सेवा तथा थानों पर स्थापित महिला हेल्प डेस्क के बारे में विस्तृत जानकारी के साथ-साथ महिला सशक्तिकरण से संबंधित उ0प्र0 शासन की विभिन्न योजनाओं व प्राथमिकताओ के सम्बन्ध में भी जानकारी देते हुए जागरूकता संबंधी पंपलेट वितरित किया गया ।इसी क्रम में जनपद के विभिन्न थानों की एन्टी रोमियो टीम द्वारा प्रमुख चौराहो, पार्को एवं भीड़- भाड़ वाले स्थानो के आस-पास चेकिंग कर मनचलों पर प्रभावी अंकुश लगाए जाने के दृष्टिगत अभियान चलाया गया।

गाजीपुरअज्ञात वाहन के धक्के से बाइक सवार की मौत, एक घायल

अमन लेखनी समाचार

गाजीपुर जिले के शादियाबाद थाना क्षेत्र में गुरैनी पुल के पास किसी अज्ञात वाहन के धक्के से एक ही बाइक पर सवार दो युवक गंभीर रूप से घायल हो गए।दोनों युवकों को मौके पर पहुंची पुलिस ने इलाज के लिए अस्पताल भिजवाया।जहां पर मोहब्बतपुर निवासी आशीष (25) को चिकित्सकों ने मृत घोषित कर दिया, जबकि उसके साथ बाइक पर जा रहे अजय की हालत गंभीर बनी हुई है।शादियाबाद थाने पर तैनात एसआई अनिल पांडे ने बताया कि गुरैनी पुल के पास अंधा मोड़ है।बाइक सवार किस प्रकार हादसे का शिकार हुए इसकी जानकारी नहीं ।शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है।वहीं हादसे में मृत युवक के परिजनों में सूचना मिलते ही कोहराम मच गया। आशंका जताई जा रही है कि किसी वाहन की टक्कर से बाइक सवार हादसे का शिकार हुए होंगे। गाजीपुर जिले में पुलिस के द्वारा प्रतिदिन यातायात नियमों को जागरूक करने का अभियान चलाया जाएगा है लेकिन आयें दिन दुघर्टना होती जा रही है। चालक नियमों का पालन नहीं कर रहे है। बिना हेलमेट के ही बाइक सवार रोड़ पर चलते हैं।

पुलिस ने स्कूलो में शिक्षक-शिक्षिकाओ व छात्राओ को दी सुरक्षा योजनाओ के बारे में जानकारी

अमन लेखनी समाचार

गाजीपुर जिले पुलिस ने मिशन शक्ति अभियान के तहत शुक्रवार को नगर स्थित राजकीय बालिका इंटर कालेज, मां काली आदर्श आईटीआई एवं पब्लिक स्कूल शिशुआपार के शिक्षक शिक्षिकाओं तथा महमूदपुर व सरदरपुर गांव में बच्चियों व महिलाओं को सरकार द्वारा संचालित कल्याणकारी सुरक्षा योजनाओं के बारे में जानकारी देते हुए उन्हें जागरूक करने का काम किया गया। उप निरीक्षक विनोद कुमार सिंह,महिला कांस्टेबल रूपाली सिंह, कांस्टेबल शोभनाथ, सुरेंद्र कुमार ने महिला सुरक्षा एवं सम्मान, साइबर क्राइम संबंधी जानकारी देते हुए विभिन्न हेल्पलाइन नम्बरों के बारे में बताया। विद्यालय स्टाफ का आान किया कि स्कूल आने जाने के दौरान यदि कोई अवांछनीय हरकत करता है तो उसके बारे में पुलिस को सूचना देकर त्वरित कार्रवाई करायें। महिला आरक्षी रूपाली सिंह ने बालिकाओं एवं महिलाओं को उनके प्रति होने वाले किसी भी तरह के अपराध एवं संबंधित अपराधियों के बारे में तत्काल पुलिस, शक्ति मित्र महिला पुलिसकर्मियों को सूचना देने के लिए 1090 वोमेन पावर, 1930 साइबर अपराध, 102 स्वास्थ सेवा, 108 एंबुलेंस सेवा, 1098 चाइल्ड हेल्प लाइन व 1078, 181, 112, आदि के बारे में जानकारी दी। साथ ही सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर मौजूद ऐप फेसबुक, ट्वीटर, इंस्टाग्राम आदि का सावधानी पूर्वक इस्तेमाल करने को कहा। इस दौरान जीजीआईसी की प्रिंसिपल मंजू प्रकाश, साधना सिंह, मंजुलता श्रीवास्तव, प्रतिभा मिश्रा, सुनंदा, एमकेए स्कूल के प्रबंधक प्रद्युम्न राय, प्रिंसिपल सुधा राय, अनिल राय, प्रवेश कुमार, आदर्श राय, जोया, अंजली गुप्ता, स्नेहा, नेसार, कृष्णकांत आदि रहे।

निषाद पार्टी के क्षेत्रीय कार्यालय का हुआ उद्घाटन, कार्यकर्ताओं में दिखा उत्साह

अमन लेखनी समाचार

सोनभद्र। ओबरा विधानसभा क्षेत्र के डाला बाड़ी खन्ना कैंप के पास स्थित मकान में शुक्रवार को निषाद पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं उत्तर प्रदेश सरकार में शामिल रहें कैबिनेट मंत्री डॉ संजय कुमार निषाद के निर्देशन में ब्लाक स्तरीय एवं जिला स्तरीय पार्टी कार्यकताओं की एक बैठक की आयोजित किया गया जिसमें सर्व प्रथम क्षेत्रीय कार्यालय का फिता काटकर का उद्घाटन किया गया इसके पश्चात कार्यलय पर विद्यमान निषाद राज के चित्र पर दीप प्रज्वलित कर माल्यार्पण करते हुए निषाद राज की आरती कर संपन्न हुआ वहीं अनिकेत निषाद जिलाध्यक्ष निषाद पार्टी के नेतृत्व में आयोजित बैठक की अध्यक्षता दयाशंकर साहनी रहे जहां बैठक में पार्टी विस्तार को लेकर गहन विचार विमर्श किया गया वहीं दूसरे तरफ पार्टी के छोटे से छोटे कार्यकताओं को साथ लेकर चलने के साथ उसके विकास व मजबूत बनाने हेतु चर्चा किया गया ताकि छोटे कार्यकताओं को क्षेत्र में पार्टी का कार्य करने में जो समस्या उत्पन्न होती है तो उस समस्या का समाधान हो सके।जहां अनिकेत निषाद जिलाध्यक्ष के बातों को सुन बड़े पदाधिकारी समेत सभी कार्यकताओं में जोश भरीं हुंकार दिखाई दिया और निषाद पार्टी व जिलाध्यक्ष के नाम से नारे गुंज उठा। बैठक का संचालन जितेन्द्र निषाद ने किया इस बैठक में प्रदेश महासचिव दयाशंकर निषाद ,निषाद पार्टी के जिला अध्यक्ष अनिकेत निषाद प्रदेश सचिव संतोष निषाद संगठन जिला अध्यक्ष विजय साहनी राष्ट्रीय निषाद एकता परिषद के जिलाध्यक्ष राजनारायण निषाद, द ग्रेट निषाद युवा वाहिनी के जिलाध्यक्ष अनिल निषाद महिला मोर्चा के जिलाध्यक्ष मुनिया देवी ,जिला सरंक्षक श्याम धर साहनी , ओबरा विधान सभा अध्यक्ष छोटे लाल साहनी ,नागेंद्र साहनी जिला महासचिव फूल चंद निषाद जितेंद्र निषाद प्रदीप निषाद एवं पार्टी के कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

जनपद स्तरीय युवा उत्सव प्रतियोगिता का 22 को होगा आयोजन- मुख्य विकास अधिकारी

सोनभद्र ।मुख्य विकास अधिकारी सौरभ गंगवार ने अवगत कराया है कि एक दिवसीय जनपद स्तरीय युवा उत्सव प्रतियोगिता का आयोजन 22 नवम्बर,2023 को विशिष्ट स्टेडियम तियरा राबर्ट्सगंज में किया जायेगा, इस युवा उत्सव प्रतियोगिता में लोकगीत ग्रुप व एक लोक नृत्य, एक कहानी लेखन, पोस्टर बनाना, भाषण प्रतियोगिता, फोटोग्राफी तथा उत्तर प्रदेश राज्य को आवंटित थीम एक भारत श्रेष्ठ भारत की प्रतियोगिता को सम्मिलित किया जायेगा। उन्होंने बताया कि लोकनृत्य समूह के प्रतिभागियों की अधिकतम संख्या 10 होगी, नृत्य की अवधि 10-15 मिनट की होगी, लोकनृत्य एकल अवधि 7 मिनट की होगी, जिसमें कोई भी फिल्मी गाने की प्रस्तुतिकरण नहीं किया जायेगा, मिश्रण वाले गाने बजाने की अनुमति नहीं होगी। कहानी लेखन की अवधि 60 मिनट एवं शब्द सीमा 1000 से अधिक नहीं होनी चाहिए।

सवारी से भरी प्राइवेट बस का अगला चक्का फटने से अनियंत्रित होकर डिवाइडर पार कर पलटी, दर्जनो यात्री जख्मी

-वाराणसी से शक्तिनगर जा रही थी बस

- सभी जख्मीयो को एम्बुलेंस से भेजा गया जिला चिकित्सालय

अमन लेखनी समाचार

सोनभद्र।वाराणसी शक्तिनगर मार्ग से यात्रीयो से भरी प्राइवेट सिध्दार्थ बस चोपन थाना क्षेत्र के सलखन बाजार मे शुक्रवार के तकरीबन दो बजे दोपहर बस का अगला चक्का फटने से अनियंत्रित होकर डिवाइडर पार जा पलटी इस घटना से बस मे सवार यात्रीगण चिख- पुकार करने घटना के बाद सलखन बाजार मे हडकंप मच मौके पर भीड एकत्रित हो गयी सभी स्थानिय बजार के निवासी तत्काल चोपन पुलिस को सूचना देते हुए सभी सवार को बस मे बचाव राहत अभियान चलाकर एक एक बाहर निकालने लगे तकरीबन दर्जनो यात्री घायल हालत मे मिलने के बाद प्रभारी निरीक्षक विश्वनाथ प्रताप सिंह हमराही जवानो के साथ एम्बुलेंस से जिला चिकित्सालय उपचार हेतू भेजे जहा उपचार बाद सभी जख्मीयो की हालत सामान्य बताई गयी शेष यात्रीयो को दुसरे बस से उनके गतन्य स्थान पर भेजे गए। इस घटना मे राबर्ट्सगंज की तरफ जा रही एक स्विप डिजायर कार भी चपेट मे आने से क्षतिग्रस्त हो गयी उसमे भी संजोग रहा की सवार बाल बाल बच गए घटना की सूचना पर अपर पुलिस अधीक्षक मुख्यालय कालू सिंह भी मौके से पहुंचे मौका मुआयना कर बचाव राहत कार्यो के लिए प्रभारी निरीक्षक को आवश्यक दिशा-निर्देश भी दिये। सभी सभी बस पर यात्री को उनके गतयन्त स्थान पर भेजने के बाद क्रेन मंगाकर पलटी बस को खड़ी कराकर यातायात प्रारम्भ हुआ। घटना के बाद बस का चालक एव कनेटेक्टर फरार बताए गए है।

अमन लेखनी
(हिन्दी दैनिक)
स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक श्रीमती अखिलेश सिंह द्वारा अवध एक्सप्रेस प्रकाशन, 434, सिविल लाइन, जेल रोड, उन्नाव, उत्तर प्रदेश से मुद्रित और ग्राम व पोस्ट- बनी, थाना- बन्थरा, लखनऊ- 226401 (उ.प्र.) से प्रकाशित।
सम्पादक– श्रीमती अखिलेश सिंह
समाचार सम्पादक – रुद्र प्रताप सिंह
समाचार से संबंधित सभी विवादों का न्यायिक क्षेत्र लखनऊ होगा।
मो. – 9838159555, 9935457982
E-mail address amanlekhaninews@gmail.com

रोचक / शिखर चंद जैन

बच्चों, क्या तुमने कभी देखा है कि अपनी बर्थ-डे पार्टी पर कोई आंख पर पट्टी बांधकर किसी आकृति को पीटता है या सजी हुई कुर्सी पर बैठकर उसे हवा में हिलाया-डुलाया जाता है? दुनिया के कई ऐसे देश हैं, जहां बच्चों के बर्थ-डे बहुत ही यूनीक ट्रेडिशन के साथ सेलिब्रेट किए जाते हैं। तुम भी इनके बारे में जानो।

बर्थ-डे सेलिब्रेशन के यूनीक ट्रेडिशन

ऑस्ट्रेलिया-न्यूजीलैंड

ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड देशों में बच्चे के पहले बर्थ-डे पर फेयरी ब्रेड जरूर लाई जाती है या घर पर ही बनाई जाती है। यह सामान्य ब्रेड होती है, जिस पर बटर लगाया जाता है। फिर ब्रेड के ऊपर स्प्रिंकल्स छिड़कते हैं। साथ ही ब्रेड के आस-पास गुब्बारों की सजावट की जाती है। इसके बाद बर्थ-डे पार्टी होती है, जिसमें बारबिक्यू की डिशेज पकाकर खाई जाती है। बच्चों की टोली जन्मदिन की पार्टी में खूब मजे करती है। *

मैक्सिको

उत्तरी अमेरिका महाद्वीप के मैक्सिको देश में बच्चों के जन्मदिन बहुत अनोखे तरीके से मनाए जाते हैं। यहां जिस बच्चे का बर्थ-डे होता है, वह अपनी आंखों पर पट्टी बांधकर एक पिनाटा यानी गुब्बारे की तरह फूले हुए बड़े से रंग-बिरंगे कंटेनर को, एक छड़ी से पीटकर फोड़ता है। पिनाटा फूटने पर उसमें से ढेर सारी टॉफियां या छोटे आकार वाले खिलौने गिरते हैं, जिन्हें पार्टी में आए सभी बच्चे पाने की कोशिश करते हैं। पारंपरिक रूप से पिनाटा पहले मिट्टी से बनाया जाता था, जो गोलाकार होता था। अब इसे मोटे कागज से बनाया जाने लगा है। साथ ही इसे सिर्फ गोलाकार ना बनाकर विभिन्न आकार, किसी जानवर या कार्टून कैरेक्टर जैसा भी बनाया जाता है। यहां हैप्पी सेलिब्रेशन सॉन्ग 'हैप्पी बर्थ डे टू यू' ना गाकर मैनानिटास (यानी लिटिल मॉर्निंग) नामक गीत गाया जाता है। जिस बच्चे का जन्मदिन होता है, उसे सुबह-सुबह यही गीत गाकर जगाते हैं। *

फिलिपींस

फिलिपींस में जन्मदिन को एक स्पेशल डे माना जाता है, परिवार के सभी लोग और मेहमान एक साथ इकट्ठा होते हैं। सभी मेहमानों को कम से कम एक व्यंजन लाने की जिम्मेदारी दी जाती है। बर्थ-डे पार्टी की मेन डिश, लांजीविटी नूडल्स होता है, जो लंबे और स्वस्थ जीवन का प्रतीक है। यहां केक स्थानीय सामग्रियों टारो या पर्पल याम और कराओके से बनाया जाता है। साथ ही जिस बच्चे का बर्थ-डे होता है, उसे घर के बड़े लोग गिफ्ट और आशीर्वाद देते हैं। *

लिथुआनिया

लिथुआनिया में बर्थ-डे गर्ल या ब्वॉय को एक सजी-धजी कुर्सी पर बैठाया जाता है। फिर उसके दोस्त और बड़े लोग भी कुर्सी को ऊपर उठाकर कई बार हिलाते-डुलाते हैं। कुर्सी पर बैठे बच्चे को कितनी बार हिलाएंगे-डुलाएंगे, यह उसकी उम्र के अनुसार होता तय होता है। जितनी उम्र, उतनी बार कुर्सी हवा में हिलाते-डुलाते हैं। बच्चों, जन्मदिन मनाने की यह परंपरा इस देश में वयस्क इंसान के जन्मदिन पर भी निभाई जाती है। कुर्सी को हिलाने-डुलाने के बाद एक शानदार पार्टी होती है, जिसमें टेस्टी-टेस्टी डिशेज होती हैं। इस दौरान डांस भी होता रहता है, बच्चे खूब एंज्वॉय करते हैं। *

भारत

मंदिर जाने और बड़ों से आशीर्वाद लेने की परंपरा

वैसे तो वेस्टर्न कल्चर के प्रभाव के चलते अपने भारत में भी बर्थ-डे पर केक और उस पर मोमबत्ती जलाकर फूंक मारने की परिपाटी चल पड़ी है। लेकिन अपने देश में प्रमुख रूप से जन्मदिन पर मंदिर जाने की परंपरा है। जिसका जन्मदिन होता है, वह सुबह-सुबह मंदिर जाकर भगवान के दर्शन करता है, प्रसाद चढ़ाता है, आशीर्वाद लेता है। घर में भी बड़ों के चरण स्पर्श करके आशीर्वाद लेता है। माता-पिता और अन्य बड़े लोग तिलक लगाकर जन्मदिन वाले बच्चे को मिठाई खिलाते हैं, उपहार देते हैं। बच्चा जन्मदिन पर नई ड्रेस पहनता है। कुछ बच्चे अपने जन्मदिन पर अपने हाथों से गरीबों को दान भी करते हैं। *

जानकारी / नयनतारा

खट्टे-मीठे संतरे

बच्चों, संतरा खाते हुए तुम्हारे मन में ख्याल आता होगा कि संतरा सबसे पहले कहां उगा होगा? यह बताना तो कठिन है कि सबसे पहले संतरे कहां उगे, लेकिन कुछ ऐसे रिकॉर्ड्स हैं, जिनसे मालूम होता है कि लगभग चार हजार वर्ष पहले चीन में संतरे खाए जाते थे।

संतरे के दो प्रकार के पेड़ होते हैं, एक मीठा और दूसरा खट्टा। यूरोप में सबसे पहले खट्टा संतरा उगाया गया था। संतरे से यूरोप का परिचय मूरों समुदाय के लोगों ने कराया था, जिन्होंने स्पेन और सिसली में नवीं शताब्दी में प्रवेश किया था। ग्यारहवीं शताब्दी तक मूरों का इन देशों पर नियंत्रण हो गया था, उन्होंने खट्टे संतरे और अन्य पेड़ लगाने शुरू किए। 15वीं शताब्दी तक खट्टे संतरे दक्षिण

यूरोप में खूब उगाए गए, लेकिन जब पूर्वी देशों से व्यापार बढ़ा तो मीठे संतरे की भी खेती की जाने लगी।

बच्चों, खट्टे संतरों की खेती आज भी होती है। खट्टे संतरे खाए भी जाते हैं। शुरू में मीठे संतरे रईस लोग ही खरीद पाते थे। राजा और रईस लोग बड़ी रकम देकर संतरे के पेड़ लाते थे, जिन्हें वे अपने बगीचों में लगाते थे। ठंडे देशों में संतरे के नाजुक पेड़ जाड़ों में मर जाते थे। इसलिए इससे बचने के लिए विशेष ग्रीन हाउस तैयार किए जाते थे, जिन्हें ऑरेंजरिस कहा जाता था। संतरे के पेड़ को टबों में प्लांट किया जाता था। गर्मियों में उन्हें बाहर रख दिया जाता था और जाड़ों में उन्हें ग्लास के पीछे सुरक्षित ग्रीनहाउस में रखा जाता था, जहां वे बाहर की ठंड के बावजूद फलते फूलते थे। बच्चों, मालूम है आज सबसे ज्यादा संतरे अमेरिका में होते हैं। तुम सोच सकते हो यह कैसे संभव हुआ? असल में क्रिस्टोफर कोलंबस जब नए संसार के सफर के लिए निकले तो वह अपने साथ संतरे के बीज और अन्य अनेक साइट्रस फ्रूट्स (रसदार फल) लेकर गए। इनके बीजों को हिस्पनिओला द्वीप पर प्लांट कर दिया गया। वेस्टइंडीज और जिसे आज फ्लोरिडा कहते हैं के ट्रॉपिकल वातावरण में साइट्रस पेड़ों की बहार सी आ गई। इस प्रकार जल्द ही साइट्रस फ्रूट्स के जंगली बाग जगह-जगह पर हो गए। आज स्थिति यह है कि फ्लोरिडा राज्य में संतरे के सबसे ज्यादा पेड़ हैं, वह मीठे संतरों का किसी भी राज्य या देश से अधिक उत्पादन करता है। *

कविता
प्रकाश मनु

सर्कस

इतने शेर, इतने शेर,
राम-राम, ये कितने शेर!
गोला एक बनाएंगे,
फिर ऊपर चढ़ जाएंगे।
ओहो, ये तो आसमान तक
एक अनोखी सीढ़ी है,
जिस पर शेर खड़े हैं सातों,
छोटी-सी एक पीढ़ी है।
आए शेर कहां से इतने
और कहां को जाएंगे?
चढ़ते-चढ़ते झटपट क्या ये
आसमान छू आएंगे?
कितने ही हैं और अजूबे
जिनसे ये चकराएंगे,
हंस-हंस सबको खेल दिखाकर
क्या अब ये गाना गाएंगे?

कहानी
अशोक जोशी

रघु को भूख लगी तो वह क्लास में लंच बॉक्स खोलकर खाना चाह रहा था कि टीचर ने देख लिया। वह बोलीं, इसकी खुशबू बहुत अच्छी है, इसे वह खाएंगी। उन्होंने रघु को उसकी मम्मी के लिए एक पत्र दिया और उसे घर से लंच करके आने को कहा। पत्र में टीचर ने मम्मी को एक सप्ताह तक एक अतिरिक्त लंच बॉक्स भेजने को कहा। क्या सच में टीचर को रघु की मम्मी का बनाया खाना बहुत पसंद आ गया कि कोई और माजरा था?

रघु का लंच बॉक्स

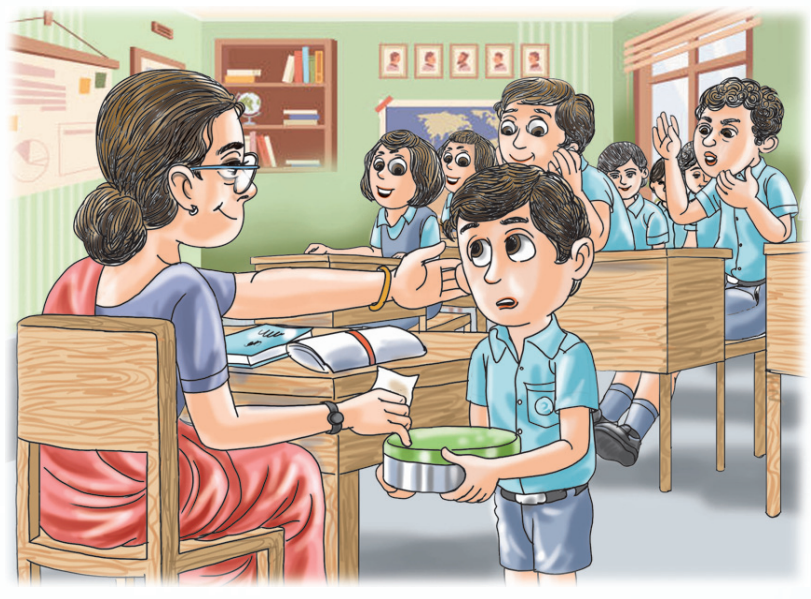

स्कूल के लंच ब्रेक से पहले ही क्लास में नन्हे रघु को अचानक जोर से भूख लगी। वह बार-बार अपना लंच बॉक्स खोलकर बंद करता, जिससे खाने की खुशबू तेजी से बाहर फैलती, इससे रघु की भूख और बढ़ गई। उसकी बेंच के आस-पास बैठे साथियों का चेहरा उसकी तरफ मुड़ा, क्योंकि खुशबू से उनका भी ध्यान भंग हो रहा था। उनकी घूमती गर्दन को देखकर सरस्वती मैडम समझ गईं कि रघु की बेंच पर कुछ तो चल रहा है। आलू-बैंगन वाली सब्जी की खुशबू सरस्वती मैडम की टेबल तक भी पहुंच चुकी थी।

'रघु, अपना लंच बॉक्स ले आओ।' अचानक सरस्वती मैडम ने रघु को अपने पास बुलाया।

रघु ने चुपचाप लंच बॉक्स जाकर सरस्वती मैडम को दे दिया। उन्होंने पास रखी कॉपी से एक सादा पेज फाड़ा और उस पर कुछ लिखकर रघु को दे दिया, बोलीं, 'तुम्हारी मम्मी बहुत अच्छी कुक हैं। मैं यह लंच खाऊंगी।'

इस पर क्लास के सभी बच्चे हंस पड़े। सरस्वती मैडम आगे बोलीं, 'यह पत्र लो और अपनी मम्मी को दे देना। अब तुम घर जाओ और लंच करके जल्दी वापस स्कूल आ जाओ।'

बेंच पर साथ बैठने वाले ज्यादातर साथियों को लगा मैडम रघु को सजा दे रही हैं। रघु को भी यही लगा। वह बुरी तरह डर गया।

रघु का स्कूल घर से पांच मिनट की दूरी पर था। वह दौड़कर घर गया और मम्मी को वह पत्र दिया। स्कूल से जल्दी आने पर रघु की मम्मी भी चौंकी, लेकिन पत्र पढ़ने के 20 सेकेंड बाद उन्होंने रघु को प्रेम से स्वादिष्ट खाना खिलाया।

'मम्मी, पत्र में टीचर ने क्या लिखा है?' खाना खाते हुए रघु ने मम्मी से पूछा।

'टीचर को खाने की खुशबू पसंद आई, क्योंकि तुमने क्लास के बीच में लंच बॉक्स खोला और वह अब उसे खा रही हैं। उन्हें खाना इतना ज्यादा पसंद आया है कि एक सप्ताह तक लंच भेजने को कहा है।' मम्मी जवाब में बोलीं।

यह सुनकर रघु को अपनी गलती का एहसास हुआ, लेकिन उसे यह जानकर अच्छा लगा कि टीचर को मम्मी के हाथों का खाना बहुत पसंद आया। खाना खाकर रघु वापस स्कूल आ गया। ब्रेक के बाद क्लास शुरू होते ही सरस्वती मैडम रघु के पास आकर बोलीं, 'अपनी मम्मी से कहना खाना बहुत स्वादिष्ट था।'

अगले सात दिनों तक रघु को यही लगा कि सरस्वती मैडम ने उसके घर से लाया खाना खाया, लेकिन यह सच नहीं था। सालों बाद जब रघु का परिवार नागपुर के लिए शिफ्ट हो रहा था, तो रघु को अलमारी में साड़ियों के पीछे रखा सरस्वती मैडम का वो पत्र मिला। उसे पुरानी घटना याद आ गई। वह पत्र पढ़ने लगा। पत्र में लिखा था-

प्यारी अन्नपूर्णा, मेरी कक्षा के एक बच्चे के पिता सेना में हैं। इसलिए उस बच्चे के पिता शहर से दूर हैं और मां को वायरल फीवर है। कल से अगले एक सप्ताह तक आप एक अतिरिक्त लंच बॉक्स भेजने का कष्ट करें। मैं नहीं चाहती थी कि वह बच्चा भूखा घर जाए। आप रघु को सिर्फ इतना कहें कि मुझे आपका खाना पसंद है, इसलिए आप खाना भेज रही हैं। आप मेरी सहेली भी हैं। इसलिए मैं अधिकार से कह रही हूं।

-सरस्वती

पत्र पढ़कर रघु की आंखों में यह सोचकर आंसू आ गए कि सरस्वती मैडम ने जिस खामोशी से किसी की मदद की, यह कितनी बड़ी बात थी। *

सीख : बच्चों, सरस्वती मैडम ने जो किया, उसमें कई सबक छिपे हैं। 1-दूसरों के लिए कुछ अच्छा करें तो उसका कभी प्रचार ना करें, 2-दूसरों के सामने किसी की मजबूरी उजागर ना करें 3-अच्छा इंसान किसी की समस्या देखकर उसे सुलझाता है, ना कि मुंह मोड़ लेता है। 4-हमेशा अच्छे दोस्त रखें, जिन पर भरोसा कर सकें। बच्चों, यदि आपकी कक्षा का कोई साथी किसी कारण से लंच नहीं ला पाता तो रघु की तरह अपना लंच शेयर कर अच्छे बच्चे बनो।

जीके क्विज-80

1. यूनेस्को ने भारत के किस शहर को 'संगीत का शहर' घोषित किया है?
2. भारत ने हाल ही में कम दूरी की किस बैलिस्टिक मिसाइल का सफल परीक्षण किया?
3. वनडे विश्वकप के इतिहास में सबसे तेज दोहरा शतक लगाने वाले बल्लेबाज कौन बने हैं?
4. कुंभ का मेला कितने सालों के अंतराल पर आयोजित होता है?
5. धूप से हमें कौन-सा विटामिन मिलता है?
6. किस पूर्व भारतीय राष्ट्रपति को मिसाइल मैन के नाम से भी जाता था?
7. पृथ्वी पर कितना प्रतिशत पानी मौजूद है?
8. कार्तिक पूर्णिमा पर किस महापुरुष की जयंती मनाते हैं?
9. किस राज्य में स्टैच्यू ऑफ यूनिटी स्थित है?
10. अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति का मुख्यालय कहां स्थित है?

बच्चों, जीके क्विज-80 का उत्तर बालभूमि के अगले अंक में प्रकाशित किया जाएगा। सही जवाब देने वाले बच्चों के नाम भी प्रकाशित किए जाएंगे।

जीके क्विज-79 का उत्तर : 1-हीरालाल सामरिया, 2-49वां, 3-येरूशलम, 4-बाल दिवस, 5-24 घंटे, 6-विटामिन बी, 7-मंगोलिया, 8-हेनरी कैवेंडिश, 9-21 नवंबर को, 10-वुलर झील

जीके क्विज-79 का सही उत्तर देने वाले : मारुति-बिलासपुर, आसावरी-सांगली, पूजा-रायपुर, अंकित-भोपाल, गरिमा-जबलपुर, मुकेश-दिल्ली, हरीश-रोहतक, आशा-धमतरी, नीरज-रायगढ़, लोकेश-विदिशा

हंसगुल्ले

पापा- पिंटू, अमेरिका में 15 साल के बच्चे भी अपने पैरों पर खड़े होने लगते हैं।
पिंटू- इसमें क्या बड़ी बात है। भारत में तो दो साल का बच्चा पैरों पर खड़ा हो जाता है, तीन साल का बच्चा तो भागने लगता है।
-अंजलि, भोपाल

पप्पू- मम्मी, क्या मैं भगवान की तरह दिखता हूं?
मम्मी- नहीं, लेकिन तुम क्यों पूछ रहे हो?
पप्पू- क्योंकि मैं जब भी कहीं जाता हूं, तो सब मुझे देखकर कहते हैं कि हे भगवान फिर आ गए तुम!
-राहुल, बिलासपुर

बबलू स्कूल जाते हुए बहुत रो रहा था।
पापा- चुप हो जा, शेर के बच्चे रोते नहीं हैं।
चुप होते ही बबलू- लेकिन शेर के बच्चे स्कूल भी नहीं जाते हैं।
-साहिल, भिवानी

अंग्रेजी शब्द-ज्ञान

बच्चों, यहां पर कुछ जानवरों के चित्र दिए गए हैं। तुम्हें इनके नाम इन्हीं के नंबर के अनुसार खाली बॉक्सेस में लिखने हैं। तो देर किस बात की, इन्हें पहचानकर इनके नाम लिखो।

उत्तर: 1-dog, 2-cow, 3-rooster, 4-goose, 5-horse, 6-rabbit, 7-duck, 8-bull, 9-cat

सही परछाई पहचानों

बच्चों, यहां 6 वाहनों के चित्र के साइड में इनकी परछाइयां दी गई हैं। तुम्हें इन वाहनों की सही परछाई को पहचान कर इनका सही मिलान करना है। जल्दी से सही परछाइयां पहचानो।

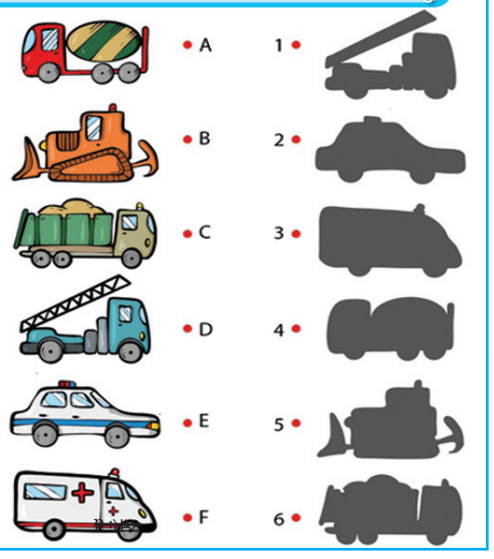

उत्तर : A-4, B-5 C-6, D-1, E-2, F-3

अंतर बताओ

बच्चों, यहां एक समान दिखने वाले दो चित्र दिए गए हैं। दोनों चित्रों में 7 अंतर हैं। पांच मिनट में सभी अंतर ढूंढ़कर बताओ तो जरा।

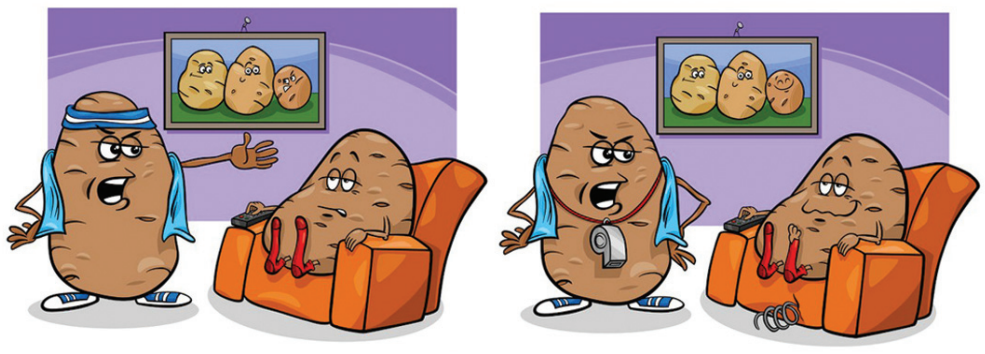

उत्तर: 1-खड़े हुए आलू के सिर पर पट्टी नहीं बंधी है। 2-सोफे से स्प्रिंग बाहर निकली हुई है। 3-सोफे पर बैठे आलू के बाएं पैर की जुराब ऊपर तक नहीं है। 4-खड़े हुए आलू के गले में सीटी लटकी है। 5-सोफे पर बैठे आलू की मुंह की स्थिति में अंतर है। 6-खड़े हुए आलू का बायां हाथ नीचे है। 7-पीछे दीवार पर लगी तस्वीर में सबसे छोटा आलू मुस्कुरा रहा है।